होली-नवरात्रि विशेषांक

मार्च 96 मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

★ दुर्गा साधना ★ भद्रकाली प्रयोग ★ विन्ध्यवासिनी साधना

★ काल बन्धन प्रयोग ★ रम्भा प्रयोग ★ बटुक भैरव प्रयोग

वर्ष 16 अंक 3
मार्च 1996 पृष्ठ 80

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : [illegible]
फेक्स : [illegible]
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०)
फोन : [illegible]
फेक्स : [illegible]

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, सी- 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

विषय सूची

साधना

सद्गुरुदेव

विवेचना

आवाहन

विशेष

दीक्षा

स्तम्भ

प्रार्थना

दिव्यामाभां च दधतीं परितः विलसत् दिव्यकन्यावराभिः,
सिंहस्थां पूजितां तामसुरसुरगणैः भक्तभाग्यैकधात्रीं।
सौभाग्यं भावयित्रीं जनिभयहर्त्रीं भावगम्यां भवानीं;
वन्दे चन्द्रार्कबिम्बां भगवति दुर्गां पुण्यपुष्पैः परीतां।।

दिव्य आभा से युक्त अनेक दिव्य कन्याओं से घिरी हुई, सिंह के ऊपर विराजमान सुर और असुरों द्वारा संपूजित, भक्तों के भाग्य को अनुप्राणित करने वाली, सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली, सभी भक्तों के समस्त भय को दूर करने वाली, केवल भावों से जानने योग्य, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, अनन्त पुण्य समूह से पावनतम भगवती दुर्गा का भावपूर्ण हृदय से मैं नमन करता हूं।

तिमिर

सूर्य की रश्मियों से ही चन्द्रमा में प्रकाश है और वह प्रकाशवान दिखाई देता है . . . जबकि यह दृश्य प्रत्यक्षत: स्पष्ट नहीं होता है, कि सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा पर और अन्य तारा मण्डल पर पड़ रहा है और वे उसी से जगमगा रहे हैं . . . यह सब अदृश्य रूप से होता है और यह बात ध्रुव सत्य है . . . ठीक ऐसा ही शिष्य का जीवन होता है, उसके स्व के अन्दर कोई विशेषता नहीं होती, पर वह धीरे-धीरे प्रसिद्धि के शिखर की ओर उन्मुख होता ही जाता है, ज्यों-ज्यों उसके अन्दर गुरु के प्रति समर्पण, सेवा और भक्ति का चन्द्रमा जगमगता है . . . उसका नाम, यश, समाज में चन्द्रमा की किरणों की भांति बिखरता ही जाता है और शिष्य को यह भान भी नहीं होता कि यह सब कैसे हो रहा है . . . वह तो सोचता है, कि यह प्रतिभा उसकी स्वयं की है और एक क्षण ऐसा आता है, कि वह प्रसिद्धि के मद में आकर गुरु के सान्निध्य को त्याग देता है, अपने निज के स्वार्थ की पूर्ति के लिए . . . और गुरु से अलग होते ही उसे वस्तु-स्थिति का भान हो जाता है, कि क्या सही है? समाज की विषमताओं के बीच जाकर धीरे-धीरे वह अधोगामी होता जाता है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कथा स्मरण आ रही है–

पौष की कड़कड़ाती ठंड में ऋषि गर्ग विचार मग्न बैठे हुए थे . . . सांझ की बेला थी . . . ठंड कम करने के लिए कोयलों से भरा अलाव धधक रहा था . . . गर्ग का प्रिय शिष्य 'विश्रवानन्द' जिसके ज्ञान की गरिमा की चर्चा जनमानस में फैलती जा रही थी, इस बात से उसे धीरे-धीरे अभिमान छूता जा रहा था . . . अब उसे आश्रम में रहना नीरस सा लगने लगा था, उसकी आकांक्षाएं बढ़ती जा रही थीं . . . आश्रम त्यागने का निश्चय कर वह गुरु के पास गया . . . ऋषि गर्ग उसकी मनोस्थिति को पढ़ रहे थे. . . पर फिर भी मौन थे, उन्हें अपने पर पूरा विश्वास था, कि मेरे द्वारा लगाया पौधा मुरझा नहीं सकता . . . विश्रवानंद ने गुरु से आज्ञा मांगी . . . ऋषि गर्ग मौन बैठे रहे . . . थोड़ी देर बाद उन्होंने धधकते अलाव से एक कोयले के टुकड़े को जो काफी तेजी से दहक रहा था . . . बाहर निकाला . . . कोयले का टुकड़ा कुछ देर तक तो जलता रहा . . . पर धीरे-धीरे उसकी दाहकता शान्त होती गयी, उस पर राख की परत चढ़ती गयी, देखते-देखते उसकी आभा धूमिल हो गयी. . . विश्रवानन्द खड़े-खड़े यह क्रिया देख रहे थे . . . समझ लिया गुरु के मौन संकेत को . . . और चुपचाप आश्रम के अन्दर जा कर साधनारत हो गये।

पाठकों के पत्र

★ पूज्य गुरुदेव, मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका सर्वतोन्मुखी प्रगति का पथ तय करे, यही कामना है। अपने आपमें श्रेष्ठ सामग्री से पूरित यह पत्रिका गागर में सागर समाने के समान है। यह एक ऐसा दीप है, जो हमेशा हमारी पीढ़ी को ज्ञान की रोशनी से आप्लावित करता रहेगा। हम गर्व से कह सकते हैं, कि हमारी पुरातन संस्कृति कितनी सर्वोत्कृष्ट थी, और आज भी है।

अमित कुमार सियाल
जशपुर

★ मान्यवर संपादक जी,
नवम्बर 1995 का '**रहस्य-रोमांच विशेषांक**' पढ़ा। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के इस अंक में जो विशिष्ट सामग्री दी गई है, वह विशेष प्रशंसनीय है तथा साधकों के लिए एक कल्पवृक्ष के समान है। यद्यपि मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के सभी अंक उपयोगी होते हैं, किन्तु मुझे इस अंक ने विशेष प्रभावित किया है।

डा. जगदीश शरण मधुप
दतिया

★ श्रीमान संपादक जी,
आपके पत्रिका कार्यालय से जो हल्ट हकीक दो नग मंगाये थे, वे मुझे डाक द्वारा प्राप्त हो गए। मैंने उन पर प्रयोग भी किया और मुझे पत्रिका में लिखे अनुसार ही सफलता मिली। मैंने हल्ट हकीक दुकान की चौखट पर बांधने के लिए मंगाए थे। ऐसा करने पर व्यापार में चमत्कारिक वृद्धि हुई।

शिव प्रसाद शर्मा
शहडोल (म.प्र.)

★ महोदय,
आपके द्वारा भेजा गया 'जपनी' नामक यंत्र पहिनने से मेरी बेकारी दूर हो गई है, मैं आपके दर्शनों का अभिलाषी हूं। कृपया मुझे वर्ष 1996 का भविष्यफल (तुला राशि) डाक द्वारा भेज दें।

रघुवीर सिंह
छतरपुर, मध्य प्रदेश

★ पूज्य गुरुदेव,
नवम्बर की पत्रिका **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** में "**आंखिन देखी**" कालम पढ़ा। बहुत ही प्रेरणादायक है।

कन्हैया लाल सोनी
कोटा, रायपुर, (म.प्र.)

★ संपादक जी,
महोदय आपसे निवेदन है, कि 'निखिलेश्वरानन्द कवचम्' अर्थात रक्षात्मक देह कवच को पुनः प्रकाशित करें, जिससे कि मेरे जैसे गुरुदेव से नवीन जुड़े हुए लाखों साधक एवं शिष्य और पाठकों का उद्धार हो सके।

गोकरण प्रसादा डनसेना
सेंदरीबहार, रायगढ़

प्रिय गोकरण जी,
जय गुरुदेव,
*आप हमारे जोधपुर कार्यालय से पुराना अंक अथवा "**दैनिक साधना विधि**" पुस्तक मंगा कर कवच का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।*

— संपादक

★ मै "**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**" पत्रिका का नियमित पाठक हूं, मैंने इसे सभी कसौटियों में खरा उतरने वाला आध्यात्मिक विज्ञान पाया है। विश्व की सबसे श्रेष्ठ वेधशालाओं से प्राप्त प्रत्येक घण्टा, प्रत्येक मिनट, प्रत्येक सेकेण्ड की द्वादश ग्रहों, अयनांश, सम्पातिक काल आदि-आदि की 100% से भी आगे तक शुद्ध सूक्ष्म स्थिति हमको इस मासिक पत्रिका द्वारा उपलब्ध करायें।

श्री एम. पाठक
मुजफ्फर नगर

★ आदरणीय सम्पादक मण्डल
मैं आपकी पत्रिका का नियमित और पुराना पाठक हूं। गुरुमाला के अनेक उपयोग हैं, गले में धारण कर सकते हैं, अगर हां, तो क्या नियम हैं। जन्म, मृत्यु आदि में सूतक की स्थिति में माला के पुनः शुद्ध करने की विधि क्या है?

नये पाठकों और साधकों को इनका ज्ञान नहीं होता है, अतः इसे पत्रिका में अवश्य ही प्रकाशित करें।

के. के. नामदेव
जबलपुर

प्रिय बन्धु, उपरोक्त बातों के विषय में साधना शिविरों में पूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है। इस विषय में भी निकट भविष्य में ही लेख अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

— उपसम्पादक

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर केवल जोधपुर टेलीफोन नं0-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आपके द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में 24 घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं0 - 0291-32209
: फेक्स नं0 - 0291-32010

गुरुदेव के साथ जुड़ी हर बात बहुत ही निराली है, क्योंकि उनका हर अंदाज निराला है। तभी तो जब मैं उनसे मिला, तो उन्हें देखता ही रहा गया चित्रलिखित सा . . . मैं समझ ही नहीं पा रहा था, कि उनके किस स्वरूप को अपनी आंखों में बसा लूं . . . और ऐसी दुविधा में फंसा हुआ मैं उनके आसपास मंडराता रहता।

मुझे अच्छी तरह याद है, नवरात्रि का वह अवसर जब मैं पहली बार जोधपुर पहुंचा। मन में अनेक सुखद कोमल कल्पनाओं को सजाता हुआ, कि गुरुदेव श्मश्रु युक्त तथा दीर्घ जटाधारी होंगे, फिर सोचता नहीं ऐसे नहीं शायद गेरुआ वस्त्रधारी होंगे, पूरे रास्ते भर तरह-तरह के रूप में गुरुदेव की सम्भावित आकृति को ढालता हुआ जब मैं उनके सम्मुख पहुंचा, तो उन्हें देखकर स्तम्भित हो ठगा सा खड़ा रह गया, क्योंकि मेरी सारी कल्पनाएं उन्हें प्रत्यक्ष देख ध्वस्त हो गईं थीं, मेरे सामने था—

"श्वेत परिधान से सुसज्जित, अत्यन्त तेजस्वी, युवाशक्ति युक्त, विराट एवं भव्य व्यक्तित्व। मैं तो यही समझ बैठा, कि हिमालय ही शुभ्र हिमाच्छादित परिधान धारण कर अपनी पूर्ण गरिमा के साथ मेरे सामने साकार प्रत्यक्ष हो उठा है।"

ऑफिस के सामने बैठे अनेकों लोग जो उनसे मिलकर अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने की आशा लेकर आये हुए थे, उनमें से दो-तीन लोगों ने मुझे एकटक निहारते और दौड़ते-भागते देखकर पूछा भी, कि आप क्या किसी विशेष उलझन में फंसे हुए हैं, जो बार-बार दौड़-भाग कर रहे हैं?

— अब मैं उन्हें क्या बताऊं, कि मैंने क्या-क्या देखा है और उन सब में सामंजस्य कैसे स्थापित करूं?

तभी ऑफिस का दरवाजा बन्द हो गया और पता चला, कि पूज्यपाद गुरुदेव प्रवचन के लिए मंच पर पधारने वाले हैं।

मैं भागा-भागा पण्डाल के मुख्य गेट पर पहुंचा, तभी गुरुदेव सिंहवत मस्ती भरी चाल से चलते हुए मेरे सामने से गुजर कर मंच की ओर बढ़ गये और अपनी दिव्य देह से निस्सृत सुगन्ध का एक झोंका मेरे पास तक

तुम बिन सब जग खारो लागै

रंग दे चुनरिया . . .

प्रवाहित कर गये। मैं उस सम्मोहक सुगन्ध से आबद्ध सा हो रहा था, कि तभी मेरी दृष्टि मंच पर गयी, तो मैं देख कर आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव जब मेरे पास से गुजरे तो उनका कद औसत व्यक्ति जितना ही दिख रहा था, लेकिन मंच पर बैठे हुए वे गरिमा गर्भित हिमालय की तरह ही विशाल दिख रहे थे, उनका दिप्-दिप् करता मस्तक पण्डाल का स्पर्श करता हुआ प्रतीत हो रहा था।

मैं यह क्या देख रहा हूं, कहीं जागते हुए भी मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा, मेरी आंखों का भ्रम है, तरह-तरह के विचार मन-मस्तिष्क को व्यथित कर रहे थे, तभी मैंने अपने सिर को जोर से झटका दिया – मैं पूर्ण चैतन्यावस्था में हूं और पूरे होशो-हवास में देख रहा हूं। यह सोचकर मैंने मंच के आसपास कार्यरत लोगों को देखा तो सभी सामान्य दिखे, थोड़ी सी मन को तसल्ली हुई और पुनः गुरुदेव की तरफ अपनी निगाहें घुमायी . . .

– अरे! गुरुदेव कहां गये?

जिस आसन पर गुरुदेव बैठे थे, वहां कोई
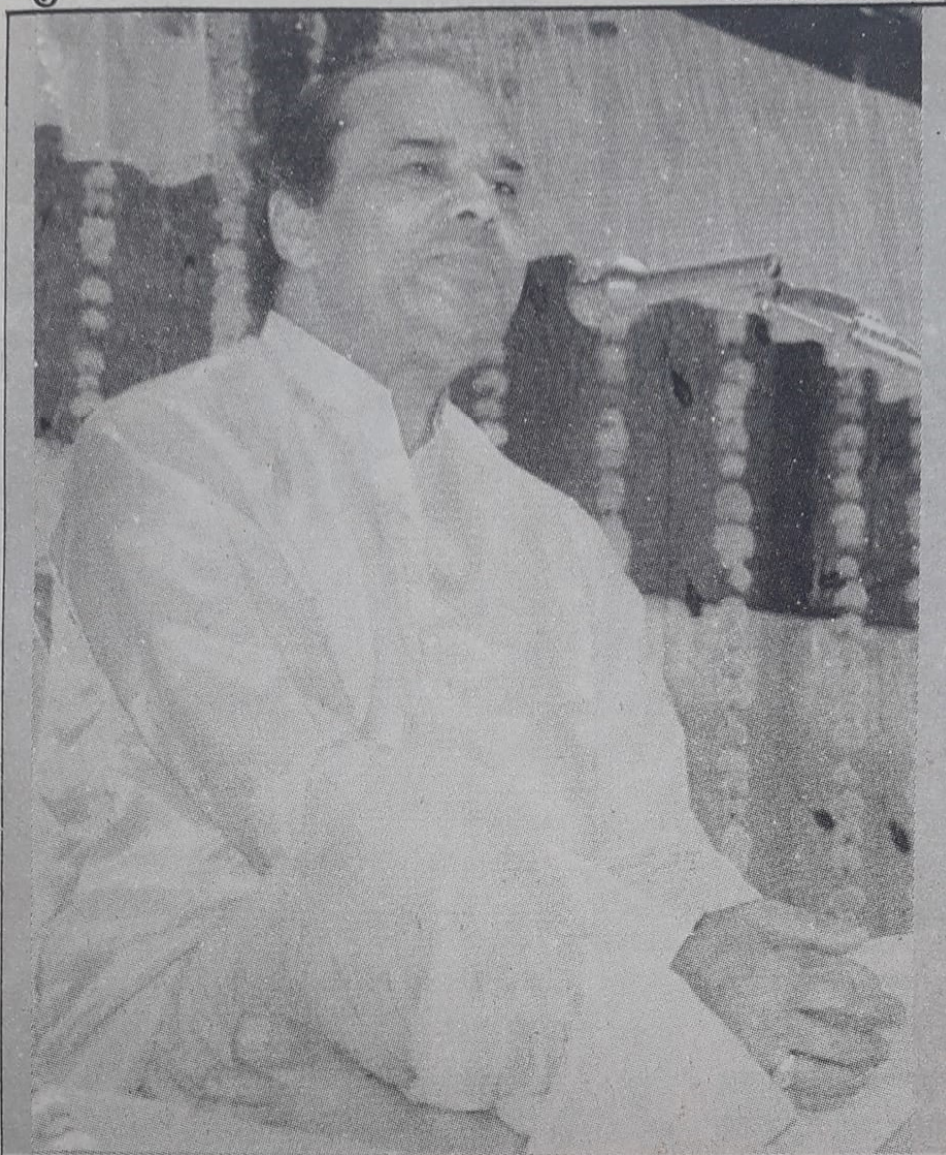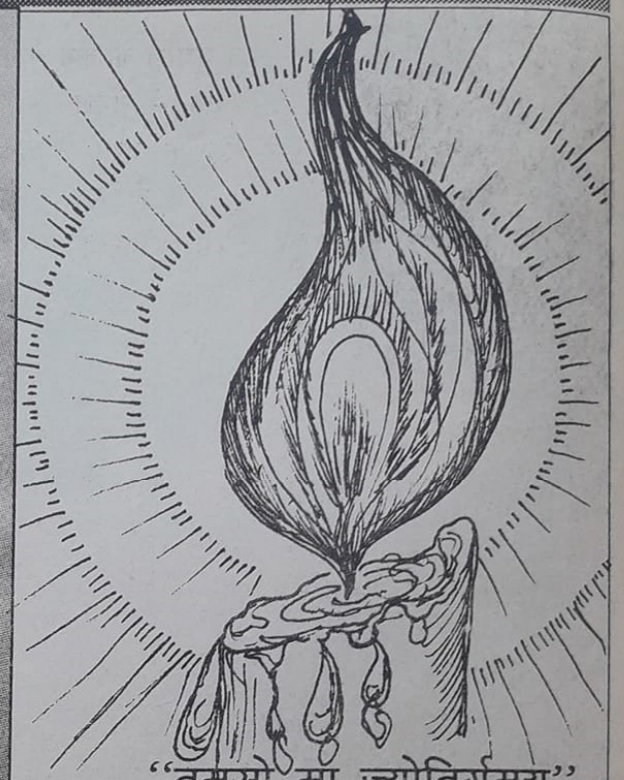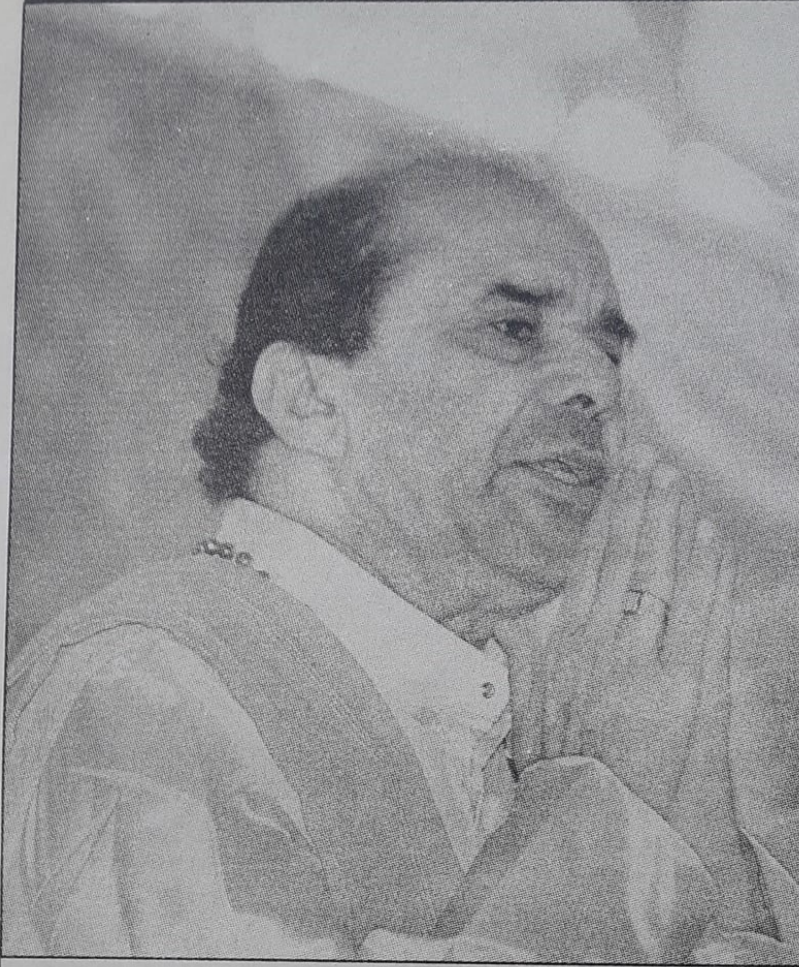
"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

यात्रा अंधकार से प्रकाश की ओर – आज तक अनेकों ने यह यात्रा करने का प्रयास किया, लेकिन क्या उन्हें सफलता मिली? – इसका उत्तर देने में वे स्वयं दुविधाग्रस्त हैं। जानते हो क्यों? क्योंकि उन्होंने बाह्य तौर पर प्रकाश की यात्रा करने का प्रयत्न किया।

प्रकाश तो तुम्हारे भीतर है। अपने अन्दर देखो, तो तुम्हें तुम्हारे इष्ट, तुम्हारे प्राणप्रिय, तुम्हारे गुरुदेव दिखेंगे . . . और तब तुम्हारे हृदय में उत्पन्न भाव, तुम्हारे आंखों में झिलमिलाता उनका व्यक्तित्व, तुम्हारे रोम-रोम में व्याप्त उनके प्रेम की तरंग वास्तविकता का बोध करा देगी।

– पूज्य गुरुदेव
(प्रवचनांश, नवरात्रि शिविर, जोधपुर)

छः-सात वर्षीय बालक बैठा हुआ है! ध्यान से देखा – ये तो गुरुदेव की तरह ही दिख रहा है . . . लेकिन गुरुदेव तो अभी अत्यन्त विशालतम दिख रहे थे! . . . फिर अकस्मात इतने छोटे कैसे हो गये?

आधे घंटे तक इस स्थिति में फंसा हुआ मैं मन ही मन प्रार्थना करता रहा, कि अब यह आंख मिचौली बंद कर दो, प्रभु! अब अपना वास्तविक स्वरूप दिखा दो . . .

धीरे-धीरे पुनः मेरी सामान्य अवस्था की स्थिति बनी तथा गुरुदेव का सामान्य सांसारिक विग्रह दिखाई दिया। उस दिन के बाद से मैं आज तक उनके उस स्वरूप को भूल नहीं पाया हूं।

समय के साथ-साथ पूज्यपाद ने मुझे अनेकों दीक्षाएं प्रदान कीं और धीरे-धीरे मुझे उनकी अत्यन्त निकटता प्राप्त होने लगी – और तब मैंने जाना, कि मेरे गुरुदेव मात्र पूजे जाने या गुरु रूप में धारण करने योग्य ही नहीं हैं, अपितु वे तो प्रेम की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं, जो प्रेम से ही ज्ञेय और ध्येय हैं, इस संसार में मुझे एकमात्र वे ही प्रेम के योग्य दिखे . . . और जब मैंने उनसे प्यार किया, तो वे मेरे हृदय में ही नहीं, मेरे रोम-रोम में बस गये; क्योंकि उनका प्रत्येक रोम-रोम प्रेम द्वारा ही तो निर्मित है, मैंने उनसे प्रेम किया है और यह उनका मूल स्वरूप है।

गुरुदेव के प्रेम का रंग तो वही स्थाई रंग है जिसमें एक बार सराबोर हो जाने पर वह कभी फीका नहीं पड़ता, अपितु दिनों-दिन गहराता ही जाता है . . . ऐसा भाव मन में स्थायी होते ही मैं खण्ड से अखण्ड बन गया, फिर मेरे अन्तस में मरुभूमि सी शांति तथा विस्तार समाहित हो गया, तो अहर्निश उनके प्रेम की वासन्ती बयार भी छाई रहने लगी और नन्दन कानन उपवन में खिले फूलों की ताजगी, सुगन्ध और सौन्दर्य भी मेरे मन में साकार हो उठा।

उनका प्यार है ही वह पक्का रंग जिसमें रंगने के बाद उस रंग का हल्का होना असम्भव है। गुरुदेव के प्रेम रंग में रंग कर पूरा ब्रह्माण्ड जो अभी तक मैंने बाहरी रूप से देखा था, वह मेरे अन्दर सिमट आया . . . तभी झरने का संगीत, कोयल की कूक, पपीहे की पुकार . . . सिंह की निर्भयता . . . वसन्त का सौन्दर्य . . . सूर्य की तेजस्विता . . . चन्द्रमा की शीतलता . . . और वह जो मुझे अप्राप्तव्य था, वह सब कुछ तो मुझे अपने आप ही प्राप्त हो गया।

. . . लेकिन गुरुदेव से प्रेम करना सहज क्रिया नहीं है, क्योंकि सांसारिक रूप में जिसे प्रेम कहा जाता है, वह प्रेम न होकर केवल और केवल मात्र भ्रम है। प्रभु से प्रेम करने वाले को पहले अपने आपको पहिचानना होता है, क्योंकि अनेकों छलमय व्यक्तित्व छुपे होते हैं, एक ही व्यक्ति के अन्दर . . . और यह आवश्यक हो जाता है, कि इन सभी में से उस व्यक्तित्व को ढूंढ लिया जाय, जो गुरुदेव से प्रेम करने के योग्य है।

– और जब व्यक्ति अपने उस व्यक्तित्व की खोज कर लेता है, तब वह अपने आप गुरुदेव के प्रेम-रंग में सराबोर हो उठता है, क्योंकि प्रतिपल उसका रोम-प्रतिरोम यही तो पुकारता रहता है, विनयवत हो कर –

रंग दे चुनरिया . . .

बटुक भैरव साधना

जीवन अनेक प्रकार के संयोगों से भरा हुआ है, अनेक प्रकार की विषमताओं से युक्त है वर्तमान युग में पग-पग पर इतनी बाधाएं हैं, इतनी परेशानियां हैं, इतने शत्रु हैं, कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति के लिये एक ही मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा वह पूर्ण रूप से विजयी हो सकता है और अपने जीवन की प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह मार्ग है– 'साधना'।

प्राचीन काल से अब तक साधनाओं का आश्रय लेकर अनेकों . . . या यो कहें, कि सभी कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होते रहे हैं – होते भी हैं।

साधनाओं के अनुसंधान कर्ताओं ने कुछ ऐसी साधनाओं का अनुसंधान किया, जो कि व्यक्ति के दैनिकचर्या के संकट और छोटी-मोटी परेशानियों का सहज निदान बन सकें। इस प्रकार की साधनाओं में 'बटुक भैरव' की साधना श्रेष्ठतम साधना मानी गई है, जिसका फल तत्क्षण मिलता है।

शास्त्रों में भी बटुक भैरव की महिमा वर्णित है। शास्त्रानुसार भैरव को रुद्र, विष्णु व ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। इस प्रकार से भैरव के अनेक रूप वर्णित हैं– **'ब्रह्म रूप', 'परब्रह्म रूप', 'पूर्ण रूप', 'निष्कल रूप'** में– वाङ्मनसागोचर, विश्वातीत, स्वप्रकाश, पूर्णाहंभाव; एवं 'सकल रूप' में – क्षोभण, मन्यु, तत्पुरुष आदि।

भैरव की उत्पत्ति

रुद्र के भैरवावतार की विवेचना शिवपुराण में इस प्रकार वर्णित है–

"एक बार समस्त ऋषिगणों में परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, वे परब्रह्म को जानकर उसकी तपस्या करना चाहते थे। यह जिज्ञासा लेकर वे समस्त ऋषिगण देवलोक पहुंचे, वहां उन्होंने ब्रह्मा से विनम्र स्वर से निवेदन किया, कि हम सब ऋषिगण उस परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा से आपके पास आये हैं, कृपा करके हमें बताइये, कि वह कौन है, जिसकी तपस्या कर सकें?"

इस पर ब्रह्मा ने स्वयं को ही इंगित करते हुए कहा– "मैं ही वह परमतत्त्व हूं।"

ऋषिगण उनके इस उत्तर से सन्तुष्ट न हो सके, तब यही प्रश्न लेकर वे क्षीरसागर में विष्णु के पास गये, परन्तु उन्होंने भी कहा, कि वे ही परमतत्त्व हैं, अतः उनकी आराधना

करना श्रेष्ठ है; किन्तु उनके भी उत्तर से ऋषि समूह सन्तुष्ट न हो सका; अंत में उन्होंने वेदों के पास जाने का निश्चय किया। वेदों के समक्ष जा कर उन्होंने यही जिज्ञासा प्रकट की, कि हमें परमतत्त्व के बारे में ज्ञान दीजिये!

इस पर वेदों ने उत्तर दिया–

"शिव ही परमतत्त्व हैं, वे ही सर्वश्रेष्ठ और पूजन के योग्य हैं।"

परन्तु यह उत्तर सुन कर ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों की बात को अस्वीकार कर दिया। उसी समय वहां एक तेजपुञ्ज प्रकट हुआ और धीरे-धीरे एक पुरुषाकृति को धारण कर लिया। यह देख ब्रह्मा का पञ्चम सिर क्रोधोन्मत्त

फणिवर–फणिनाथो देवदेवाधिनाथः
क्षितिपतिवरनाथो वीर–वेतालनाथः
निधिपति–निधिनाथो योगिनी–योगनाथो।
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

हो उठा और उस आकृति से बोला– "पूर्वकाल में मेरे भाल से ही तुम उत्पन्न हुए हो, मैंने ही तुम्हारा नाम 'रुद्र' रखा था, तुम मेरे पुत्र हो, मेरी शरण में आओ।"

ब्रह्मा की इस गर्वोक्ति से वह तेजपुञ्ज कुपित हो गया और उन्होंने एक अत्यन्त भीषण पुरुष को उत्पन्न कर उसे आशीर्वाद देते हुए कहा – "आप 'कालराज' हैं, क्योंकि काल की भांति शोभित हैं। आप 'भैरव' हैं, क्योंकि आप अत्यन्त भीषण हैं, आप 'काल भैरव' हैं, क्योंकि काल भी आप से भयभीत होगा। आप 'आमर्दक' है, क्योंकि आप दुष्टात्माओं का नाश करेंगे।"

शिव से वर प्राप्त कर श्री भैरव ने अपने नखाग्र से ब्रह्मा के अपराधकर्ता पञ्चम सिर का विच्छेदन कर दिया। लोक मर्यादा रक्षक शिव ने ब्रह्म हत्या मुक्ति के लिए भैरव को कापालिक व्रत धारण कराया और काशी में निवास करने की आज्ञा दे दी।

बटुक भैरव

भैरव का एक नाम बटुक भी है। बटुक शब्द का अभिप्राय है–

'वट्यते वेष्टयते सर्वं जगत् प्रलयेऽनेनेति वटुकः'

अर्थात् प्रलयकाल में सम्पूर्ण जगत को आवेष्टित करने के कारण अथवा सर्वव्यापी होने से भैरव 'बटुक' कहलाये।

'बटून् ब्रह्मचारिणः कार्यमुपदिशतीति बटुको गुरुरूपः'

अर्थात् ब्रह्मचारियों को उपदेश देने वाले गुरु रूप होने से भैरव 'बटुक' कहे गये।

'अनेकार्थग्विलास' में कहा गया है –

"वटुः वर्णी बटुः विष्णुः"

बटुक का एक अर्थ विष्णु भी होता है, जो 'वामनावतार' की ओर संकेत है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि सर्वव्यापी, गुरु रूप एवं विष्णु रूप इन तीनों के सम्मिलित स्वरूप होने से भैरव का 'बटुक' स्वरूप पूर्ण फलप्रद एवं विजयप्रद है।

भैरव साधना के विषय में लोगों में अनेक प्रकार के भ्रम हैं, लेकिन भैरव साधना सरल एवं प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक है, यह साधना निडर होकर की जा सकती है, इसमें किसी प्रकार का कोई भय या गलतफहमी

नहीं है। यह अत्यन्त फलदायक साधना है।

यह साधना सकाम्य साधना है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति के लिए यह साधना करता है, वह कामना पूर्ण होती ही है–

- इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के अन्दर तेजस्विता उत्पन्न होती है, जिसके कारण यदि उसके शत्रु हैं, तो वे उसके सामने आते ही कान्तिहीन हो जाते हैं और शक्तिहीन होकर साधक के सम्मुख खड़े नहीं रह पाते हैं।
- यदि वह चुनाव लड़ रहा है या मुकदमा कई वर्षों से चल रहा है, तो वह उसमें पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करता है।
- उसके विरोधी उसके सम्मुख शांत हो जाते हैं, विपक्षी प्रभावहीन होकर उसके सम्मुख हार स्वीकार कर लेते हैं। यदि उसके जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं आ रही हों और उनका समाधान नहीं मिल रहा हो, तो इस साधना को सम्पन्न करने से समाधान प्राप्त होता है।

बटुक भैरव की साधना सकाम्य साधना होती है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति हेतु, वह चाहे चुनाव से सम्बन्धित हो, मुकदमे में विजय प्राप्त करने से सम्बन्धित हो अथवा विरोधियों को शांत करना हो, जीवन के किसी भी पक्ष में कोई भी समस्या आ रही हो, उसके निराकरण का सहज उपाय यही साधना है।

साधक साधना सम्पन्न कर पूर्ण पौरुषवान होकर समस्त समस्याओं को अपने साधनात्मक पुरुषार्थ से हल कर लेता है।

साधना विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है – "**बटुक भैरव यंत्र**" तथा "**काली हकीक माला**"।
- यह एकदिवसीय रात्रिकालीन साधना है।
- यह साधना **29.5.96** या किसी भी **मंगलवार** को सम्पन्न करें।
- साधक स्नान करके उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
- पीले वस्त्र धारण करें।
- बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर यंत्र को स्थापित करें।
- यंत्र के सामने तेल का दीपक लगायें तथा सुगंधित धूप जलायें।
- भैरव पूजन प्रारम्भ करें।
- सर्वप्रथम बटुक भैरव ध्यान करें –

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि
स्तरुणातिमिरवर्णो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयपर्याविघ्न-विच्छित्ति हेतु;
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

"जीवन जीने के लिए है" जो यह निश्चय कर लेता है, वह सुख हो या दुःख सहजता से जी लेता है; क्योंकि दुःख का निराकरण सामान्य प्रयास से सुलभ हो, तो कौन इस प्रयास को नहीं करना चाहेगा?

- भैरव ध्यान के पश्चात काली हकीक माला को अपने बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस पर अक्षत चढ़ाते हुए निम्न मंत्रोच्चारण करें–

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वपि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृहणामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

- तत्पश्चात उसी हकीक माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें –

।। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।।

- भोग अर्पित करें, पर जो भी भोग अर्पण करें, उसे वहीं पर बैठकर स्वयं ग्रहण करें।

वस्तुतः बटुक भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में शीघ्र सफलतादायक भी है।

साधना सामग्री न्यौछावर– 260/-

स्वप्नों का संसार

✍ विनोद वर्मा
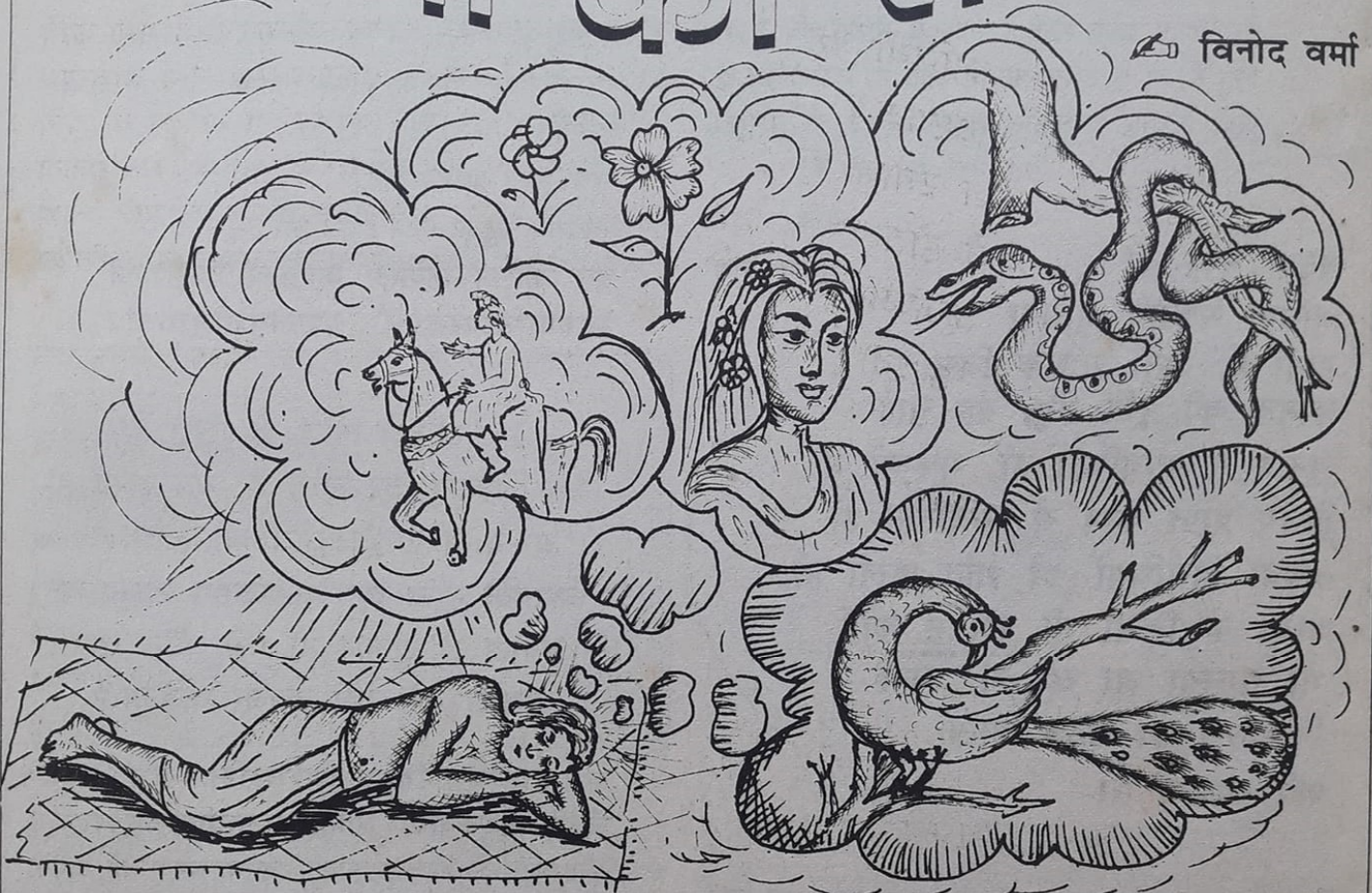
स्वप्न क्या है? क्यों होता है? क्या इसमें कुछ सत्य भी निहित है?

इस प्रकार की जिज्ञासा अनादि काल से मानव मस्तिष्क को मथती रही है। समाज शास्त्रियों की अवधारणा है, कि आदिम सभ्यता और धार्मिक परम्पराओं को जो हम मिश्र, यूनान, मेसोपोटैमिया, चीन, तिब्बत आदि में ईसा के जन्म पूर्व इतिहास में विस्तृत अनेक शताब्दियों में पाते हैं, उनके मूल में स्वप्नों की अहं भूमिका रही है। वहां के सामाजिक, राजनीतिक जीवन में स्वप्न द्रष्टाओं, जादू-टोना में सक्षम पुरोहितों, पुजारियों, भविष्यवाणी करने वाले आप्त पुरुषों (Oracles) का बोल-बाला था, जिसको चुनौती देना राज सत्ता के लिये भी असम्भव था।

आर्य कालीन वैदिक सभ्यता में भी इस बात का ठोस प्रमाण मिलता है, कि हमारे विश्व विजयी पूर्वज भी इन आप्त पुरुषों में कितना श्रद्धा रखते थे। 'ऋग्वेद' में भी, जो देववाणी रूप में व्यंजित हुआ है, अनेकानेक देवी-देवताओं का पूजन, आवाहन का विधान है। ऊषा की कल्पना एक अलौकिक स्वप्न सुंदरी के रूप में की गई है। इसके अतिरिक्त 'यजुर्वेद' मानसोपचार सूत्रों में तथा 'पारवर्ती संहिताओं' एवं 'उपनिषदों' में भी परायुगीन अन्धविश्वासों तथा भविष्य ज्ञाता आप्त पुरुषों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

मनुष्य के आदिम पूर्वजों ने भौतिक मृत्यु की तुलना अखंडित तंद्रा से किया था, जिसके समापन पर फिर जाग उठना असम्भव है। किन्तु इस प्रकार का सामंजस्य भ्रामक है, क्योंकि निद्रावस्था एक सामान्य भौतिक क्रिया है, जिसका व्यापक प्रभाव हम समस्त प्राणियों में मनुष्य, पशु-पक्षियों वृक्ष और पौधों तक में पाते हैं।

❋ सपने क्यों आते हैं?
❋ क्या है सपनों का संसार?
❋ अतिनिद्रयचेतन शक्ति क्या है?
❋ नींद का आना प्राणियों के लिए कितना आवश्यक?
❋ सपनों पर काल स्थान का बंधन क्यों नहीं होता?
❋ क्या गर्भस्थ अजन्मा शिशु भी सोता है अथवा सपने देखता है?
❋ क्या 'पुनर्जन्म' वास्तविक सत्य है?

सामान्य दशा में तंद्रावस्था में मनुष्य की चेतना वाहक ''कोरटेक्स'' का भौतिक कार्य-कलाप काफी सीमित रहता है। इसका मुख्य कारण हृदय की शुद्ध रुधिर वाहिनी धमनियों द्वारा मस्तिष्क के स्नायु मंडल में अल्प रुधिर पहुंचाना माना जाता है। सुप्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक पावलोक (1849-1936) ने अपने वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर यह प्रमाणित किया था, कि निद्रावस्था में ''कोरटेक्स'' का नियमित कार्य-कलाप खून की कमी के कारण अत्यधिक सीमित रहता है। इसके फलस्वरूप शरीर का तापमान गिर जाता है और यहां तक कि व्यस्क व्यक्ति में भूख-प्यास की नैसर्गिक प्रक्रिया भी बाधित पड़ जाती है।

प्रोफेसर क्लीटमन (1939-सी) ने यह प्रतिपादित किया था, कि चेतना शक्ति के प्रधान केन्द्र ''हिपोथाल्मस'' पर रक्त की सीमित आपूर्ति के कारण उसकी नियमित कार्य प्रणाली शिथिल हो जाती है। इस अस्थाई सुप्तावस्था के अंतराल में मस्तिष्क अपने जीर्ण-शीर्ण ज्ञान तंतुओं को स्थापित कर देता है, जो व्यक्ति के जागने पर उसकी मानसिक प्रक्रिया को सबल एवं सुचारू रूप से चालित करने में सम्बल का कार्य करते हैं।

तन्द्रावस्था में बाह्य इन्द्रियों के समस्त कार्य कलाप अवरुद्ध नहीं हो जाते। यह सामान्य अनुभव है, कि गाढ़ी निद्रा में निमग्न अनेक व्यक्ति हंसते-बोलते कुछ करते, सोचते रहते हैं। युद्ध भूमि में रत सैनिकों का निद्रावस्था में काफी देरी तक मार्च करना असामान्य घटना नहीं है। हां! यह सही है, कि वे अपनी नियमित ट्रेनिंग तथा स्वाभाविक आदत के कारण ही ऐसा करते हैं। फिर नींद में चलना (जाग्रतावस्था जैसा आचरण) बड़बड़ाना अनेकानेक शयनकक्षों में परिवार के अन्य सदस्यों को भय और आश्चर्य के गर्त में ढकेल सकता है। ऐसे असामान्य हरकतों के लिए एक मात्र 'लेडी मैकवेथ' को ही दोषी समझना एक भ्रामक मनोवृत्ति का परिचायक है।

तन्द्रावस्था में मनुष्य की चेतना प्रक्रिया पर वास्तविक तथ्यों की पकड़ काफी शिथिल पड़ जाती है। उस दशा में उसके अन्तरतम में संचित जो अमूल्य निधियां हैं, वे स्वतः कार्यशील हो जाती हैं और उनके मुक्त उद्‌बोधन के फलस्वरूप ऐसे अनेकानेक साहित्यिक, वैज्ञानिक विचार प्रधान लेख, धर्मोपदेश, वैज्ञानिक अन्वेषण इत्यादि संभूत होते हैं, जो जाग्रतावस्था के कृतित्व से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रमाणित होते हैं। उदाहरण के लिए कोलेरिज की सुप्रसिद्ध अधूरी कविता ''कुब्ला खान'' को लें जो अफीम का नशा उतरने पर उसने अर्ध निद्रित अवस्था में कलमबद्ध किया था।

यूरोप और अमेरिका के अनेक सुविज्ञ धर्म वक्ताओं तथा प्रचारकों ने अपने धर्मोपदेशों के माध्यम से कुछ ऐसे अनमोल रत्न दिये, जो निद्रावस्था में सोचे गये थे। इसी प्रकार अनेक भौतिक और वैज्ञानिक अन्वेषणों की मूल उत्पत्ति अर्ध-जाग्रत या स्वप्नावस्था में होने का प्रमाण पाया जाता है।

ऐसा विश्वास किया जाता है, कि मानव का अतिनिद्रय चेतन शक्ति (अन्तः प्रज्ञा) तंद्रावस्था में अत्यधिक सक्रिय हो जाती है। मनुष्य के मस्तिष्क में जो अद्‌भुत ज्ञान संवेदन का भण्डार प्रकृति ने संचित कर रखा है, वह विज्ञान के लिये महान रहस्य बना हुआ है।

नींद का आना, (और न आना भी) प्राणियों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। दैनिक जीवन क्रिया की थकान, परेशानी व उलझनों को दूर करने में निद्रा एक महौषधि का काम करती है। हरा-थका, चिन्ताग्रस्त मनुष्य जब सोकर उठता है, तो उसमें एक नव जीवन, नवोत्कर्ष का उद्रेक मिलता है, जो निःसंदेह आजकल के तनावों तथा संघर्ष पूर्ण सामाजिक वातावरण में व्यक्ति के लिए अप्रत्याशित लाभ

पहुंचाता है। अन्य वर्ग के प्राणियों के लिए भी, पशु, पक्षी, पेड़ तक में समयानुसार नींद का आना एक आवश्यक प्राकृतिक विद्या है – जिसमें व्यवधान पड़ने पर प्राणियों पर व्याधि तथा चेतना क्रिया का ह्रास होना जैविक विज्ञान का प्रकाश स्तम्भ माना जाता है।

फिर निद्रा का संसार कितना सम्मोहक, कितना आतंरिक सुख और शान्ति का संगम है?

यह ठीक है, कि नींद के लड्डू मीठे नहीं होते, और न उनके खाने से पेट ही भरता है। फिर भी नींद में जो रंगीन चित्र मानस में उभरता है, वह वास्तविक जगत के थकान और अवसाद को मिटा देता है, तथा उसमें यह असामान्य शक्ति निहित होती है, जो ''ईड ('Id') जन्य काम-वासनाओं को भी पराभूत कर देता है।

तब ''सपने'' क्या होते हैं?

नींद तथा सपने का निकटस्थ अन्योन्याश्रित प्राकृतिक संबंध है। निद्रावस्था चाहे कितनी ही प्रगाढ़ हो, शायद ही वह स्वप्नरहित (Dream-less) हो सकती है? सहज सचेतन प्रणाली की कड़ी में निद्रावस्था में अनवरत ऐसे व्यवधान और बहु-रूप दर्शी (Kaleidoscopic) मानसिक चित्रों का ताना-बाना स्वत: उपस्थित होता रहता है, जो तंद्रा एवं जाग्रति को विभाजित करने वाली रेखा को एक दूसरे से जोड़ देता है। तब व्यक्ति को यह एहसास नहीं हो पाता कि सत्य क्या है, स्वप्न क्या है?

स्वप्निल अनुभूतियों की व्याख्या करना अत्यन्त कठिन है। डॉक्टर ह्यूलिंग्ज जैकसन एवं विश्व विख्यात कनाडा के मानसिक चिकित्सक विलियम पेनफील्ड की खोजों से यह तथ्य प्रकाश में आया है, कि सपने निद्रावस्था में संभूत उस अर्ध-चेतना के परिणाम हैं, जिसमें उच्च स्तरीय चेतना क्रिया का प्रधान क्षेत्र ''हाइपोथाल्मस'' अपना प्राकृतिक कार्य-कलाप स्थगित कर देता है तथा उसके स्थान पर अवचेतन (Sub-Conscious) मस्तिष्क अपनी चिर संचित वासनाओं तथा सुप्त प्राय: अनुभूतियों को अपना प्रदर्शन करने के निमित्त स्वच्छन्द कर देता है।

फ्रायड ने स्वप्नों को दमनित वृत्तियों तथा अतृप्त अनुभूतियों के तुष्टिकरण का माध्यम माना है। अपनी सुप्रसिद्ध खोज पुस्तक ''Interpretation of Dreams'' में, जो साइको एनालसिस की नींव शिला मानी जाती है, उसमें यह प्रतिपादित किया है, कि अतृप्त काम वासनाएं (Id) ही स्वप्नों को प्रचारित एवं निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका तैयार करती है।

सामान्य व्यवहार में यह देखा गया है, कि स्वप्निल अनुभूतियों के प्रादुर्भाव में सोए हुए व्यक्ति की भौतिक और मानसिक अन्तरदशा का व्यापक प्रभाव पड़ता है। बीमारी और कोई पीड़ादायक दुर्घटना, बिस्तर का साफ-सुथरा और आरामदेह न होना, कोई पुस्तक पढ़ते, टी॰वी॰ देखते, सिगरेट का कश लेते हुए सो जाने पर, आदि अन्य बाह्य वातावरण का भी व्यक्ति विशेष के सपनों पर असामान्य प्रभाव पड़ता है। दुखद और चिन्तापूर्ण स्वप्न अपाच्य भोजन का परिणाम हो सकते हैं। नशीली वस्तुओं का सेवन, हेरोइन तथा ''एज-एस-डी'' वर्ग की दवाईयों का इंजेक्शन/धूम्रपान ''कोरटैक्स'' के कार्य-कलाप पर तीव्र दुष्प्रभाव उत्पन्न कर देता है, जिसकी तुलना हम मिराज अथवा छलावा या दिवा स्वप्न (Lucid Dreaming) से कर सकते हैं। इस अवस्था में सोया हुआ या दिशा भ्रमित व्यक्ति यह अनुभव करता है, कि जो दृश्य या तथ्य उसके मानसपटल पर अभिव्यंजित हो रहे हैं, वे स्वप्न या असत्य घटना के अंग नहीं हैं, प्रत्युत वे व्यावहारिक जगत की अनुभूत घटनाओं/तथ्यों के अभिन्न भाग हैं। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के परिक्षेत्र में ''ल्युसिड ड्रीमिंग'' का उत्तरोत्तर प्रयोग किया जा रहा है।

स्वप्निल अनुभूतियों की अपनी क्लिष्ट, व्यंजनापरक भाषा और विशेषता है। एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटानिका के सप्तम खण्ड में इस विषय पर एक अत्यन्त विद्वतापूर्ण लेख संग्रहित है, जिसके समापन में स्पष्ट किया गया है, कि "Dream is .... an illusory or hallucirratory experience whose limporal locus is the present .... and which is recognised as real...." संक्षेप में सपनों को छलावा (illusion) या मति-भ्रम का परिचायक माना जा सकता है।

"Dream" शब्द की उत्पत्ति जर्मन भाषा के "Traum" एवं "Trugen" के संयोग से हुई है और इसका अर्थ है ''छलना'' अथवा ''आत्म प्रवंचना'' सीमित परिचर्चा के दृष्टिकोण से यह शब्द काफी सार्थक प्रतीत होता है।

स्वप्नों पर काल स्थान का कोई बंधन नहीं होता और न उनमें भौतिक जगत की वस्तु परक अनुभूतियों के साथ तादात्म्य ही अभिव्यंजित होता है। अधिकांश स्वप्नों का कोई दीर्घकालीन रूप-रंग नहीं होता, और वे वर्षा ऋतु में आकाश में मंडराते हुए बादलों की भांति प्रत्येक क्षण अपना स्वरूप बदलते रहते हैं, उनमें यदा-कदा रंगीन होने का

आभास मिलता है, किन्तु वे प्रायः फोटोग्राफी के "श्याम-श्वेत" रील का ही अनुकरण करते हैं। सपनों के लेड्डू मीठे और सुस्वाद नहीं होते और न उनको आत्मसात कर हम अपनी नैत्यिक भूख-प्यास शान्त कर सकते हैं।

शायद बच्चों के सपने पूर्ण अव्यावहारिक और तथ्यात्मक अनुभूतियों से परे होते हैं। प्रगाढ़ नींद में खिलखिला कर हंसना अथवा रोना-चीखना बच्चों की सामान्य आदत होती है। किन्तु क्या गर्भस्थ अजन्मा शिशु भी सोता है अथवा सपने देखता है? यह रहस्य मानस शास्त्रियों के लिए एक चिरन्तन पहेली बन गया है।

अर्वाचीन प्रसूति क्रिया में दक्ष वैज्ञानिकों ने ऐसा विद्युत चुम्बकीय धर्मी उपकरण इजाद कर लिया है, जिनको कम्प्यूटर के माध्यम से संयुक्त कर वे माता के गर्भ में सुरक्षित पलते-बढ़ते अजन्मा शिशु के भौतिक मानसिक क्रिया-कलापों का बाहर से ही अध्ययन कर सकते हैं। वैसे भी प्रत्येक भावी माता एवं उसके निकटस्थ परिवार वाले सदस्य डॉक्टर तथा नर्स आदि गर्भ में पलते शिशु की भौतिक हलचलों तथा स्पंदन आदि की पूर्ण जानकारी स्पर्श मात्र से ही जान जाते हैं। किन्तु अजन्मे 3-4 मास से अधिक अवस्था वाले भ्रूण के मानसिक क्रिया-कलाप के विषय में आनुवांशिक संस्कारों के हिमायती और मानस शास्त्रियों में काफी मतभेद पाया जाता है।

इस विवाद में उलझे बगैर यह कहा जा सकता है, कि गर्भस्थ शिशु की जन्मोत्तर शिक्षा-दीक्षा का श्री गणेश माता के गर्भ में ही आरम्भ हो जाता है। महाभारत में वर्णित इस घटना को पूर्ण असत्य तथा मनगढ़न्त मानना समीचीन नहीं होगा, जिसके अनुसार गर्भस्थ अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन क्रिया का अधूरा ज्ञान अर्जुन और सुभद्रा के अंतरंग वार्तालाप से ही प्राप्त हुआ था, और यदि सुभद्रा बीच में ही सो न गई होती, तो अभिमन्यु शायद चक्रव्यूह को ध्वस्त कर कुरुक्षेत्र के मैदान में एकत्र कौरव सेना को धूल चटा देता।

स्वप्न जगत कितना काल्पनिक तथा अवास्तविक होता है, इसका संकेत शेक्सपीयर ने "Twelfth Night" के अन्तिम अंक में दिया है, जब वह कवियों के विषय में कहलाता है, कि वह **"Gives to Aery Nothing — A local hatratatierr and name!"** अर्थात कवि वायव्य शून्य में भी नाम-स्थान की पदास्थापना कर सकता है। शेक्सपीयर स्वयं भी इसी मर्ज का मरीज था। उसके प्रधान नाटक, सुखान्त-दुखान्त रूमानियों पर आधारित "काव्य-नाटक" आदि सभी जिस मानसिक धरातल का प्रतिबिम्ब व्यक्त करते हैं, उसमें वास्तविकता एवं कल्पना का अभूतपूर्व मिश्रण हुआ है।

निःसंदेह स्वप्न धरातल पर पाये जाने वाले तथ्यों का अधिक्रमण करते हैं, किन्तु उनको निरर्थक अथवा महत्त्वहीन मानना अतार्किक होगा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हम उन संख्य घटनाओं तथा अनुभूतियों में पाते हैं, जिसके साक्षी अनादिकाल से प्रचलित वे सामाजिक और धार्मिक परम्पराएं और संस्कार हैं, प्राचीन मिश्र, एसिरिया, यूनान, मंगोलिया, चीन, तिब्बत और सुदूर पूर्व के आदिम वासियों के जीवन के अभिन्न भाग बन गये थे।

स्वप्नों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके व्यक्ति विशेष के न केवल सुदूर भूतकाल में घटित किसी असामान्य अनुभूति का स्थायी प्रभाव ज्ञात किया जा सकता है। साथ ही इसके माध्यम से भविष्य में होने वाली संभावनाओं का भी यदा-कदा पता लगाया जा सकता है।

'सिजमण्ड फ्रायड' ने अपनी प्रसिद्ध कृति "Interpretation of Dreams" द्वारा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की विद्या में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। जंग (Jung) तथा फ्रायड के अन्य परावर्ती मानस शास्त्रियों ने जिनमें विलियम डेमेण्ट तथा राय शेफर आदि प्रमुख हैं, इस विद्या को काफी विकसित कर दिया है। आज विश्व के विकसित नगरों तथा विश्वविद्यालयों में अनगिनत मनौवैज्ञानिक संस्थाएं कार्यरत हैं, जो स्वप्नों के अध्ययन व्यापक विश्लेषण पद्धति से तथा अन्य वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करके व्यक्ति विशेष को सम्भावित घटनाओं की जानकारी देकर उसके जीवन पथ को निष्कंटक और सुगम बनाने का दावा करती हैं।

इस दिशा में सबसे क्रान्तिकारी परिवर्तन डॉक्टर क्रेसेल की सम्मोहन निद्रा (Hypnotic Sleep) है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके उसके माध्यम से सदियों के गर्त में दबे भूत कालिक घटनाओं एवं अनुभूतियों का उद्घाटन करने का दावा किया जाता है।

क्या 'पुनर्जन्म' वास्तविक सत्य है? अधिकांश विचारक इस मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की विश्वसनीयता पर संदेह करते है।

जो कुछ भी हो स्वप्नों को भूत और भविष्य का असामान्य द्रष्टा मानना पूर्ण समीचीन होगा।

विन्ध्यवासिनी साधना

भूत, भविष्य और वर्तमान को अपनी मुट्ठी में कैद कर व टैलीविजन स्क्रीन पर आए चित्र की तरह किसी का भी उसी क्षण भविष्य देखने की दिव्यतम साधना . . .

कई बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं, जिनमें निर्णय लेना कठिन हो जाता है, यदि हमें भूतकाल का या भविष्यकाल का ज्ञान होता, तो हम आसानी से उन परिस्थितियों में निर्णय ले सकते थे। इसे मनुष्य जीवन की विडम्बना कहें या कुछ और, कि मानव की प्रकृति अत्यन्त रहस्यमय है, न जाने वह कब क्या कर बैठे। आज जो आपका विश्वासपात्र है, न जाने किस क्षण किसी लालच में आकर आपसे विश्वासघात कर बैठे।

व्यापार से सम्बन्धित व्यक्तियों को तो अत्यन्त सावधानीपूर्वक अपने कार्य को करना पड़ता है, जिससे कि वे सफल व्यापारी बन सकें, उन्हें तो अपने व्यापारिक कार्यों में विश्वास करना ही पड़ता है, हालांकि वे अत्यन्त संशयात्मक स्थिति में रहते हैं, कि जिस व्यक्ति के साथ वे व्यापार करना चाह रहे हैं या जिस व्यक्ति को यह कार्य सौंप रहे हैं, वह मेरे लिए अनुकूल है, कि नहीं, धोखा तो नहीं
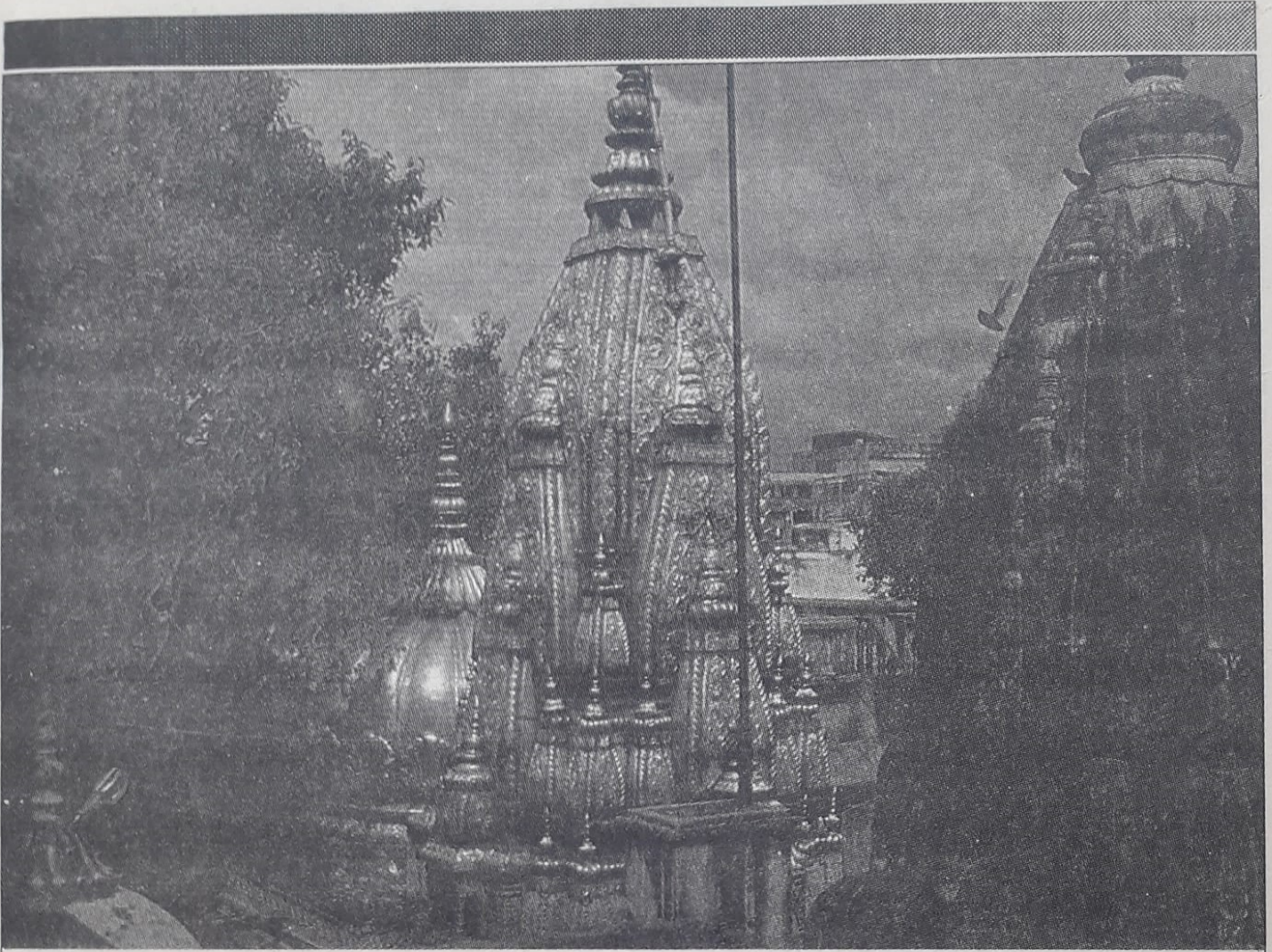
दे देगा या बीच में लालच में फंस जायेगा या किसी लालचवश यह काम कर रहा हो या किसी विरोधी पक्ष का व्यक्ति हो और भेद लेने आया हुआ हो। इतनी सारी बातों की दुविधा में फंसे हुए, प्रत्येक स्थिति में सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ही वह किसी कार्य में हाथ डाल पाता है।

इतना होने पर भी वह निश्चिंत नहीं हो पाता, क्योंकि वह सोचता रहता है, कि काश! मैं उसके विषय में पूर्ण रूप से जान पाता, उसके अतीत को देख पाता, कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है, तो अपने कार्य के प्रति सजग हो सकता, सचेष्ट हो सकता।

दुर्घटना भरे क्षणों के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता, जिससे पूरा जीवन क्रम परिवर्तित हो जाय; न जाने कब, कहां, कौन सी घटना घटित हो जाय, जो उसके अनुकूल न हो। मानव हर क्षण यही प्रयत्न करता है, कि वह अपने जीवन को सफलतापूर्वक सुरक्षित रूप से व्यतीत कर सके और साथ ही प्रयासरत रहता है, कि वह ऐसे कार्य को सम्पादित करे, जिससे वह सुखी रह सके।

इसी प्रकार की क्रिया वैवाहिक परिस्थितियों में भी होती है, कि जिससे मेरा विवाह हो रहा है वह लड़की किस प्रकार की है; या पिता अपनी पुत्री का हाथ जिसको सौंप रहा है, वह उसका साथ निभा सकता है या नहीं; जिस लड़की को बहू बना कर घर ला रहा है, वह परिवार के अनुकूल है या नहीं?

यह सब कुछ ज्ञात कर सकते हैं आप, यदि आपके पास हो 'भूत-भविष्य ज्ञान सिद्धि' और सम्पन्न कर सकते हैं उन सभी कार्यों को, जिनमें आप संशय में पड़ जाते हैं।

भूत-भविष्य के बारे में अनेक क्रियाएं प्रचलित हैं साधनात्मक क्षेत्र में। जहां ज्योतिष द्वारा हस्त रेखा तथा कुण्डली आदि के द्वारा इसके बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है, वहीं काल साधना, भविष्य सिद्धि, पंचांगुली साधना, कर्ण पिशाचिनी व कई अन्य साधना विधियां हैं, जिनके द्वारा यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

इन साधनाओं से मात्र एक ही क्रिया सिद्ध हो सकती

श्री पंकज यादव, गाडरवाडा

मनुष्य आदिकाल से श्रम के महत्व को अग्रणी समझ कर वर्तमान को संवारने के लिए कार्यरत रहा है। जिसके फलस्वरूप उसने ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं, मीनारें, मकबरे और यादगार स्मृतियां मन्दिर-मस्जिद के रूप में बनाकर समाज के सम्मुख विकास के साथ-साथ उसने अपने जीवन में श्रम एवं कर्म के अलावा एक अति महत्वपूर्ण सत्य को भी अनुभव की कसौटी पर परखा है, वह कोई और नहीं अपितु उसका अपना भाग्य, 'लक या स्टार है, जो उसकी क्षमता या अक्षमतापूर्ण कार्य के उपरांत भी अभूतपूर्ण परिणाम प्रदर्शित करता है। इस प्रकार इस तथ्य को समझना उसके लिए तब तक दुसाध्य था जब तक उसके ज्ञान चक्षु एवं चर्म चक्षु इस प्रकृति की दैनिक, मासिक, वार्षिक व्यापक परिवर्तनीय घटनाओं को समझने के प्रयास से दूर रहे।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जीव और ग्रहों का संबंध

समय की करवट के साथ भारत की भूमि और विश्व के अन्य देशों की भूमि में कई विद्वान एवं द्विज अवतरित हुए। वे वास्तव में युग पुरुष तुल्य थे, जो अपने भावी पीढ़ी के लिए अमूल्य ज्ञान की सौगात अध्ययन एवं शोध कार्य हेतु दे गये। ज्यामितीय एवं अंक गणितों पर आधारित खगोल शास्त्रीय ज्ञान के उत्कृष्ट सीमा की पराकाष्ठा जानने के प्रयास में हमारे पूर्वज, सूर्य, बृहस्पति, मनु, अत्रि, वशिष्ठ, पुलस्त्य, लोमेश, पौलिश, अंगिरा, व्यास, मरीचि, नारद, शौनक, च्यवन, यवन, भृगु, कश्यप, गर्ग और पराशर जैसे ज्ञानियों द्वारा शोधित वेदों से उद्धृत ज्योतिष शास्त्र की गणना एवं रचना आज भी अटल सूर्य की तरह सर्वजन साधारण में दैदिप्यमान है। वर्तमान में कतिपय पाखण्डियों एवं अल्पज्ञानियों के दूषित आचार-विचार के द्वारा गंगा सदृश ज्योतिष ज्ञान धारा को अपवित्रतता का जामा पहिनाने का निदंनीय कृत्य किया जा रहा है। जिसके कारण आधुनिक जीवन में ज्योतिष जैसे विषय को अंधविश्वास का पर्याय मानकर खिल्ली एवं माखौल उड़ाया जाता है।

ज्योतिष उस धारदार तलवार के सदृश है, जो स्वयं अपने पैनापन एवं तीक्ष्णता का बोध कराती है। अब यह जनसाधारण पर निर्भर करता है, कि इस तलवार रूपी ज्ञान का उपयोग कैसे करें?

नवजन्मे शिशु पर आपातित सभी ग्रह रश्मियां अपनी

पश्चिमी सभ्यता रोबोट, यान, सामरिक अस्त्र-शस्त्र का निर्माण बखूबी कर सकता है, परन्तु इस अद्‌भुत मानव तंत्र की जन्म-मरण आजीविका से संबंधित तथ्यों की निश्चितता से बहुत दूर है। ज्योतिष को वर्तमान आधुनिक वैज्ञानिकीय नजरिये के द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है — जिस प्रकार एक स्वचालित या मानव चालित कैमरा सेकण्ड के सौवें हिस्से में झपक कर अपने निगेटिव में फोकस की गई वस्तु का चित्र कैद कर लेता है। ठीक उसी प्रकार जब किसी भी जीव का गर्भाशय से इस धरा पर प्रथम आगमन होता है, तब ब्रह्माण्ड में स्थित सारे सौरमण्डल, नक्षत्र, तारे, ग्रह अपनी-अपनी प्रकाश किरणें दूरी और सापेक्षता के अनुसार उस जीव पर डालते हैं। फोटो फिल्म की निगेटिव में प्रथम बार जो प्रभाव पड़ता है, उसका प्रभाव अमिट होता है। इसी प्रकार प्रथम बार में ही जो किरणें जीव पर पड़ती हैं, वे उस जीव के लिए ता-जिदंगी प्रभावकारी होती हैं। नवजन्मे शिशु पर आपातित वे समस्त ग्रह अपनी रश्मियों से अपनी दूरी एवं सापेक्षता के अनुरूप अपनी तेजस्विता से सम्पृक्त हो कर उस शिशु में अपने लक्षण व्यक्त करते हैं।

तेजस्विता से सम्पृक्त होकर शिशु में अपने लक्षण व्यक्त करते हैं।

खगोल शास्त्र के ज्यामितीय सिद्धान्त के सहयोग से प्रारंभ हुई यह प्राचीन विद्या सर्वजन साधारण में 'जन्म कुण्डली' के नाम से प्रचलित है। जन्म कुण्डली अर्थात् वह समस्त लेखा-जोखा जो जन्म लिए हुए बालक (जातक, शिशु) के जन्म समय पर स्थित खगोलीय, दशा, नक्षत्र, ग्रह एवं उनकी गति की व्याख्या करे।

ब्रह्माण्ड में स्थित सभी जीव पंचतत्त्व से निर्मित हैं, और इनमें आवश्यक या अनावश्यक परिवर्तन उपरोक्त वर्णित दशा के बदलाव पर ही निर्भर करता है। रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहू एवं केतु ग्रह अपने भ्रमणकारी प्रकृति के कारण पृथ्वी वासियों के जीवन पर अपने गुणों से संबंधित प्रभाव कम एवं ज्यादा प्रदान करते रहते हैं।

व्यापक विषय को छोटे से लेख में समेटना अधूरा परिचय प्रदान करना होगा, परंतु संक्षेप में कहें तो 'सूर्य' — आत्मा एवं हृदय का, 'चंद्र' — आंखे, वक्ष एवं सौंदर्य का, 'मंगल' — हिम्मत, पराक्रम एवं रक्त का, 'बुध' — फेफड़े, केश, विद्या एवं वाणी का, 'गुरु', — लीवर धन एवं पुत्र का, 'शुक्र' — काम, जननांग, पत्नी व वाहन का, 'शनि' — हड्डियों, आजीविका व मृत्यु का, 'राहू' — छाया एवं गृह का, 'केतु' — दादा एवं नाना का, क्रमशः प्रभाव परिवर्तनीय कारक होते हैं।

जातक के जन्म समय पर स्थित सभी ग्रह नक्षत्रों के मान के आधार पर गणितीय गणना के द्वारा जातक के रूप, रंग, व्यक्तित्व, आय, व्यय, भाग्य, मृत्यु की सटीक व्याख्या हमें कुण्डली द्वारा प्राप्त हो सकती है।

भगवान श्री कृष्ण के गीता उपदेशानुसार कर्म

ही प्रधान है, परंतु इस संसार में कर्म की प्रधानता के अलावा भाग्य भी एक प्रमुख अवयव होता है, जो किसी जातक को 'लोहा' से भाग्योदय कराता है, तो किसी को तबाह करके सड़क पर बिठाता है। ये सभी आश्चर्यजनक परिणाम कर्म के परिपूर्णता के उपरांत भी सर्वशक्तिमान भाग्य जैसे गोपनीय तथ्य पर आकर ''बंद सिम-सिम'' की तरह दिखते हैं।

जीवन के सत्कर्म, दुष्कर्म का लेखा-जोखा उत्तरोत्तर होता है, परंतु ग्रह-नक्षत्रों, लग्न एवं राशि का प्रभाव तो पश्चिमोत्तर से ही परिलक्षित होने लगता है। ऐसी अवस्था व्यक्ति को घोर आस्तिक या नास्तिक बनाने की प्रक्रिया है। भटकन भी अवश्य-संभावी होता है। यह अपूर्णता संबंधित ग्रहों के असहयोग अथवा उदासीनता से उत्पन्न होती है। जिनका आकलन करके जानकारी में रखना नितांत आवश्यक है और अनुकूलता के लिए जरूरी उपाय भी अपनाना स्वहित में लिये गये निर्णय के समान है।

शरीर विज्ञान में किसी अंग की शिथिलता या अनुपयोगिता को सप्लीमेंटरी उपायों द्वारा दूर किया जाता है। जैसे — कम या ज्यादा दृष्टि दोष, खराब गुर्दे, खराब हृदय, खराब हाथ-पैर इन सभी का विकल्प चश्मे, कृत्रिम गुर्दे, हृदय एवं कैलिपर्स द्वारा।

ज्योतिष शास्त्र में अकारकीय या उदासीन ग्रहों के फलस्वरूप उत्पन्न संकट एवं बाधाओं को दूर करने के लिए विभिन्न ग्रहों से संबंधित भूगर्भ से उत्खनित रत्नों को आवश्यकतानुसार धारण करके सफलता पूर्वक निदान बताया है। ये अनुमोदित 'रत्न' संबंधित ग्रहों से उत्सर्जित रश्मियों को अवशोषित कर पीड़ित जातक को वास्तविक लाभार्थ बल प्रदान करते हैं। ये रत्न अपनी निश्चित समयावधि तक के लिए ही उपयोगी होते हैं। इन्हें धारण करने के लिए वैदिक एवं सामान्य दोनों प्रकार फलदायी हैं। आवश्यकता तो केवल ऐसे अनुभवी व्यक्तित्व की है, जो अपने ज्ञान से जातक के जीवन में छाये हुए अंधकार, बाधाओं और दुर्भाग्य को दूर करने में सहयोगात्मक ज्ञान प्रदान करे।

हर व्याधि, संकट एवं चिंता का निदान 'मणि', 'मंत्र' एवं 'औषधि' द्वारा संभव हैं। व्याधि, रोगों में औषधि तथा उर्वर तत्त्वों को लेना आवश्यक होता है, परन्तु इसके साथ-साथ मणि एवं मंत्र का भी सहयोग हो तो 'सोने में सुगंध' जैसी बात हो सकती है। वराहमिहिर, कालजयी लंकेश, च्यवन, पराशर के वंशज होकर यह खेद का विषय है, कि भारतीय ज्ञान की धारा में स्नान करना हमें अंधविश्वास प्रतीत होता है।

अनुमोदित रत्न संबंधित ग्रहों से रश्मियों को अवशोषित कर लाभार्थ बल प्रदान करते हैं।

यही विद्या यदि पश्चिम से नये मुलम्मा चढ़ाकर विशेष पैकिंग में प्रस्तुत हो, वह भी विचित्र थ्योरम अथवा सिद्धान्त का रूप लेकर; तब हमारी सभ्यता और सुधारक इन्हें इंसटैण्ट कॉफी, नूडल अदांज में भावी पीढ़ी को परोसने की पहल अवश्य करेगी

आवश्यकता तो केवल ऐसे अनुभवी व्यक्तित्व की है, जो इनका सहयोगात्मक ज्ञान प्रदान कर सके।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

भाग्योदय में सहायक, अंगूठी में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक ''सूर्यकान्त उपरत्न'' निःशुल्क

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त ''गुरु यंत्र'' आशीर्वाद स्वरूप

सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर ''चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा'' सर्वथा मुफ्त

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी ''पारद शिवलिंग'' उपहार स्वरूप

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य ''पूज्यपाद गुरुदेव'' का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

''सिद्धाश्रम कैसेट'' ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा, सर्वथा मुफ्त

प्रथम साधना शिविर में, ''शिविर सिद्धि पैकेट'' (धोती, माला, पंचपात्र तथा सिद्धासन निःशुल्क)

पत्रिकाएं आती हैं, जाती हैं. . . लोग उन्हें भूल जाते हैं। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान हमेशा आपके साथ रहती है, आपके हाथों में, आपके घर में . . . धरोहर रूप में पीढ़ियों के लिए संग्रह करते हैं आप इसका, क्योंकि इससे संवरता है आपका जीवन, दृढ़ होता है आपका विश्वास; तभी तो आप प्राप्त करते हैं **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** की **आजीवन सदस्यता** और अधिकारी बन जाते हैं आप, विविध उपहारों के . . .

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777**/- रुपये (आजीवन सदस्ता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो, तो तीन किश्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट : बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०), फोन : 0291-32209
306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

साधना सफलता

क्या आपके चेहरे पर झुर्रियां आने लगी हैं?

चेहरा शरीर का अत्यन्त संवेदनशील स्थान है, इस पर वातावरण के प्रभाव से मन की स्थिति का प्रभाव सबसे पहले पड़ता है, शरीर के समस्त भाग से ज्यादा इस पर ध्यान देना पड़ता है, क्योंकि हर भाग का अपना महत्त्व है, यदि किसी भी भाग का महत्त्व कम होने लगे, तो महत्त्वहीनता का प्रभाव उस भाग पर पड़ता ही है, जिससे वहां की त्वचा, वहां की मांस-पेशियों में ढीलापन आ जाता है और जिसके कारण झुर्रियां पड़ जाती हैं, मगर आप शरीर के इस महत्त्वपूर्ण भाग को, जो आपके व्यक्तित्व का केन्द्र है, इससे बचा सकते हैं, यह प्रयोग अपना कर–
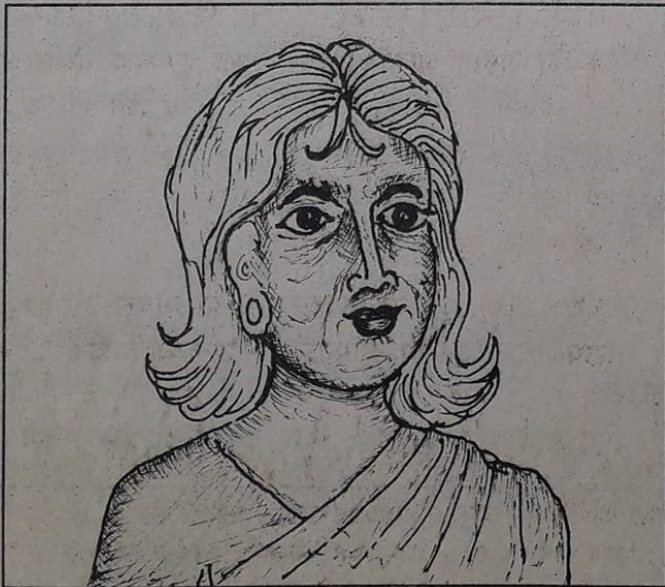
''विरोचिनी गुटिका'' को एक पात्र में जल भर कर, जल उतना ही भरें जिससे वह गुटिका उसमें डूबी रहे, निम्न मंत्र का 5 बार उच्चारण करें–

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं ऐं श्रीं श्रीं ॐ

उस जल को अपने चेहरे पर लगा लें। यह प्रयोग 11 दिनों तक करें। उसके बाद गुटिका किसी नदी में प्रवाहित कर दें। नित्य 5 बार मंत्रोच्चारण करना आवश्यक है। आपका चेहरा ही इस प्रयोग के प्रभाव को बतायेगा।

न्यौछावर – 155/-

क्या??? आप आत्महत्या करने की सोच रहे हैं. . . तो पहले इसे पढ़ लें–

आप आत्महत्या क्यों करना चाहते हैं, क्योंकि परिस्थितियां आपके अनुकूल नहीं बन रही हैं या आप जिसे चाहते हैं वह आपको धोखा दे रहा है या फिर आप स्वयं में तनावग्रस्त होकर जीवन जीना नहीं चाहते। जीवन जीना भी एक कला है, क्योंकि–

[illegible] तो जिंदा दिली का नाम है,
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।

जो व्यक्ति तनाव से जूझते हुए भी हर्षित हो जीवन जीता है, वह सही अर्थों में जीवन जीना जानता है। यदि आप जीवन की ऊंचाइयों पर पहुंचना चाहते हैं, परेशानियों से मुक्त होना चाहते हैं, तो आत्महत्या की जगह इस प्रयोग को करें–

''**बिनाड़**'' पर सात दिनों तक निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करें–

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः

सातवें दिन इसे दूर कहीं निर्जन स्थान में डाल दें। परिस्थितियां स्वतः ही आपके पक्ष में हो जायेंगी। आप जिस प्रकार से चाहते हैं, वैसा ही होना सम्भव होगा।

न्यौछावर – 128/-

आप अपनी मनचाही संतान प्राप्त कर सकते हैं?

संतान, जिसके आगमन की अनुभूति से ही चेहरे की खुशी बढ़ जाती है . . . और अगर वह मनचाही संतान हो, तो फिर कहने ही क्या! जीवन में खुशियों का अंबार लग जाता है . . . और इसे सहजता से प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रयोग को अपने जीवन में उतार कर।

''**लक्षणा**'' के सामने पन्द्रह दिनों तक पति-पत्नी दोनों नित्य 9 बार निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ

प्रयोग समाप्त होने पर इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 165/-

इतनी छोटी सी उम्र में आपके बच्चे या बच्ची को ऐनक चढ़ गई है?

छोटी सी उम्र में चश्मा चढ़ना यह एक चिन्ताजनक विषय है, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ-साथ चश्मे का लेंस मोटा होता जाता है, जो आपके बच्चे की सुन्दरता को ग्रहण की तरह छिपा देता है। आपने चश्मा उतारने के लिये कई तरह का प्रयास किया है, लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाता है, कि हमेशा के लिए चश्मा उतर सके।

– लेकिन मंत्रों के माध्यम से यह सम्भव है।

''**सुनफा**'' पर आप सात दिनों तक 21 बार मंत्र बोलते हुए जल चढ़ायें–

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ऐं ॐ फट्

फिर उस जल को अपने बच्चे की आंख की पलकों पर लगा दें। सात दिन बाद सुनफा को जल में प्रवाहित कर दें, नित्य 21 बार मंत्र जप अवश्य करें। धीरे-धीरे चश्मा उतर जायेगा।

न्यौछावर – 140/-

जरा देखिये!!! कहीं आपके बाल रूसी के कारण आकर्षण तो नहीं खो रहे?

डैंड्रफ (रूसी) के कारण बाल अपनी चमक खोने लगते हैं, बालों में यह बीमारी होने पर बाल गिरने भी लगते हैं और उनका बढ़ना भी रुक जाता है, जिससे बालों की चमक, घनापन, सुन्दरता समाप्त होने लगती है। इसके अलावा आपको बार-बार सिर खुजलाना पड़ता है, जो एक प्रकार से उचित नहीं लगता है, आपके पास बैठे लोग आपको अजीब नजरों से देखते हैं . . . और आप सोचने पर मजबूर हो जाते हैं, कि किस प्रकार से इसका इलाज करवाऊं, आप हर प्रकार की दवाइयां आदि ले चुके हैं, लेकिन फिर भी सफलता नहीं मिल रही, तो ऐसे करिये–

"**रत्नसौन्दर्या**" पर 31 बार निम्न मंत्र पढ़ कर रात में उसे पानी में डाल दें–

मंत्र

ॐ हुं हुं ऐं हुं हुं ॐ

अगले दिन उसी पानी से सिर धोयें, ऐसा पांच दिन तक करें। प्रयोग के बाद गुटिका निर्जन स्थान पर फेंक दे, बालों में अनुकूल लाभ मिलेगा।

न्यौछावर – 171/-

किसी पर भी विजय प्राप्त करनी ही है, तो . . . सम्मोहन का उपयोग करिये

सम्मोहन का अर्थ है– 'स्वयं में इतना आकर्षण उत्पन्न हो जाय, जिससे सामने खड़ा व्यक्ति स्वत: मोहित हो जाय और स्वयं ही आपका सारा कार्य कर दे।'

जीवन में कई बार ऐसे मौके आते हैं, जब व्यक्तित्व का उपयोग होता है, अगर आपमें इतना सम्मोहन नहीं है, तो आपसे प्रभावित कौन होगा? आपका व्यापार कैसे चलेगा? आपको व्यापार में सफलता किस प्रकार से मिलेगी? स्वयं में इतना आकर्षण उत्पन्न करिये, जिससे लोग आपसे स्वयं सम्बन्ध बनाने के इच्छुक हों और प्रयासरत रहें।

"**स्फटिक माला**" का पूजन कर उससे 15 दिनों तक एक माला निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

ॐ क्लीं सम्मोहनाय फट्

पन्द्रहवें दिन ही माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर – 300/-

21 अप्रैल कि आओ पास बैठें
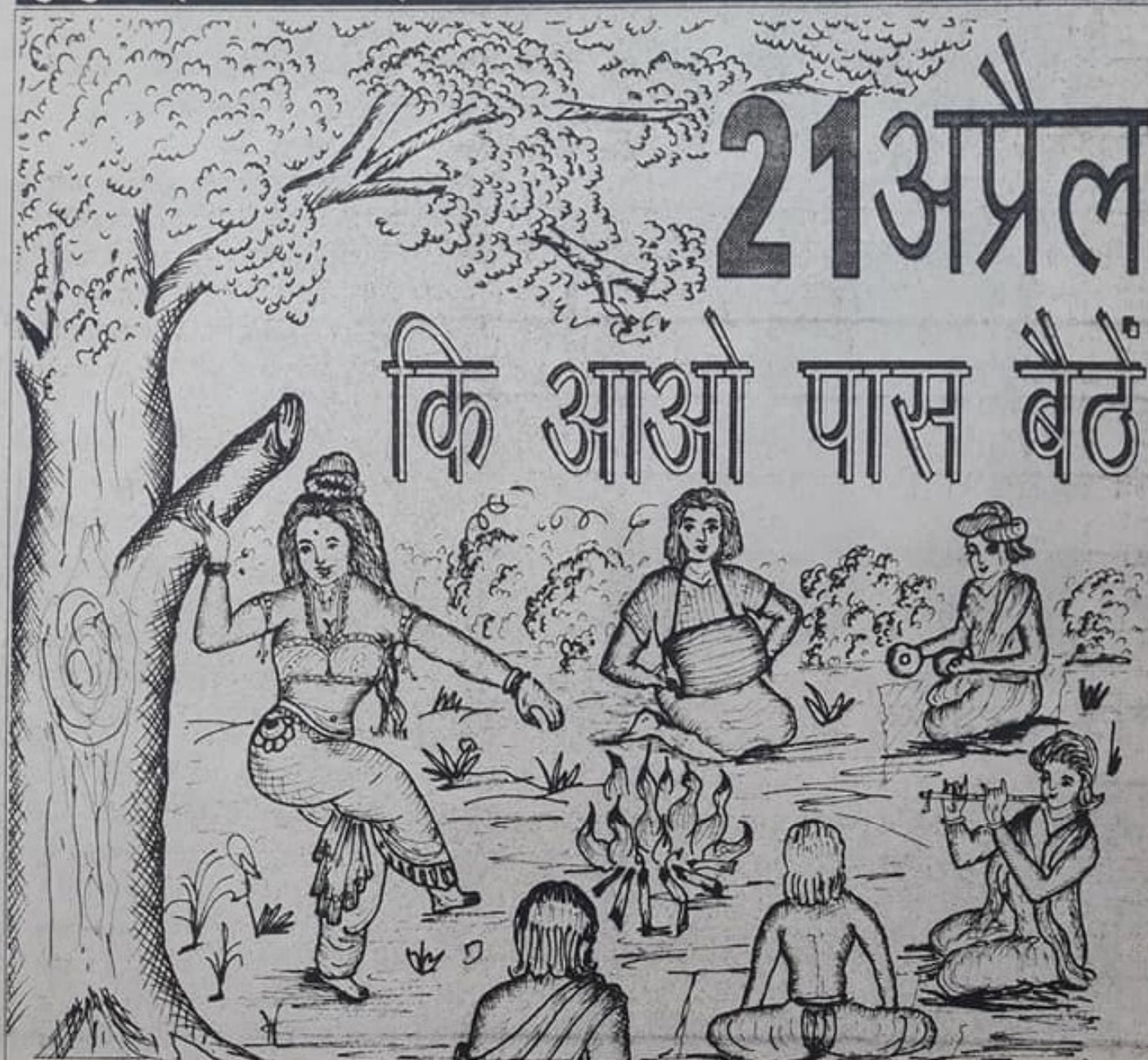
एक वर्ष और बीत गया। लगता है, कल की ही बात है, जब हम सभी पूज्यपाद गुरुदेव की षष्ठीपूर्ति का उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए थे, वर्ष 1994 में जिसका प्रारम्भ हुआ था और वर्ष 1995 में जिसकी पूर्णता हुई।

षष्ठीपूर्ति का शास्त्रीय रूप में जो महत्व है, मैं उससे तो अनभिज्ञ हूं, किन्तु भावनात्मक रूप से यही समझ सका हूं, कि जब गृहस्थ आश्रम की परिपक्वता हो जाती है, तब उसी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए इस महोत्सव का विधान रचा गया।

यूं तो भारतीय परम्परानुसार पचास वर्ष की आयु के बाद ही गृहस्थ आश्रम की समाप्ति मान ली जाती है, किन्तु जीवन की भावनाएं घड़ी की किन्हीं सुइयों से बंधी किसी व्यवस्था का ही दूसरा नाम तो नहीं हो सकता, अतः पचास वर्ष की अवस्था में जिस लौकिक कर्त्तव्य से मुख मोड़ने का क्रम प्रारम्भ होता है, वही साठ वर्ष की आयु तक परिपक्व हो पाता है।

भारतीय चिंतन में यदि कर्त्तव्यबद्ध होना उत्सव है, तो कर्त्तव्यमुक्त होना भी; क्योंकि जीवन न तो कर्त्तव्यों को ढोते रहने का नाम है, न उससे उदासीन होने का। यही संन्यास की भावभूमि है, जो गृहस्थ आश्रम के बाद प्रारम्भ होती है।

पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में यद्यपि इस व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि वे कालचक्र के बंधनों से सर्वथा मुक्त पुरुष हैं, फिर भी जितने अर्थों में उन्होंने इस भौतिक जीवन को धारण किया है, उतने ही अर्थों में हम उनके प्रति

इसी प्रकार कुछ कहने की इच्छा रखते हैं। भौतिक जीवन में होते हुए भी वे इस भौतिकता में जो अध्यात्म का पुट रखते हैं, उसका ध्यान रखना भी आवश्यक है। उनका पूर्ण आध्यात्मिक स्वरूप तो केवल उनके संन्यस्त शिष्यों के समक्ष ही स्पष्ट हो सका है।

मुझे यह लिखते हुए एवं कहते हुए खेद होता है, कि उनकी षष्ठीपूर्ति का समारोह उस वेग से सम्पूर्ण देश में, सभी शिष्यों के मध्य नहीं मनाया गया, जो अपेक्षित था। शिष्यगण किसी बंधी हुई व्यवस्था के तहत आए और उसी परम्परागत ढंग से चरण स्पर्श कर, कुछ रोकर, कुछ गाकर वापस अपने जीवन में खो गए।

जबकि अपेक्षित तो यह था, कि वर्ष 1994 से जो उत्सव प्रारम्भ हुआ, वह पूरे देश में विभिन्न गोष्ठियों, उत्सवों आदि के रूप में मनाया जाता। शिष्यगण अपने-अपने स्थानीय स्तर पर ही आयोजन करते, संगीत सभाओं, चर्चाओं इत्यादि का क्रम प्रारम्भ करते और लगता, कि कोई उत्साह, उद्वेलन सभी के मन में मचल रहा है।

मैं जानता हूं, कि हमारे गुरु भाई-बहनों के मध्य कई अद्वितीय प्रतिभाएं छिपी पड़ी हैं, वे उनका सदुपयोग कर सकते हैं और भले ही उनके नगर, ग्राम या कस्बे में संस्था की विधिवत् स्थापना न हुई हो, फिर भी वे संस्थागत रूप में कार्य कर सकते हैं। संस्था तो व्यक्तियों से बनती है, साइनबोर्डों या भवनों से नहीं, लेकिन आपने ऐसा नहीं किया।

पूर्वी उत्तर के ग्रामों में जब चैत्र मास में फसल कटने का अवसर आता है, तो अनेक स्थानों से लोग निकल कर एकत्र होते हैं, फसल की कटाई के मजदूर के रूप में। इन्हें ग्रामीण लोकोक्ति में व्यंग्य पूर्वक 'चैतुआ मीत' कहा जाता है, अर्थात् जो चैत्र माह भर मिलकर साथ-साथ फसल काटते हैं, खाना खाते हैं, गीत-उत्सव रचते हैं, फिर खो जाते हैं।

खाई रोटी गाए गीत,
ये चल दिए चैतुआ मीत।

– क्या यही व्यंग्योक्ति साधकों के व्यवहार पर भी लागू नहीं की जा सकती?

अंतर केवल इतना है, कि साधक थोड़ा-बहुत रो भी लेते हैं, जिसका कोई अर्थ नहीं होता। योग के जगत में ऐसे क्षणिक भावोद्रेकों को अत्यन्त तुच्छ समझा जाता है।

मुझे आपकी भावनाओं पर कटाक्ष करने में खेद है, किन्तु उससे भी अधिक पीड़ा है पूज्यपाद गुरुदेव का चिन्तन अपनी क्षमता भर करने के उपरान्त। प्रत्येक वर्ष ही तो वे इस प्रकार आपको अपने समीप बुलाने की क्रिया करते हैं, जीवन के नये आयाम समझाने की क्रिया करते हैं; आपको, आपके स्तर तक उतर कर रिझाते जैसा हैं . . . किन्तु फिर वही, कि शिविर समाप्त हुआ और अपने-अपने बंधन . . . बंधन तो आपसे

तुम बार-बार
आकर मुझसे मिलते हो,
लेकिन सिर्फ शब्दों से ही मिलते हो,
कहने मात्र के लिए ही मिलते हो।
तुम्हारा मुझसे मिलना
तो
तब सार्थक हो सकेगा,
जब तुम मुझे अपना जीवन बना लोगे,
जब तुम मुझे अपने खून की एक-एक बूंद
में
उतार लोगे।
मुझे अपने अन्दर इतनी गहराई में उतार लो,
कि तुम मुझसे अलग रह ही न सको
और
ऐसा तभी सम्भव हो सकेगा,
जब मैं तुम्हारा हृदय बन तुम्हारे भीतर
धड़कने लगूंगा
ऐसा नहीं है, कि तुमने प्रयास नहीं किया है
मुझे अपना हृदय बनाने के लिए,
लेकिन
इस बार जब तुम आओगे,
तो
मैं अबकी बार अवश्य
तुम्हारे प्रयास को सार्थक कर दूंगा
''मैं''
खुद तुम्हारा हृदय बन जाऊंगा।

ज्यादा पूज्यपाद गुरुदेव को हैं – शारीरिक रूप से भी मानसिक रूप से भी और आत्मिक रूप से भी, किन्तु फिर भी वे आपसे अधिक गतिशील और सचेतन क्यों हैं?

इसका उत्तर है – उनके हृदय में बहता 'स्नेह का अजस्त्र प्रवाह', जो उन्हें घोर शारीरिक पीड़ा में भी उठकर आप तक आने के लिए बाध्य कर देता है – और आप हैं, कि मकान, दुकान की समस्या में आज से जैसे दस वर्ष पहले पीड़ित थे, उसी प्रकार आज भी पीड़ित अपने आपको बता रहे हैं।

– यह षष्ठीपूर्ति मनाने का अर्थ तो कदापि नहीं हो सकता।

यदि आप सभी लोगों ने पिछले वर्ष वास्तव में पूज्यपाद गुरुदेव की षष्ठीपूर्ति महोत्सव में भाग लिया है, तो एक शिष्य के नाते आपका धर्म बन जाता है, कि अब उन्हें संतोष देने का प्रयास करें। षष्ठीपूर्ति महोत्सव मनाने का यही अर्थ है, कि हम अपने पिता को संतोष देंगे, विश्राम देंगे और उन्हें आध्यात्मिक पथ पर बढ़ने के लिए पर्याप्त अवसर देंगे, उनके दायित्वों को अब हम ओढ़ लेंगे। जैसा कि मैंने इस लेख के प्रारम्भ में कहा, कि आध्यात्मिकता का अर्थ पूज्य गुरुदेव के संदर्भ में ठीक वही नहीं है, जो साधारण व्यक्ति का होता है। उनकी आध्यात्मिकता का अर्थ है– अब वे सक्रिय जीवन से कुछ विमुख होकर उन कार्यों को करेंगे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेंगे।

आपको शायद यह बोध न हो, किन्तु गुरुदेव के समक्ष एक विस्तृत कालखण्ड फैला है, और जो ज्योति उन्होंने प्रज्ज्वलित की है, उसकी सुरक्षा का प्रबंध भी उन्हीं को सोचना पड़ रहा है, क्योंकि उन्हें अपने शिष्यों में से इसके लिए समर्थ व्यक्ति नहीं मिल रहे। इसके उपरांत भी हम स्वयं को उनका शिष्य कहते रहे– यह कितना बड़ा विद्रूप है!

कितने अधिक खेद का विषय है, कि आप गुरु जन्मोत्सव जैसे अवसर पर आते भी हैं, तो किसी साधना या सिद्धि अथवा भौतिक लाभ की आकांक्षा के वशीभूत होकर। क्या पूरे वर्ष में एक दिन भी हम निश्छल भाव से स्वयं को गुरु चरणों में, जैसे हैं उसी रूप में सौंप नवीन जन्म की प्रार्थना नहीं कर सकते?

क्योंकि यह आपका ही जन्म दिवस है – पूज्यपाद गुरुदेव पिछले कई वर्षों से इसी तथ्य को दोहराते आ रहे हैं।

इसके उपरांत भी हम आशा संजोए हैं, कि हमारे जीवन में सुख, शांति, वैभव और कुण्डलिनी जागरण जैसी स्थितियां संभव होंगी। हमने आधार तो पुष्ट किया ही नहीं और स्वप्न-महल कई मंजिलों में खड़ा कर दिया! यह ढह जायेगा, यदि निर्मल मन से प्रेम की नींव डाले बिना कुछ बनाया भी गया . . . और प्रेम आयेगा तभी सुख आयेगा, तभी शांति आयेगी, तभी निर्भयता

आध्यात्मिकता और संन्यास का अर्थ यदि पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित हुआ है, तो इसका अर्थ ठीक वही नहीं होता, जो सामान्य व्यक्ति से सम्बन्धित होता है।

उनकी आध्यात्मिकता का अर्थ है – अब पूज्य गुरुदेव सक्रिय जीवन से कुछ विमुख होकर उन कार्यों को करेंगे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेंगे।

आयेगी और तब जाकर कहीं कुण्डलिनी जागरण की भावभूमि बनेगी।

मैंने परम्परागत ढंग से आवाहन नहीं दिया, इसका मुझे खेद है, किन्तु पूज्यपाद गुरुदेव तो पिछले कई वर्षों से बाहें फैलाकर पुकार रहे हैं, उसका ही कितना प्रत्युत्तर उन्हें आपने दिया है?

क्षणिक भावोद्रेकों से कुछ घटित नहीं होगा। यदि आनन्द की लहलहाती फसल उगानी है, तो गहरी जुताई करनी होगी और यही गहरी जुताई मैं इन तीखे शब्दों के माध्यम से करना चाहता हूं। तब उस खेत में जो बीज आप गुरुदेव से प्राप्त करते रहे हैं, उन्हें जमा सकेंगे और यदि तर्क-कुतर्क की खर-पतवार निकालते रहे, साधना की सिंचाई करते रहे, तो निश्चय ही आनन्द की फसल प्राप्त कर सकेंगे।

परम्परागत ढंग से आने और लौट जाने से न तो कुछ घटित हुआ है, न घटित होगा, अतः यदि इस बार आप आयें, तो इसी भाव से आयें।

पूज्यपाद गुरुदेव तो षष्ठीपूर्ति महोत्सव के रूप में संकेत दे ही चुके हैं, कि अब वे सार्वजनिक जीवन से अवकाश ले रहे हैं, किन्तु इन गिने-चुने अवसरों पर भी भावनापूर्वक आ कर आप अभी भी बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि गुरुदेव विश्राम लेना चाहते हैं, अंत करना नहीं।

सत्य तो यह है, कि आपको स्वयं ही बिना किसी निमंत्रण के आना चाहिए। जब कोई शिशु भोलेपन से, बिना किसी निमंत्रण के अपनी मां के पास जाकर चुपचाप खड़ा भर हो जाता है, तो एक ही क्षण में उसके असीम स्नेह का पात्र बन जाता है। जिस दिन शिष्य भी इसी प्रकार गुरुदेव के समीप उपस्थित होना सीख जायेगा, उस दिन बिना कुछ कहे, बिना कुछ मांगे ही बहुत कुछ प्राप्त कर ही लेगा।

शायद आपको यह अतिशयोक्ति लगे, किन्तु यह सत्य भी है, कि भावनाओं की उच्च दशा आ जाने पर फिर सिद्धियां ही उपस्थित होती हैं और विनम्र मनुहार करती हैं, कि साधक उनका वरण कर लें।

— संन्यासियों की मस्ती का यही तो रहस्य है।

यहां तो परम्परा बदल कर गुरु ही आपसे मनुहार कर रहा है, जो उच्चकोटि के साधक हैं वे समझ सकते हैं, कि गुरुदेव का जन्म दिवस किस प्रकार गुरु पूर्णिमा से भी उच्च भावभूमि रखता है। यद्यपि यह रहस्य मुझे उद्घाटित नहीं करना चाहिए था, किन्तु मैं इसको प्रकट किए बिना भी नहीं रह पा रहा, कि पिछले वर्ष षष्ठीपूर्ति के उपरांत पूज्यपाद गुरुदेव ने जिस प्रकार से 'संन्यास' धारण कर अपना अधिकांश समय तप, चिन्तन-मनन में व्यतीत कर दिया है, उसका फल वे इसी अवसर पर अपने शिष्यों को प्रदान करेंगे, क्योंकि यही उनका धर्म है। उन्होंने संन्यास भी आत्म-कल्याणार्थ नहीं अपितु शिष्य-कल्याणार्थ ही धारण किया था, और यूं भी उन्हें संन्यास धारण करने की आवश्यकता ही क्या?

— जो अपने जन्म से ही उसमें अवस्थित हैं, उन्हें किसी आडम्बर की बाध्यता ही नहीं।

काश! आप सब यह समझ सकें, कि पूज्य गुरुदेव जिस तथ्य की ओर बार-बार संकेत करते हैं, कि समय कम है, उसका भावार्थ क्या है?

गुरुदेव तो चित्त स्वरूप हैं। कब वे अपने चित्त से उसी पवित्र भावभूमि पर वापस चले जायेंगे, जिसे सिद्धाश्रम कहा जाता है, यह कोई नहीं जानता। आप इस भ्रम में मत रहिए, कि वे सशरीर ही सिद्धाश्रम जाएंगे। शरीर उनका अनुचर है, वे शरीर के नहीं।

गुरुदेव तो चित्त स्वरूप हैं। कब वे अपने चित्त से उसी पवित्र भावभूमि पर वापस चले जायेंगे, जिसे सिद्धाश्रम कहा जाता है, यह कोई नहीं जानता। आप इस भ्रम में मत रहिए, कि वे सशरीर ही सिद्धाश्रम जाएंगे। शरीर उनका अनुचर है, वे शरीर के नहीं।

इसी से इस पवित्र अवसर पर प्रेम की शीतल फुहार में भीगने के लिए, स्वच्छ, निर्मल और उदात्त होने के लिए आप सभी का हृदय से आवाहन है, क्योंकि —

बस चंद दिनों की ही बात है कि आओ पास बैठें,
फिर वही तो दुनिया में मोहब्बत की नजीर होगी।

(नजीर — ब्राह्मण)

अव्यवस्थित जीवन की प्रत्येक विषम परिस्थितियों को शीघ्र परिवर्तित कर देने का अद्भुत और आश्चर्य भरा अद्वितीय सुरक्षा कवच

विशेष तंत्र रक्षा कवच

- ऋण भार से जब आपकी प्रतिष्ठा चरमरा रही हो।
- जी तोड़ परिश्रम के बाद भी यदि लक्ष्मी रूठ गई हो।
- अपना ही खून (पुत्रादि) खून के प्यासे हो रहे हों।
- सगे सम्बन्धी या मित्र भी मुंह चुराने लगे हों।
- बनते कार्य बिगड़ जाते हों।
- विवाह में बात बन-बनकर बिगड़ जाय।
- शत्रु बाधा रक्तबीज की तरह जब बढ़ने लगी हो।
- व्यर्थ की चिन्ताओं से, मानसिक तनावों से घिर गये हों।

या फिर झगड़े-झंझटों में बार-बार फंस जाना, मुकदमेबाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं . . . उनमें से किस पद्धति से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त करने के लिए संस्थान के योग्य विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्रसिद्ध रक्षा कवच उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास . . .

(न्यौछावर - 11000/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209
306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

साधक साक्षी हैं

जब मैंने महाकालेश्वर के साक्षात दर्शन किए

26 फरवरी 1995 महाशिवरात्रि के उज्जैन शिविर में, वह मेरे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण और आनन्द का दिन था। मैं उस दिन को अपने जीवन में कभी नहीं भूल सकता। गुरुदेव के शिविर में जाने का यह मेरा पहला मौका था। मैं जाऊंगा, ऐसा सोचा भी नहीं था, लेकिन गुरुजी कि महिमा देखो, जो उन्होंने मुझे वहां तक पहुंचा दिया।

जब मैं शिविर में बैठा-बैठा गुरुदेव की वाणी सुन रहा था, तो थोड़ी देर बाद मुझे ऐसा लगा, कि मैं कहीं अन्य लोक में चला गया हूं। जिस मंच पर गुरुदेव बैठे थे, वह मंच पूरे बर्फ के पहाड़ जैसा श्वेत रंग का दिखने लगा। उस पहाड़ पर मैं गुरुदेव को खोजने लगा, लेकिन गुरुदेव कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे थे। अन्त में गुरुदेव से प्रार्थना की, कि आप मुझे दिखाई नहीं दे रहे हैं। तब उसी समय 6-7 सर्प आये और फन फैलाकर खड़े हो गए, उनके बीच में गुरुदेव बैठे थे।

धीरे-धीरे गुरुदेव ज्योतिर्लिंग के रूप में परिवर्तित हो गए। मैं आंख को इधर-उधर करके देखता, लेकिन मुझे वैसा ही दिखाई देता था। यह देखकर मेरा मन आनन्द से गद्‌गद हो गया और अनायास ही आंसू छलकने लगे।

मैंने अभी तक मंदिर में जाकर ज्योतिर्लिंग का दर्शन नहीं किया था, साधना शिविर से उठने के बाद जब ज्योतिर्लिंग का दर्शन किया, तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गई, मेरा सारा शरीर झनझना गया और मेरे मुंह से अनायास निकल गया, कि अरे! यह दृश्य तो मैं अभी साधना शिविर में देखकर ही आ रहा हूं। ये तो बिलकुल वैसे ही हैं, वही सर्प, वही शिवलिंग, सब कुछ वैसा ही। मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी, कि इस मंदिर में ज्योतिर्लिंग ऐसा ही होगा। ये सब गुरुदेव की कृपा है, जो मुझे आज शिवरात्रि पर्व पर साक्षात शिव ने दर्शन दिये, मेरा यह जीवन निश्चित ही सफल हो गया।

महेन्द्र कुमार देवांगन
थाना- राजिम, रायपुर, (म.प्र.)

अग्नि से रक्षा

दिनांक 24.10.95 को ध्यान अवस्था में देखा, कि मेरे ज्योतिष कार्यालय में आग लग चुकी है, जिसको गुरुदेव बुझा रहे हैं और मुझे कह रहे हैं, कि दुकान पर जाकर दुकान संभाल। परन्तु रात्रि का समय था, इसलिए मैं दुकान पर नहीं गया और मैंने गुरुदेव से कहा— जब आप मेरे कार्यालय में उपस्थित हैं, तो मैं क्यों जाऊं? अतः मेरी व दुकान की सुरक्षा तो आप करेंगे ही।

जब मैं दिनांक 25.10.95 को प्रातः 9 बजे दुकान पर पहुंचा, तो प्रत्यक्ष देखा कि दुकान में आग लग चुकी है, कुछ कागज जले पड़े थे व मेरी बैठने की गद्दी का भी कुछ भाग जला हुआ था। इसके अलावा जले हुए

पटाखो व उनके कागज भी अन्दर पड़े थे। पुस्तकें सुरक्षित थीं व किसी भी प्रकार का बड़ा नुकसान मेरा नहीं हुआ।

यह गुरुदेव की ही कृपा है, कि आज मैं अपने कार्यालय में बैठा रोजी-रोटी कमा रहा हूं, वरना उस आग से मेरा कार्यालय बचना अत्यन्त ही मुश्किल था।

पंडित बृजमोहन भृगुशास्त्री
लाइन्स रोड, बारां (राज.)

गुरु कृपा मेरा आधार

हाल ही में हुए नवरात्रि साधना शिविर राजा गार्डन, दिल्ली में मैंने प्रथम बार भाग लिया। शिविर की दूसरी रात जब गुरुजी साधना आदि सम्पन्न करवा कर प्रस्थान कर गए, तो सभी लोग भोजन आदि के लिए चल पड़े।

मैं भी पंडाल के बाहर, जहां बल्ब लगे हुए थे, वहां से गुजर रही थी, कि तभी कुछ हल्का सा धमाका हुआ और कुछ चीजें आकर मुझ पर गिरीं। मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया, पर जब आसपास के लोगों ने पूछा, कि कहीं चोट तो नहीं लगी, तब उन्हीं के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ – **200 वाट का जलता हुआ बल्ब मुझ पर गिर कर फूट गया और कांच के टुकड़े मेरे ऊपर बिखर गये थे।** इसे मैं पूज्य गुरुदेव की कृपा ही कहूंगी, जो मुझे बिलकुल भी चोट नहीं लगी। आखिर गुरुदेव ने अपने इस कथन की पुष्टि की, जो कि लुधियाना शिविर में कहे थे– ''जब तक तुम लोग इस शिविर में हो, कोई गोली भी तुम्हें छू नहीं सकती व मौत तुम्हें ले जा नहीं सकती।''

हे गुरुदेव! मेरी प्रार्थना है, कि आपकी कृपा दृष्टि सदा हम पर ऐसी ही बनी रहे।

कु. सीमा
लाजपत नगर, नई दिल्ली

गुरु कृपा से स्व. पिताजी को मोक्ष प्राप्ति

मैं अपने वर्तमान वातावरण व सामयिक प्रभाव एवं जन सामान्य की भ्रांतियों के कारण ही अपने भाई जो गुरुदेव से जुड़े हैं, की कभी-कभी आलोचना करता था। इस विषय में बिलकुल कोरा ही था।

भाई के आग्रह पर पूज्य गुरुदेव से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पानीपत शिविर में गुरुदेव ने मुझे प्रथम अनुभूति के रूप में विराट स्वरूप दर्शन दिये। मैं आंखें खोल-खोल कर आश्चर्य से देखता रहा। एक दिन मैं गुरु मंत्र का जप कर रहा था, कि अचानक मेरी माला रुकने लगी, मुंह से मंत्र उच्चारण बड़ी मुश्किल से हो रहा था, कि अचानक बिम्बात्मक रूप में ध्यान में पिताजी दिखे और बोले– 'गुरुजी से बात करो, मुझे मोक्ष दिलाओ।'

मैंने मानसिक रूप से पिताजी से कहा– ''मैं बात कर शीघ्र उपाय करूंगा।''

इतना ही कहना था, कि मेरी माला बिलकुल आसानी से पूर्ववत् चलने लगी। मंत्र का उच्चारण सामान्य हो गया। पिताजी का चित्र ले जाकर मैं गुरुदेव से मिला। उन्होंने तुरंत ध्यान लगाकर देखा, कि वे अभी कहां हैं, क्या करना होगा? फिर मोक्ष प्राप्ति यंत्र फोटो में बांधकर रखने को कहा एवं बोले– ''मोक्ष प्राप्त पर तुम्हें स्पष्टानुभूति होगी।''

पत्रिका की 'आजीवन सदस्यता' में मोक्ष प्राप्ति यंत्र उपहार स्वरूप प्राप्त कर गुरुदेव से चित्र पर बंधवा लिया। गुरुदेव ने कुछ समय बाद मिलने को कहा।

एक दिन प्रातः पिताजी स्वप्न में दिखे एवं बोले– ''अब चिंता मत करना, मैं मुक्त हूं।'' गुरुदेव से मिलने पर उन्होंने पूछा– ''कुछ देखा या नहीं। अब तेरे पिताजी मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं। यंत्र को चित्र सहित जल में प्रवाहित कर दे।''

मैंने गुरु मंत्र का जप करते हुए पुष्पांजलि के साथ यंत्र-चित्र यमुना नदी में प्रवाहित कर दिया।

मनोज ताम्रकार
रामकमल निवास, बीना, (म.प्र.)

कालाष्टमी

काल को पूर्णता के साथ बांधकर रखने के लिए श्रेष्ठतम

प्रयोग

काल जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ समाया हुआ है। काल अपनी अनवरत गति से चलता हुआ निस्पृह भाव से समस्त संसार की क्रियाविधि को देखता रहता है। वहीं काल ही मानव की गति का, सांसारिक जीवन का अन्त है, जो इसे नहीं पहिचानता है या इसे अनदेखा करता है, वह स्वयं अपनी प्रगति में बाधक बनने लगता है।

काल को समझना एक अत्यंत दुरुहता का विषय है, काल को पकड़ना कठिन है, लेकिन असम्भव नहीं। काल तो अपने महत्त्व को हर क्षण दर्शाता है और जो इसके महत्त्व को नहीं समझता, वह जीवन की गति को नहीं समझ सकता है। काल के विशेष क्षण को पहिचान कर काल को अपने अनुकूल बना लेने के लिए ही कालाष्टमी पर यह काल बंधन प्रयोग प्रस्तुत है।

काल के महत्त्व को उद्‌भट विद्वान 'दशग्रीव' ने भी स्वीकारा है, समझा है। इसके विषय में एक प्रसिद्ध प्रसंग है, कि जब रावण का अंत समय निकट आ गया, तो श्रीराम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी, कि वह रावण से जाकर काल के ज्ञान को प्राप्त करें।

लक्ष्मण ने राम की

आप अपनी इच्छा से मृत्यु का वरण कर लीजिये, इतना अधिक कष्ट सहन मत करिये।

भीष्म पितामह ने उत्तर दिया— मैं उचित समय की प्रतीक्षा कर रहा हूं, जब उचित समय आयेगा तो मैं स्वयं ही प्राण विसर्जित कर दूंगा।

भीष्म ने महीनों तक बाणों की शय्या पर रहना ज्यादा उचित समझा तथा उचित समय आने पर अपने प्राण त्यागे। इससे यह सिद्ध होता है, कि उस काल में भी काल के अद्वितीय विद्वान थे, और वे काल के महत्त्व को जानते थे।

काल के महत्त्व को तो कोई भी अस्वीकार नहीं कर पाया, चाहे वह कितना ही बड़े से बड़ा ऋषि हो, योगी हो। सबने एकमत से इसे स्वीकारा है। फिर जब इतने उच्चकोटि के ऋषि-मुनि तक इसकी गति को नहीं समझ सके, तो साधारण मनुष्यों को तो इसे समझने में, इसकी गति को पहिचानने में सहस्त्र वर्ष लग सकते हैं।

भगवान शिव का एक स्वरूप 'महाकाल' भी है, जो काल नियंता है, जिसके अधीन है काल की गति . . . काल को आबद्ध करना है, तो महाकाल को सिद्ध करना ही होगा, तभी तो काल पर पूर्णतः नियंत्रण स्थापित हो सकेगा।

आज्ञा मानकर शिष्य भाव से जाकर रावण से प्रार्थना कर उस ज्ञान को पाने की इच्छा व्यक्त की, रावण ने लक्ष्मण को 'काल ज्ञान' समझाया। रावण ने लक्ष्मण को सात पत्ते एक साथ रखने को कहा और बोला, कि जब मैं कहूं तो एक कील से इन सातों पत्तों को बींध देना और रावण ने उचित समय देखकर जब पत्तों को बिंधवाया तो पत्ते क्रम से स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि धातु में परिवर्तित होते गये तथा अंतिम पत्ता पूर्ववत् पत्ता ही रह गया।

रावण ने समझाया, कि लक्ष्मण काल के सौवें हिस्से में भी फर्क आ जाता है। अतः काल का प्रत्येक हिस्सा अपने आप में विशेष महत्त्व रखता है।

रावण ने पूर्णता के साथ लक्ष्मण को इसका ज्ञान दिया, किन्तु स्वयं पर उसे दुःख हुआ, कि वह काल का ज्ञाता होकर भी काल की गति को नहीं समझ पाया और स्वयं उसे ही काल का ग्रास बनना पड़ा।

इसका तो एक अति उत्तम उदाहरण 'महाभारत' में भी है, जब भीष्म पितामह युद्ध में बाणों से पूरी तरह से बिंध गये और रणभूमि में ही गिर गये, तो सबने उनसे प्रार्थना की— हे पितामह! आपको तो इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त है, अतः

काल के प्रभाव को समझना और उसे अपने अनुकूल कर लेना अब भी सम्भव है, इस 'काल बंधन प्रयोग' से। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति काल की गति को समझने लगता है तथा काल को पूर्णता के साथ बांधने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। जिसने काल की गति को थोड़ा-सा भी समझ लिया, वह अपने जीवन में सफल व्यक्तित्व बनता ही है।

काल का चक्र तो निरन्तर गतिशील रहता है, जिसमें आबद्ध होता है, प्रत्येक प्राणी। मानव जीवन की श्रेष्ठता यह है, कि वह काल को अपने अनुरूप बनाये, न कि काल जिस

प्रकार से चलाये उसके अनुसार चले। काल के क्षण को पहिचान कर ही व्यक्ति सफलता के उच्चतम सोपान पर पहुंच सकता है।

प्रत्येक कार्य को करने का एक समय निश्चित है और उसी प्रकार प्रत्येक साधना को करने का एक निश्चित काल होता है, जिस क्षण में सम्बन्धित वह दैवी कृपा प्राप्त होती ही है, जिससे साधक साधना में पूर्णता प्राप्त कर ही लेता है। जब काल स्वयं में अनेक विशेषताओं को समेटे हुए है, तो काल को आबद्ध करने से व्यक्ति स्वयं ही विविध विशेषताओं से युक्त हो जाता है।

— और अब जबकि ऐसा क्षण स्वयं उपस्थित हुआ है, जिसमें काल के स्वामी महाकाल को सिद्ध किया जा सकता है तथा जिन्हें सिद्ध करके साधक काल का ज्ञान प्राप्त कर सकता है और अपने जीवन की समस्याओं, न्यूनताओं को समाप्त कर आने वाली बाधाओं से छुटकारा प्राप्त कर लेता है तथा उचित क्षण को जान कर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। कालाष्टमी पर्व पर यह महत्त्वपूर्ण क्षण उपस्थित हुआ है, जब स्वयं काल को बांधने की प्रक्रिया सम्पन्न की जा सकती है।

'तंत्र' संसार का बड़ा ही रहस्यमय विचित्र एवं चमत्कारिक विषय है। जिसके माध्यम से जीवन को किस प्रकार से संचालित किया जाय? जीवन का मूल तत्त्व क्या है? भौतिक दृष्टि से जीवन को अनुकूल किस प्रकार से बनाया जाय? ज्ञात हो सकता है।

साधना विधि

- ✧ साधना में आवश्यक सामग्री है **'महाकाल यंत्र'**, **'महाकाल गुटिका'** तथा **'हकीक माला'**।
- ✧ यह एक दिवसीय रात्रिकालीन साधना है।
- ✧ इसे आप **10.5.96** को या किसी भी **अष्टमी** को सम्पन्न कर सकते हैं।
- ✧ लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें तथा उस पर महाकाल यंत्र स्थापित करें।
- ✧ यंत्र की दाईं ओर गुटिका स्थापित करें तथा यंत्र और गुटिका का संक्षिप्त पूजन करें।
- ✧ घी का दीपक निरंतर जलते रहना चाहिए।
- ✧ हाथ जोड़कर शिव के महाकाल स्वरूप का ध्यान करें।
- ✧ हकीक माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

ॐ ह्रौं ह्रीं कालतत्वाय फट्

- ✧ प्रयोग समाप्त होने पर भी 21 दिनों तक नित्य एक माला रात्रि के समय घी का दीपक लगा कर मंत्र जप करें तथा गुटिका को धारण करके रखें।
- ✧ 22 वें दिन माला, यंत्र और गुटिका को किसी नदी या नहर में प्रवाहित कर दें या किसी कुंए में डाल दें।

साधना सामग्री न्यौछावर—350/-

फार्म नं0 4 (नियम - 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3. 4.	मुद्रक, प्रकाशक	: श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
5.	सम्पादक का नाम	: नन्दकिशोर श्रीमाली। क्या भारत का नागरिक है? हां।
	पूरा पता	: मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान) 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली -110034, फोन : 011-7182248

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों — कैलाश चन्द्र श्रीमाली।

मैं कैलाश चन्द्र श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूं, कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 31-03-1996 कैलाश चन्द्र श्रीमाली (प्रकाशक)
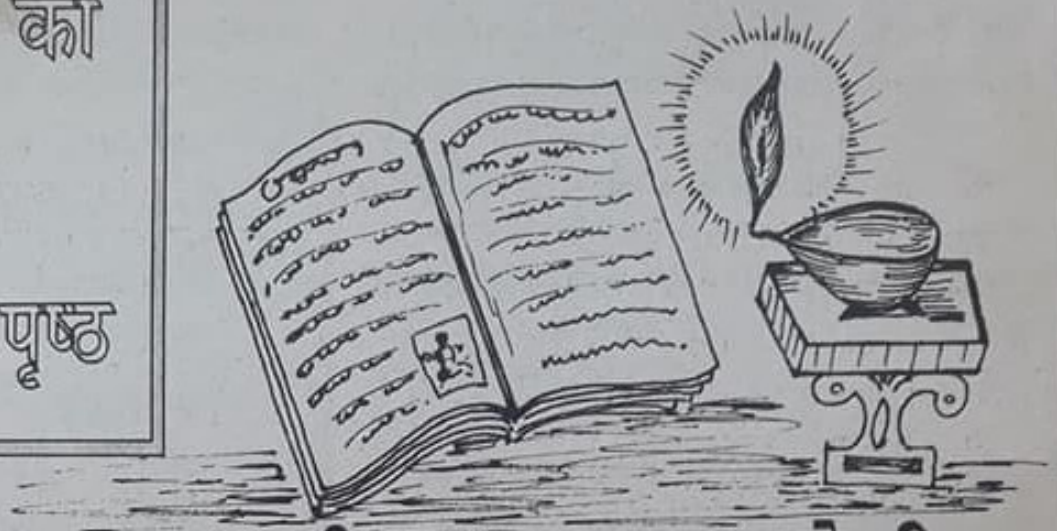
महाचमत्कारी शासन देवी

जैन संस्कृति में प्रत्येक तीर्थंकर के विशेष रूप से सेवक यक्ष-यक्षिणी होते हैं। जिन्हें 'शासन देव' और 'शासन देवी' कहते हैं। ये तीर्थंकर भगवन्तों की अनन्य भक्ति करने वालों की अनेक प्रकार से रक्षा करते हैं, मात्र इतना ही नहीं; ये सब कष्टों का निवारण, सब कामनाओं को पूर्ण भी करते हैं।

चक्रेश्वरी देवी प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ-ऋषभदेव की अधिष्ठात्री शासन देवी हैं। जहां-जहां ऋषभदेव जी का मन्दिर होता है, वहां-वहां इनके शासन देव 'गौमुख', शासन देवी 'चक्रेश्वरी' की स्थापना होती है। यह सोलह विद्यादेवियों में से एक विद्या देवी भी हैं।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव प्रभु की भक्ति करने वालों पर चक्रेश्वरी देवी और गौमुख यक्ष की विशेष कृपा रहती है। 'भक्तामर स्तोत्र' में श्री ऋषभदेव की स्तुति है। इसके प्रभाव से ये स्वयं उपस्थित होकर आराधकों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। इनके साक्षात् दर्शन भी होते रहते हैं। स्वप्न में भी इनके आशीर्वाद से भक्तों को मार्ग दर्शन मिलता है और मनोकामनाएं सफल होती हैं। ऐसे अनेकों प्रसंगों का वर्णन जैन साहित्य में उपलब्ध है। भक्तामर स्तोत्र की कथाओं में भी ऋषभदेव के यक्ष का नाम गौमुख तथा यक्षिणी का नाम चक्रेश्वरी देवी जो 'अप्रतिहतचक्रा'

के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। 'निर्वाण कलिका ग्रंथ' में इनके स्वरूप का वर्णन पाया जाता है —

"श्री ऋषभ प्रभु" के तीर्थ में 'गौमुख' नाम का यक्ष सुवर्ण (पीले वर्ण) वाला, बैल की सवारी वाला, चार भुजाओं वाला है। दाहिने दो हाथों में वरदान और माला, बाएं हाथों में बिजोरा और पाश को धारण करने वाला है।

उन्हीं आदिनाथ (ऋषभदेव) के तीर्थ में 'अप्रतिहतचक्रा' (चक्रेश्वरी) नाम की देवी स्वर्ण (पीले) वर्ण वाली, गरुड़ की सवारी वाली, बारह भुजाओं वाली हैं, इन्होंने अपने दोनों तरफ के ऊपरी चार-चार हाथों में आठ चक्र, नीचे के दाहिने दो हाथों में वरदान तथा बायें दोनों हाथों में फल धारण करने वाली हैं।

भगवती शासन देवी चक्रेश्वरी का महाचमत्कारी धाम

श्री चक्रेश्वरी देवी का महाचमत्कारी ऐतिहासिक प्राचीन जैन भवन पंजाब की वीर भूमि पर सरहिन्द नगर में ऐतिहासिक सिक्खों के गुरुद्वारा 'ज्योतिस्वरूप' के समीप चण्डीगढ़ चूनिया मार्ग पर गांव अत्तेवाली में शोभायमान है।

ऐतिहासिक सूत्रों के—अनुसार महाराजा पृथ्वीराज चौहान के समय में राजस्थान से एक छरी पालित यात्रा संघ हिमाचल प्रदेशांतरगत महाभारतकालीन कांगड़ा जैन तीर्थ की यात्रा को जाते हुए सरहिन्द की इस पावन भूमि पर रात्रि विश्राम के लिए रुका। यह संघ अपने साथ एक बैलगाड़ी में चक्रेश्वरी देवी की पिंडी भी लाया था। कुछ यात्री इसे अपनी कुल देवी भी मानते थे। माता चक्रेश्वरी की भक्ति में यहां संघ ने रात्रि जागरण किया। प्रभु ऋषभदेव तथा भगवती माता के मधुर गीतों में भक्तगण तल्लीन होकर मस्ती से झूम उठे।

प्रातः काल संघ जब आगे के लिए कूच करने लगा तो देवी माता वाली बैलगाड़ी, टस से मस न हुई। बहुत उपाय करने पर भी बैलगाड़ी तिल मात्र भी आगे न बढ़ पायी। आकाश में एकदम प्रकाश हुआ और आकाश- वाणी हुई- 'मेरे भक्तों! मुझे यहीं निवास दो। यह पुण्यभूमि मुझे अतिप्रिय है।'

भगवती के भक्तों ने चक्रेश्वरी की पिंडी को कुछ अनुचरों के संरक्षण में वहीं छोड़ दिया, संघ कांगड़ा तीर्थ की यात्रा के लिये आगे प्रस्थान कर गया। वहां की यात्रा से वापिस लौटकर यहां पर माता का भवन निर्माण कराया। महाप्रभावक चमत्कारों के कारण यह स्थान महातीर्थ बन गया।

उस समय वहां पीने के स्वच्छ पानी का भी अभाव था, संयोगवश भगवती की भक्ति में विभोर होकर एक बाल कन्या ने माता जी से स्वच्छ मीठे पानी के लिए प्रार्थना की, तो क्षणमात्र में उस कन्या के पैरों के मध्य से स्वच्छ और मीठे जल का झरना फूट पड़ा। वही पवित्र झरना आज "अमृत कुंड" के नाम से प्रसिद्ध है। श्रद्धालु भक्तजन अमृत कुंड के पवित्र जल को गंगा जल के समान ग्रहण करके अपने-अपने घरों को ले जाते हैं।

माता जी के चमत्कारों की गाथायें सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। यहां एक विशेष चमत्कारी घटना का उल्लेख करने का मोह-संवरण नहीं कर पा रहा हूं—

सिक्खों के दसवें गुरु 'श्री गोविन्द सिंह जी' के

और तभी आकाशवाणी हुई – जाओ! अपने महाराजा से कहो कि अपना सफेद घोड़ा खुला छोड़ दें। घोड़ा जिस स्थान पर पहुंचकर चक्कर लगाने लगे वही साहबजादों की अन्तिम संस्कार भूमि होगी।

सुपुत्र इसी धरती पर शहीद हुए थे। दीर्घकाल के बाद 1957 में पटियाला के 'महाराज कर्ण सिंह' को स्वप्न में गुरु श्री गोविन्द सिंह जी द्वारा आदेश हुआ, कि वह साहिबजादों की अन्तिम संस्कार भूमि पर एक सुन्दर गुरुद्वारे का निर्माण करें। महाराजा ने अपने राज्याधिकारियों के साथ सरहिन्द पहुंचकर संस्कार भूमि की खोज की। स्थान का पता न मिलने पर महाराजा के सिपाही रात्रि हो जाने तथा थके-मांदे होने के कारण भगवती के भवन के समीप आकर सो गए।

आधी रात के समय आकाश में जोरदार चमक हुई एक सिपाही (जिसके पांव भवन की ओर थे) चौंककर उठ खड़ा हुआ। आकाशवाणी हुई – 'जाओ! अपने महाराजा से कहो, कि अपना सफेद घोड़ा खुला छोड़ दें। घोड़ा जिस स्थान पर पहुंचकर चक्कर लगाने लगे, वही साहिबजादों की अन्तिम संस्कार भूमि होगी।' वैसा ही हुआ और स्थान का पता मिल गया। यह भूमि यहां के 'हाकिम अत्तेखां सुल्तान' की थी।

उसने कहा – 'जितनी जगह चाहिये उतनी जगह सोने की अशरफियों को बिछाकर नाप लें।'

महाराजा के दीवान 'श्री टोडरमल जैन' ने अपने निजी कोष से अशरफियां देकर भूमि खरीद ली। इसी पावन भूमि पर महाराजा ने विशाल गुरुद्वारे का निर्माण कराया। यह गुरुद्वारा 'ज्योतिस्वरूप' के नाम से प्रसिद्ध है।

महाचमत्कारी चक्रेश्वरी माता के भगतों के उद्धारों के उदाहरण

भक्तामर स्तोत्र के रचयिता आचार्य 'मानतुंग सूरि' ने तीर्थंकर ऋषभदेव जी की स्तुति में इस स्तोत्र की रचना उस समय की थी, जब राजा भोज ने आचार्यश्री को बेड़ियों में जकड़कर, बन्दीखाने में बंदकर उसके किवाड़ों में 48 ताले लगा दिये। इस प्रभावक स्तोत्र के प्रभाव से चक्रेश्वरी प्रत्यक्ष हुई और आचार्यश्री को बंधन मुक्त किया।

उज्जयनी में राजा भोज के राज्य में 'हेमराज सेठ' रहता था। एक ईर्ष्यालु की चुगली से राजा ने सेठ को कस कर बंधवा कर कुंए में लटका दिया। सेठ ने श्रद्धापूर्वक भक्तामर का पाठ किया। जिसके प्रभाव से चक्रेश्वरी प्रत्यक्ष हुई। सेठ को बंधन मुक्त करके उत्तम प्रकार के वस्त्रालंकारों से सुसज्जित कर उसे कुंए के निकट एक सुन्दर कमरे में बिठला दिया। उधर चक्रेश्वरी देवी ने रात को राजा को नागपाश में बांध दिया।

आकाशवाणी से देवी के कहने पर राजा ने अपने मंत्री द्वारा सेठ से क्षमायाचना की और उसे बंधन से मुक्त कराने की प्रार्थना की। सेठ ने भक्तामर से पानी को अभिमंत्रित कर राजा को पिलाने के लिए दिया। अभिमन्त्रित पानी पीने से राजा के बंधन एकदम खुल गये। राजा ने आकर अपने अपराध की सेठ से क्षमा मांगी।

❋ ❋ ❋

उज्जयनी नगरी में सुमति नाम का दरिद्र बनिया रहता था। एक बार उसने एक मुनि से दरिद्रता से मुक्त होने का उपाय पूछा। मुनि ने उसे भक्तामर की श्रद्धापूर्वक आराधना करने के लिये कहा। वह नियमपूर्वक आराधना करने लगा। एक बार वह धन कमाने के लिए जहाज से रत्नद्वीप के लिये रवाना हुआ। रास्ते में जहाज डूब गया, सब यात्री डूबे पर सुमति को भक्तामर की आराधना के प्रभाव से चक्रेश्वरी देवी ने अपनी एक दासी देवी द्वारा बचाकर रत्नद्वीप में पहुंचा दिया। देवी ने उसे रत्न भी दिये। सुमति अपने नगर में वापिस आकर भी भक्तामर की आराधना करता रहा तथा धनाढ्यों में शिरोमणि बना। धन का उपयोग दीनोद्धार में करने लगा।

पाटलीपुत्र नगर में 'सुधन' नामक सेठ रहता था। वह भक्तामर की आराधना करता था। उसने भगवान ऋषभदेव का मन्दिर भी बनवाया। वहां का राजा 'भीम' भी सेठ के सत्संग से भक्तामर की आराधना करता।

एक बार उस नगर में एक संन्यासी आया तथा अपने चमत्कारों से जनता को प्रभावित करने लगा।

राजा और सेठ उसके दर्शनार्थ नहीं आये। जिससे द्वेषवश उसने सेठ और राजा के घर पत्थर बरसाने शुरू कर दिये, पर इससे सेठ व राजा विचलित नहीं हुए और दत्तचित्त हो भक्तामर की आराधना करते रहे। आराधना के प्रभाव से 'चक्रेश्वरी देवी' प्रकट हुई। उसने पत्थरों की वर्षा बंद करके पड़े हुए पत्थरों को उठवाकर दोनों घरों को एकदम स्वच्छ करा दिया।

अब संन्यासी पर पत्थरों की वर्षा शुरू हो गई। संन्यासी भयभीत हो उठा, राजा के पास दौड़ा आया और गिड़गिड़ाकर अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा। सेठ के कहने पर राजा ने क्षमा प्रदान की, अब वह संन्यासी भी दत्तचित्त होकर भक्तामर की आराधना करने लगा।

पाटण के राजा 'कुमारपाल' के समय में 'कपर्दी' नाम का एक गरीब व्यक्ति रहता था। उसने 'आचार्य हेमचन्द्र' के उपदेश से भक्तामर स्तोत्र का पाठ करने का नियम लिया।

एक दिन कपर्दी अपने घर के कमरे में बैठा भक्तामर का तन्मय होकर जप कर रहा था, तब उसके कमरे में एकदम प्रकाश हुआ। चक्रेश्वरी देवी प्रत्यक्ष हुई। उसकी दरिद्रता को दूर करने के लिए उसके घर पर कामधेनु गाय भेजी।

कपर्दी ने उसके दूध से 31 कोरे घड़े भर लिये। देवी के प्रभाव से घड़ों में पड़ा दूध सब सोना बन गया।

चक्रेश्वरी देवी दोबारा प्रगट हुई, कपर्दी ने कामधेनु के दूध की खीर से 'साधर्मी वात्सलय' करने का वरदान मांगा। देवी ने तथाऽस्तु कहकर उसकी यह भावना भी पूरी की। देवी की अनुकम्पा से कपर्दी कष्ट मुक्त होकर धन का दीनोद्धार तथा सद्‌कार्यों में उपयोग करने लगा।

ऐसे सैकड़ों ऐतिहासिक, चमत्कारिक कथानक जैन आगमों में भरे पड़े हैं, जब चक्रेश्वरी ने अपने भगतों को अपमार्गों और कष्टों से छुटकारा दिलाया है।

फाग के भीर अबीरनि सों गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
मायकरी मनकी पद्‌माकर ऊपर नाय अबीर की झोरी।
छीन पितम्बर कम्मर तें सु विदा दई मीड़ कपोलन रोरी।
नैन नचाय कई मुसुक्याय लला फिर अइयो खेलन होरी।

फाग का समय है और चारों ओर रंग-बिरंगी छटा बिखरी हुई है, कि अचानक राधा, कान्हा को फुसला कर घर के अन्दर ले जाकर उनके गालों पर जम कर रंग लगाती है, उनका पीताम्बर छीनकर उन्हें रंग से सराबोर कर देती है और विदा करते समय मुस्करा कर कहती है–

''लला! फिर अइयो खेलन होरी।''

देखा जाय, तो यह पर्व है ही हास-परिहास का, हर्ष-उल्लास का; जिसकी प्रतीक्षा तो प्रत्येक को पूरे वर्ष पर्यन्त तक रहती है, फागुन के महीने में बिखरी रंग-बिरंगी अबीर-गुलाल की छटा, रंग भरी पिचकारियां शत-शत स्वरूपों में निखर उठती हैं, इस दिन ऐसा प्रतीत होता है, जैसे सम्पूर्ण प्रकृति ने रसिकता और उन्मत्तता का साकार रूप धारण कर लिया है . . . तभी तो इसके जाते ही इसकी प्रतीक्षा पुनः प्रारम्भ हो जाती है। इस पर्व में तो जन-जन का हृदय इसके विविध रंगों में रंग कर परम आनन्द का अनुभव करता है। बालक से लेकर वृद्ध तक सभी के हृदय में नूतनता का संचार हो जाता है, ज्ञान के बंधन शिथिल हो जाते हैं, इस मदमाते महीने में।

इस रास-रंगमय माह में प्रकृति भी उन्मुक्त हो उठती है, क्योंकि प्रकृति का कण-कण विहँसता प्रतीत होता है, फिर इसके रंग में रंगने को सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे मचल उठते हैं। फागुन के आते ही सम्पूर्ण भू-मण्डल में होली उत्सव की धूम मच जाती है और हर्षमय वातावरण में मान-अभिमान के बंधन टूट जाते हैं, सर्वत्र प्रेममय वातावरण सृजित हो जाता है, ऐसा लगता

इसका आगमन जहां सामान्य जन के लिये राग-रंग का उत्सव है, वहीं यह साधनात्मक दृष्टिकोण से अत्यन्त उपयोगी व अत्यन्त चिन्तनशील भी है। यह साधकों के लिए भी पूर्णता प्रदायक सिद्धि पर्व है। इस पर्व का उपयोग साधक अपनी किसी भी साधना को सम्पन्न करने के लिए कर सकते हैं।

है, कि परिपक्व प्रीति को जगाने और नवल स्नेह के शुभारंभ के लिए ही होली पर्व आया है। सतरंगी रंगों की आभा से जीवन को सराबोर करते इस पर्व को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है — होलीकोत्सव, मदनोत्सव, रसोत्सव, कुसुमोत्सव आदि।

'उत्सव प्रिय हम जनम-जनम के'

कभी किसी कविता की यह लाइन मैंने पढ़ी थी . . . और कालिदास ने भी आर्यों को अपने ग्रंथों में उत्सव प्रिय कहा है। प्राचीन काल में आनन्द व आमोद के साथ प्रत्येक उत्सव को मनाने की प्रथा थी . . .

'थी', ऐसा लिखने के लिए मुझे मजबूर होना पड़ा है, क्योंकि धीरे-धीरे युगीन व्यस्तता के कारण तथा एक दूसरे के प्रति मन में संदेहात्मक विचार पालते रहने के कारण वर्तमान युग में व्यक्ति का अन्तस इतना विषाक्त हो चुका है, कि वह उत्सव-प्रियता की बात को भुला बैठा है। हां! कभी-कभी किसी के मन में पूर्व संस्कार उमड़ पड़ता है, तो वह थोड़ा-बहुत प्रयत्न करता है, कि हम अपनी उत्सव-प्रियता के भाव को न भूलें . . . और भूलना भी नहीं चाहिए, क्योंकि यदि हम उत्सवमय होना भूल जायेंगे, तो मात्र एक ठूंठ बन जायेंगे; एक यंत्र-चलित मानव की तरह बन जायेगें — और ऐसा लाशवत् जीवन-जीना भी कोई जीवन है।

भारत में आर्य युगीन सभ्यता काल में होली पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता रहा है, इस बात के कई साक्ष्य हमें विविध ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं, जिसके द्वारा प्रमुखत: एक बात निखरकर सामने आती है, कि होली ऐसा मधुरिम पर्व है, जब दो शत्रु भी अपनी शत्रुता भूल कर एक-दूसरे से गले मिल जाते थे और रंगों से सराबोर कर देते थे अपने सामने वालों को। यदि आज भी हम चाहें तो अपने उत्सव-प्रियता के बोध को साकार कर सकते हैं।

. . . और यही प्रयास तो पूज्यपाद गुरुदेव निरन्तर कई वर्षों से करते आ रहे हैं, हर वर्ष हम सभी के लिए उत्सव के विविध पर्वों यथा— 'होलिकोत्सव', 'अमृतोत्सव', 'दीपोत्सव', 'वसन्तोत्सव' आदि का आयोजन कर। जिसने भी इन विविध उत्सवों में से एक भी उत्सव में भाग लिया है, उसे अपनी उत्सव-प्रियता का बोध हुआ ही है।

होली का आगमन इतनी मादकता को अपने में समेट कर होता है, जिसका एहसास कर प्रेमी अपनी प्रियतमा को होली खेलने के लिए आमंत्रित करता ही है, तभी तो कृष्ण फाग के आने पर एक नवेली गोपी को

होली खेलने के लिये आवाहित करते हैं –

आयो फागुन मास री,
गोरी खेलियो होरी।
लाज किए नहिं काम सिरेगो,
यह औसर सुख रास री।

होली के रंगीले-रसीले महीने में सबके अधरों पर रस बोल थिरकने लगते हैं, सबके हृदय झूमने लगते हैं, मचलने लगते हैं, आनन्द और मस्ती में डूबने के लिये . . . लेकिन इस आनन्द पर्व पर वही हृदय आनन्द ले सकता है जो जीवित है, जाग्रत है, चैतन्य है।

आप प्रेम करें या साधना करें या जीवन का कोई अन्य कार्य करें; जब तक आप पूर्ण तल्लीनता के साथ उस कार्य में डूब कर उसे नहीं करेंगे, तब तक सफलता मिलना संदिग्ध ही रहता है . . . यदि आप को डूबने की कला सीखना है, तो राधा-कृष्ण के प्रेम को हृदयंगम करने का प्रयास करना ही चाहिए, क्योंकि यह डूब जाने की कला तो अपूर्ण है राधा-कृष्ण के बिना, क्योंकि राधा जब विनम्रता और निर्मलता की रंग-बिरंगी झीनी सी चुनरिया के अवगुंठन से झांकती हैं, तो पूरे ब्रज को सम्मोहित करने वाला कान्हा भी सम्मोहित होकर अपनी सुधि बिसरा बैठता है . . . और फिर बरसता है वह अमृतरस जिसकी परिणति ही है यह 'होलिकोत्सव'।

उत्सव-प्रिय हुआ आनन्द-आनन्द से

इसकी मादकता के रंग में सराबोर होकर जीवन की उन्मुक्तता का अनुभव होता है और जब आनन्द और मस्ती में पांव एक बार थिरकना शुरू करते हैं, तो फिर रुकने का नाम ही नहीं लेते हैं। हृदय में प्रस्फुटन होता है चैतन्यता का, फिर दग्ध हृदय शीतलता का अनुभव करते हैं, होली के रंग में रंगकर।

इसका आगमन जहां सामान्य जन के लिये राग-रंग का उत्सव है, वहीं यह साधनात्मक दृष्टिकोण से अत्यन्त उपयोगी व अत्यन्त चिन्तयशील भी है। यह साधकों के लिए भी पूर्णता प्रदायक सिद्धि पर्व है। इस पर्व का उपयोग साधक अपनी किसी भी साधना को सम्पन्न करने के लिए कर सकते हैं।

तभी तो आप सभी साधकों के लिए आपकी यह पत्रिका अपने पूर्व अंक में विविध साधनाओं को समेट कर आपके समक्ष प्रस्तुत हो चुकी है। अब यह आप पर निर्भर करता है, कि आप अपने जीवन को सम्पन्न और आनन्दयुक्त बनाये रखने के लिए किस साधनात्मक रंग का चुनाव करते हैं।

– आज भी जिसके रंग में रंग कर व्यक्ति स्वयं की सुधि बिसरा बैठता है और एहसास करता है उन्मुक्तता का, जीवन्तता का . . . अग्रसर होता है उस पथ पर जो उसे साधारण नर से मनुष्यत्व की ओर और फिर देवत्व की ओर अग्रसर करता है।
और यही आनन्द ही तो बार-बार कहने को लालायित करता रहा है उन गोपियों को–

"लला! फिर अइयो खेलन होरी"

तुम मृत्यु के कगार पर खड़े हो और थोड़ा सा भी चूंक गए, तो सीधे यमराज की दाढ़ों में फंसे हुए होंगे

शनि

इसमें कोई दो राय नहीं, कि ग्रहों का प्रभाव मनुष्यों तो क्या, देवताओं पर भी पड़ता है और देवता भी उन ग्रहों के प्रभाव से सुख और दुःख को भोगते ही हैं, इसके बाद भी, जबकि वैज्ञानिकों ने प्लूटो, हर्षल, नेपच्यून आदि ग्रहों की खोज की है, मगर उनका प्रभाव मनुष्यों पर कितना पड़ता है, इसकी खोज अभी बाकी है। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु – ये 9 ग्रह माने गए हैं और इन 9 ग्रहों में भी मंगल, राहु और शनि को क्रूर ग्रह माना गया है।

इन क्रूर ग्रहों में भी शनि से ज्यादा भयानक, शनि से ज्यादा दुखदायी, शनि से ज्यादा कष्टदायक और शनि से ज्यादा जीवन को तहस-नहस करने वाला अन्य कोई ग्रह नहीं है। यह ग्रह ऐसा है, जो व्यक्ति को भिखारी बना देता है, करोड़पति के हाथ में भी एल्यूमिनियम का कटोरा थमा देता है और भीख मांगने पर मजबूर कर देता है, क्योंकि शनि अपने आपमें विध्वंसकर्ता, दुष्टता प्रदर्शित करने वाला और जो कुछ चाहे, वह कर गुजरने वाला ग्रह है।

यह एक राशि पर सबसे अधिक समय तक रहता है, इसीलिए इसका नाम शनैश्चर पड़ा है। शनैश्चर का अर्थ होता है– धीरे-धीरे चलने वाला ग्रह।

इस वर्ष 8 फरवरी 1996 को शनि ग्रह 'मीन' राशि पर आ रहा है और मीन राशि पर आकर कुछ लोगों को तो बहुत ही दारुण दुःख, व्यथा, परेशानी, अभाव, कष्ट, बाधा, अड़चन और दरिद्रता प्रदान करेगा ही। मैंने अपने जीवन में बहुत निकटता से लाखों लोगों का अध्ययन किया

है और मैंने देखा है, कि **जब भी शनि ग्रह उनके जीवन में आया है, उनका घर, उनका परिवार, उनका कुटुम्ब और उनका दाम्पत्य जीवन तहस-नहस हो गया है, उनका अर्थिक स्त्रोत समाप्त हो गया है और उनके जीवन में कुछ भी नहीं बचा और एक प्रकार से वे गरीब बनकर दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर हो गए।**

इतिहास इस बात का गवाह है, कि जब **नल** राजा पर शनि का प्रकोप आया, तो उसे दमयन्ती जैसी पतिव्रता पत्नी से हाथ धोना पड़ा, जब **रावण** पर शनि का प्रकोप आया; तो रावण जैसे उच्चकोटि के तांत्रिक और विद्वान का भी पूरा परिवार बरबाद हो गया और वह समाप्त हो गया, यहां तक कि उसकी सोने की लंका भी जलकर राख के ढेर में परिवर्तित हो गई; जब शनि **दशरथ पुत्र राम** पर आया, तो कहां तो राजमुकुट पहनाने की व्यवस्था हो रही थी और कहां उन्हें दर-दर की खाक छानने के लिए और जंगल-जंगल भटकने के लिए मजबूर हो जाना पड़ा, पत्नी से बिछोह सहन करना पड़ा, शत्रुओं के हाथों में पत्नी 12 साल उपेक्षित सी पड़ी रही और एक प्रकार से देखा जाय, तो राम का पूरा यौवनकाल उस शनि के प्रभाव से बरबाद हो गया; जब **श्रीकृष्ण** पर शनि का प्रभाव आया, तो उन्हें मथुरा के राज्य को छोड़ करके, सुदूर अंचलों में छुप करके रहना पड़ा और रणछोड़ जैसा शब्द अपने जीवन में लगाना पड़ा।

ये तो बहुत थोड़े से उदाहरण हैं। ऐसे तो हजारों उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं, कि जब-जब भी व्यक्ति के जीवन में शनि का प्रभाव आया, तब-तब व्यक्ति बरबाद ही हुआ, सम्पन्न नहीं बना; उपेक्षित ही रहा, उन्नति नहीं कर पाया; भिखारी ही हुआ, सम्पन्न नहीं हुआ; समाप्त ही हुआ, जीवन की श्रेष्ठता और उच्चता को स्पर्श नहीं कर पाया।

इसलिए कहा गया है, कि मूर्ख व्यक्ति ही शनि की उपेक्षा करते हैं, बुद्धिमान व्यक्ति समय से पहले ही उस शनि के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं और शनि का प्रभाव समाप्त कर लेते हैं, अन्यथा जो कुछ एक बार नष्ट हो गया, उसको वापिस प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि पुत्र की मृत्यु हो गई, तो हम करोड़ों रुपये खर्च करके भी पुत्र को प्राप्त नहीं कर सकते; यदि हम दरिद्री हो गए, तो करोड़ों रुपये खर्च करके भी समाज में वापिस वह सम्माननीय स्थान प्राप्त नहीं कर सकते; यदि हम बीमार और अपाहिज हो गए, तो चाह कर भी हम जीवन का आनन्द नहीं ले सकते; यदि हम एक्सीडेंट में घायल या दुर्घटनाग्रस्त हो गए, तो करोड़ों रुपये ख़र्च करके भी वापिस स्वस्थ और सामान्य मनुष्य की तरह जीवन-यापन नहीं कर सकते – और ऐसे ही दुष्प्रभाव शनि मनुष्य के जीवन में डालता है।

इसलिए जब-जब भी शनि एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तित होता है, तब-तब विद्वानों, उच्चकोटि के व्यक्तियों और लोगों के मन में भय समा जाता है और वे उसका समाधान करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं। उच्चकोटि के व्यक्तित्व से या इससे सम्बन्धित जो जानकार हैं, उनसे इस शनि ग्रह की शांति के लिए पूजन सम्पन्न करवा लेते हैं।

मूलतः शनि की 2 समयावधियां हैं –

- एक बार तो ढाई वर्ष के लिए शनि अपना दुष्प्रभाव दिखलाता है और फिर शनि जब अष्टम में होता है, तो भी ढाई वर्ष तक उस व्यक्ति को दारुण दुःख प्रदान करता है।
- जब शनि व्यक्ति की नाम राशि पर आता है, तो साढ़े सात वर्ष तक उसकी जिन्दगी को तहस-नहस कर डालता है।

इसलिए इस शनि के प्रभाव को सामान्य समझ करके रुक जाना अपने आपमें मूर्खता और न्यूनता है। आदमी को चाहिए कि उससे पहले ही उसका समाधान कर ले और उस शनि ग्रह की शांति के लिए उपाय सम्पन्न कर ले।

इस वर्ष 8 फरवरी 96 से मीन राशि पर शनि आ रहा है। इसका तात्पर्य यह हुआ, कि जो 'सिंह' राशि से सम्बन्धित व्यक्ति हैं, उनको ढाई वर्ष तक आने वाले समय में घोर कष्ट, व्याधि, दुःख, बीमारी, एक्सीडेंट, न्यूनता, गरीबी और कष्ट भोगने पड़ेंगे।

ठीक इसी प्रकार जिनकी 'धनु' राशि है, उनको भी ढाई वर्ष तक इसी प्रकार विविध तकलीफों से गुजरना पड़ेगा और जिन व्यक्तियों की मीन राशि है, उनको साढ़े सात वर्ष तक इस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि जब तक शनि कुम्भ, मेष और मीन राशि पर रहेगा, तब तक शनि (जैसा कि बताया, एक राशि पर शनि ढाई वर्ष तक रहता है, इसलिए तीन राशियों से सम्बन्धित होने की वजह से साढ़े सात वर्ष तक रहेगा, इसको साढ़े साती कहा जाता है।) पूर्ण रूप से दुखदायी ही रहेगा।

प्रश्न यह उठता है, कि क्या शनि का मंत्र जप या पूजा करने से शनि के दुष्प्रभावों की समाप्ति हो जाती है?

इस सम्बन्ध में वराहमिहिर और अन्य ज्योतिषियों की राय है, कि ऐसा सम्भव है। मगर मेरा अनुभव यह रहा है, कि इस प्रकार के व्यक्तियों को चाहिए, कि वे तांत्रोक्त प्रक्रिया से या मांत्रोक्त प्रक्रिया से पूरे ढाई वर्ष तक या साढ़े सात वर्ष तक पूर्ण शनि मंत्र सिद्ध **'पूर्ण तंत्र सिद्ध दान खंडोक्त शनि यंत्र'** धारण करना ही चाहिए और हो सके, तो पांच मिनट तक शनि का मंत्र जप करना चाहिए, इससे शनि का प्रभाव 99% समाप्त हो जाता है, केवल 1% प्रभाव रहता है, वह लगभग नगण्य सा है।

इस बार जब शनि अपनी राशि परवर्तन कर रहा है, तो संक्षेप में मैं प्रत्येक राशि से सम्बन्धित स्पष्टीकरण कर रहा हूं, कि किन-किन राशियों को यह शनि किस प्रकार तकलीफ देगा–

मेष : (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

जिनकी मेष राशि है, उन पर साढ़े साती का प्रभाव शुरु हो गया है और ये शनि उनके जीवन को सत्यानाश और बरबाद करने के लिए अग्रगण्य होगा। इसलिए इस शनि की शांति तो करना ही चाहिए। चाहे घर के प्रमुख व्यक्ति के जीवन में आ रहा हो, चाहे उनकी पत्नी के जीवन में आ रहा हो, चाहे उनके पुत्र के जीवन में आ रहा हो; क्योंकि उन सबका प्रभाव तो उस व्यक्ति को झेलना ही होगा। यदि पत्नी बीमार होगी, तब भी हम तकलीफ पायेंगे; यदि पति पर तकलीफ होगी, तो भी हम व्यथित होंगे, परेशान होंगे, बाधाग्रस्त होंगे; पुत्र पर होगा, तब भी वह अपने आपमें पथभ्रष्ट होकर आपके जीवनकाल को एक प्रकार से बरबाद सा कर देगा। इसलिए मेष राशि वालों को चाहिए, कि साढ़े साती के भाव को तुरन्त शान्त करें।

वृषभ : (इ, उ, ऐ, ओ, बा, बी, बु, बे, बो)

वृषभ राशि वालों को इस शनि के प्रभाव से शत्रु का भय बराबर बना रहेगा और किसी भी समय उनकी जान को खतरा हो सकता है या अकारण शत्रु उन पर हमला कर सकते हैं, शत्रु इन ढाई वर्षों में हानि जरूर पहुंचायेंगे, इसलिए शत्रु भय को समाप्त करना वृषभ राशि वालों के लिए आवश्यक है।

मिथुन : (का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मिथुन राशि वालों के लिए शनि का परिवर्तन गंभीर बीमारी का सूचक है। उनको कोई पुरानी बीमारी उभर जायेगी या कोई ऐसी बीमारी होगी, जो जीवन भर तकलीफदायक हो सकती है, विशेष रूप से यह ह्रदय की बीमारी, दमा, मूत्राशय से सम्बन्धित तकलीफ या आंखों की बीमारी से सम्बन्धित होगी और यह बीमारी आगे पूरे जीवन भर जानलेवा साबित होगी। इसलिए मिथुन राशि वालों के लिए आने वाली बीमारियों और कष्टों से मुक्ति पाने के लिए शनि की शांति सम्पन्न करवा लेनी चाहिए।

कर्क : (ही, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो)

कर्क राशि वालों के लिए शनि का परिवर्तन मृत्यु के समान दुखदायी है। उनके लिए प्रत्येक दिन दुखदायक, कष्टदायक, अपमानजनक, ऋण देने वाला, व्यापार को समाप्त करने वाला और परेशानी युक्त है। इसलिए इन व्यक्तियों को समय रहते ही सावधान हो जाना आवश्यक है।

सिंह : (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंह राशि वालों के लिए ढाई साल की पनौती प्रारम्भ हुई है और उनके लिए यह सबसे ज्यादा नुकसानदायक है। एक प्रकार से देखा जाय, तो यह शनि इन ढाई वर्षों में राजा से रंक या गरीब बनाने में सहायक होगा और चारों तरफ से उनको राजकीय बाधाओं की परेशानियों को झेलना पड़ेगा जो अत्यन्त तकलीफदायक होगा और व्यक्ति इस प्रकार की समस्याओं में उलझ जायेंगे, कि वे चाहते हुए भी इस समस्या से निकल नहीं पायेंगे। इसलिए सिंह राशिवालों को तो तुरंत इस पर ध्यान देना चाहिए और अपने आपमें पहले से ही सावधान हो जाना चाहिए।

कन्या : (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

कन्या राशि वालों के लिए शनि का परिवर्तन घर में किसी जवान व्यक्ति की मृत्यु का सूचक है, वह चाहे पुत्र हो सकता है, चाहे पत्नी हो सकती है, चाहे कोई बहुत ही प्रिय आत्मीय स्वजन हो सकता है। इसलिए यह शनि उनके लिए परेशानी और अपूर्णनीय क्षति के समान ही है। इसलिए इस शनि के लिए उनको चाहिए, कि वह पहले से ही इस

प्रकार की व्यवस्था कर लें, जिससे कि घर में किसी की मृत्यु नहीं हो और घर में किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं हो।

तुला : (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

तुला राशि वालों के लिए यह शनि आर्थिक दिवालियापन का ही सूचक है। वह चाहे व्यापार कितना ही उच्चकोटि का हो, मगर धीरे-धीरे वह दिवालियापन की ओर ही अग्रसर होगा, कर्ज बढ़ेगा, कष्ट होंगे, व्यापार में बाधाएं आयेंगी, हड़ताल होंगे, दुकान बंद सी हो जायेंगी, शत्रु बढ़ जायेंगे और अकारण समस्याएं पैदा हो जायेंगी।

वृश्चिक : (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह शनि सभी दृष्टियों से दुःखदायक है, खासकर आर्थिक दृष्टियों से; पारिवारिक दृष्टि से भी यह अत्यन्त परेशानी पूर्ण है। इसलिए वृश्चिक राशि वालों को चाहिए, कि समय रहते ही उन्हें इस दशा के समापन के लिए 'शनि यंत्र' को धारण कर लेना चाहिए, जिससे कि शनि का दुष्प्रभाव मिटाया जा सके।

धनु : (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

धनु राशि वालों के लिए भी अढ़ैया या ढाई वर्ष के लिए पनौती है, अन्य राशियों की अपेक्षा ज्यादा तकलीफ देने वाला है। इस राशि वालों के लिए यह घोर बीमारी, कष्ट, पीड़ा, घर में कलह, पारिवारिक मतभेद और सभी प्रकार से समस्याएं प्रदान करने वाला है, वह चाहे पुरुष हो, वह चाहे स्त्री हो अथवा बालक या बालिका हो; धनु राशि जिनकी भी है, उनके लिए अगले ढाई वर्ष सभी दृष्टियों से दुःखदायक, परेशानी पूर्ण और घोर कष्टदायक हैं।

मकर : (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

मकर राशि वालों के लिए इस शनि के दुष्प्रभाव से घर में राजकीय अड़चन आयेगी, बाधाएं आयेंगी और मानसिक तनाव इतना बढ़ जायेगा, कि वह चारों तरफ भटकता ही फिरेगा, उनको कहीं पर भी किसी प्रकार की शांति नहीं मिल सकती। इसलिए मकर राशि वालों को चाहिए, कि वे पहले से ही इस सम्बन्ध में सावधान और सतर्क हो जाएं।

कुम्भ : (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

कुम्भ राशि वालों के लिए साढ़े साती का प्रारम्भ हो चुका है। इसलिए सबसे ज्यादा दुःखग्रस्त कुम्भ राशि वालों को और मीन राशि वालों को होना पड़ेगा। कुम्भ राशि वालों को चाहिए, कि शनि के दुष्प्रभाव को मिटाने में तत्परता बरतें और यथासंभव जल्दी से जल्दी इस समस्या का समाधान प्राप्त कर लें, क्योंकि उनके जीवन में साढ़े साती का प्रारम्भ हो चुका है, जो सभी दृष्टियों से विनाश का कारक है, हानिकारक है, तकलीफदायक है।

मीन : (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची)

जैसा कि मैंने बताया, कि मीन राशि पर 8 फरवरी को शनि आ रहा है और यह शनि मीन राशि पर आते ही कुछ ही दिनों में उनके जीवन में इतनी अधिक बाधाएं, कठिनाइयां, परेशानियां, अड़चनें पैदा कर देगा, कि वह चारों तरफ भ्रमित सा हो जायेगा और जो कुछ है, वह धीरे-धीरे कर्ज में डूबता हुआ . . . एक दृष्टि से देखा जाय, तो हाथ में भीख का कटोरा आ जायेगा। इसलिए मीन राशि वालों को सबसे ज्यादा सावधान होने की जरूरत है।

ऊपर मैंने बारह राशियों का वर्णन किया है और बताया है, कि किन-किन राशि वालों को किस-किस प्रकार से इस बार शनि के परिवर्तन से नुकसान हो सकता है।

प्रश्न उठता है, कि क्या किसी को शनि अनुकूल होता ही नहीं?

शनि अनुकूल होता तो है, मगर जब तक हम शनि से सम्बन्धित मंत्र जप या यंत्र या शनि ग्रह दोष निवारण नहीं कर लें, तब तक अनुकूलता नहीं प्राप्त हो सकती, क्योंकि सांप तो काटेगा ही, चाहे हम पालें या पोसें या दूध पिलायें, सांप कभी भी अच्छा और गहरा मित्र नहीं बन सकता, ठीक उसी प्रकार से शनि कभी अनुकूलता दे ही नहीं सकता, देगा तो दुःख और परेशानी, कष्ट और पीड़ा, बाधा और अड़चन ही देगा, इसीलिए मैंने ऊपर प्रत्येक राशि वालों के लिए जो-जो कष्ट, समस्याएं, बाधाएं, अड़चनें निकट भविष्य में आने वाली हैं, उनका उपाय वर्णन किया है।

अगला प्रश्न यह उठता है, कि इसके लिए क्या करना चाहिए?

❋ मेरे अनुभव में यह रहा है, कि यदि शनि परिवर्तित होता है या एक राशि से दूसरे राशि पर जाता है, तो पहले

तो तुरन्त प्रत्येक प्रभावित राशि वाले व्यक्तियों को '**शनि शांति प्रयोग**' सम्पन्न कर लेना चाहिए। इस प्रयोग के लिए तीन प्रकार की सामग्रीयों की आवश्यकता होती है – **1. पूर्ण तंत्र सिद्ध दान खंडोक्त शनि यंत्र 2. शनि शांति माला 3. शनि उपद्रव शांति सामग्री।** इसमें किसी प्रकार की न्यूनता या आलस्य बरतनी ही नहीं चाहिए। यह उसका सबसे पहला कर्त्तव्य है, सबसे पहला धर्म है, जीवन का सबसे पहला अभिप्राय है। बाकी सारे कार्य गौण हैं, यह जीवन का सबसे आवश्यक तथ्य व तत्त्व है।

- दूसरा उपाय यह है, कि **इस प्रयोग के साथ** यदि व्यक्ति चाहे तो शनिवार के दिन शनि का दान लेने वाला जो व्यक्ति हो, उसको काली वस्तुओं का दान देना चाहिए, जैसे– काला कपड़ा, छाता, तिल, जूते, चमड़े की बनी हुई वस्तु। इस प्रकार की वस्तुओं का दान शनिवार के दिन यथासम्भव करना चाहिए, शास्त्रों में लिखा है, कि सोलह शनिवार तक ऐसा करना चाहिए। यह एक छोटा सा उपाय है।
- तीसरा, मंत्र – इसके लिए व्यक्ति स्वयं अपने सामने बाजोट पर काला कपड़ा बिछाकर **पूर्ण तंत्र सिद्ध दान खंडोक्त शनि यंत्र** स्थापित करें तथा यंत्र की बांयी ओर '**शनि उपद्रव शांति सामग्री**' को भी स्थापित कर दें। काला तिल चढ़ायें तथा **शनि शांति माला** से नित्य उन्नीस माला मंत्र जप 19 दिन तक करें–

मंत्र

।। शं शनिश्चराय नमः।।

19 दिन के बाद पूर्ण तंत्र सिद्ध दान खंडोक्त शनि यंत्र को काले धागे में पिरोकर गले में धारण कर ले, इसे ढाई वर्ष तक धारण करें। माला तथा सामग्री को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

ऊपर मैंने प्रयोग के तीनों चरण स्पष्ट किये हैं। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और कारगर विधि दानखंडोक्त शनि यंत्र धारण करना है, क्योंकि इससे 99% समस्याओं का समाधान होता ही है, हर समय यह यंत्र आपकी देह से लगा हुआ रहेगा जिसके कारण शरीर से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की व्याधि, तकलीफ, बाधा, अड़चन, कठिनाई, भय, मृत्यु सम कष्ट या पारिवारिक व्याधि समाप्त होगी, क्योंकि यह यंत्र बराबर आपके शरीर से लगा हुआ रहता है।

इसके साथ ही साथ हमें यथासम्भव शनि से सम्बन्धित दान भी देना चाहिए और शनि से सम्बन्धित मंत्र जप भी करना चाहिए। कोशिश यही होनी चाहिए, कि व्यक्ति स्वयं शनि से सम्बन्धित मंत्र का जप करे और स्वयं ही दान दे। नौकर से दान दिलवा देना या पंडित के द्वारा शनि मंत्र का जप करा देना ज्यादा अनुकूल नहीं है। इसकी अपेक्षा यदि वह स्वयं शनि मंत्र का जप करता है या स्वयं शनि का दान करता है, तो वह अनुकूल व श्रेष्ठ है।

ऊपर मैंने शनि से सम्बन्धित विवेचन किया है – और वास्तव में शनि का प्रभाव ऐसा है, जैसे व्यक्ति यमराज की दाढ़ों में फंसा हुआ छटपटा रहा हो और किसी भी समय यमराज दाढ़ों के तले मनुष्य को कुचल कर समाप्त कर दे, ठीक ऐसी स्थिति इस समय शनि की है, जो कि 8 फरवरी 1996 से प्रारम्भ हो रही है। इसलिए फरवरी तक या मार्च के प्रथम सप्ताह तक या ज्यादा से ज्यादा अप्रैल के अंत तक शनि से सम्बन्धित इस यंत्र को धारण कर लेना चाहिए।

यों शनि का जब समय प्रारम्भ हो, तो उससे तीन महीने के अन्दर-अन्दर यथासम्भव जल्दी से जल्दी शनि से सम्बन्धित यंत्र धारण कर ही लेना चाहिए, जिससे कि प्रारम्भ में ही शनि के दुष्प्रभाव को मिटाया जा सके और जीवन में अनुकूलता प्राप्त हो सके।

मुझे विश्वास है, आप इस लेख की पंक्तियों को सामान्य स्तर से नहीं लेंगे, इस पर गौर करेंगे, क्योंकि बुद्धिमान व्यक्ति समय से पहले ही उपाय कर लेता है, तभी वह जीवन में बुद्धिमान कहलाता है। मुझे विश्वास है, कि आप शनि से सम्बन्धित इन दुष्प्रभावों को समाप्त करने में स्वयं समर्थ हो सकेंगे और यथासम्भव खुद के लिए, पत्नी के लिए, पुत्र के लिए या सबके लिए शनि से सम्बन्धित उपाय कर लेंगे, जिससे कि आपके जीवन में किसी भी प्रकार की तकलीफ, व्याधि, कष्ट, पीड़ा, अकाल मृत्यु, राजकीय बाधायें न आयें, ऐसी ही मैं उम्मीद करता हूं।

– दिव्य चक्षु

साधना सामग्री न्यौछावर – 300/-

जेहि सुनि मन न अघायो

पूज्य गुरुदेव द्वारा "गुरुधाम" (दिल्ली) में सम्पन्न साधनायें

1. ऐश्वर्य महालक्ष्मी प्रयोग
2. बगलामुखी प्रयोग
3. गुरु हृदयस्थ धारण प्रयोग
4. तारा महाविद्या साधना
5. षोडशी त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग
6. महाकाली-मातंगी प्रयोग
7. बाला त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग
8. काल भैरव सिद्धि
9. अनंग सिद्धि प्रयोग
10. महाकाल प्रयोग
11. हनुमान साधना
12. नाभिदर्शना अप्सरा प्रयोग

नवीन भजन श्रृंखला

★ संगीत सरिता
★ कान्हा
★ भजन प्रभात
★ भजन सौरभ
★ प्रीत पायल

नवीनतम कैसेट

★ अमोघ साबर साधनाएं 96
★ पत्रिका पर विशेष– "होली-नवरात्रि विशेषांक-96"
★ षोडशोपचार गुरु पूजन

विशेष दिवसों में की गई साधना-आराधना व पूजन दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलता है

"राजयोग दीक्षा शिविर 96 दिल्ली"

जीवन की पूर्णता योगी की तरह निर्लिप्त होते हुए राजा की तरह वैभव पूर्ण जीवन व्यतीत करने में है . . . एक ऐसी दीक्षा जिसके माध्यम से पूरा का पूरा जीवन बदल जाता है और वह राजा जनक के समान पूर्ण भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में सफल होता है, पूरी विधि कैसेट में सुरक्षित अद्वितीय कैसेट आने वाली पीढ़ियों के लिए संग्रहित . . .

"दुर्गार्चन विधान"

नवरात्रि के पूरे नौ दिनों में किसी भी दिन इन प्रयोगों को सम्पन्न कर लें, तो साधक की मनोकामना पूरी होती ही है, इसमें संदेह नहीं; साधना के क्रियात्मक पक्ष को उजागर करती दुर्लभ कैसेट।

मूल्य : 30/- (कैसेट सीमित संख्या में ही उपलब्ध है)

वीडियो कैसेट

★ नवरात्रि 1995
★ कौस्तुभ जयन्ति 1995
★ शिव पूजन
★ कुण्डलिनी
★ शक्तिपात
★ हिप्नोटिज्म रहस्य
★ साधना, सिद्धि एवं सफलता
★ सिद्धाश्रम
★ पाशुपतास्त्रेय प्रयोग
★ अक्षय पात्र साधना
★ तंत्र के गोपनीय रहस्य
★ लक्ष्मी मेरी चेरी
★ मन मयूर नाचे
★ जीवन पग-पग साधना

पूज्य गुरुदेव की वाणी में नवीनतम कैसेट्स (जो नये रूप में अभी-अभी तैयार हुई हैं)

पूज्य गुरुदेव की वाणी में साधना के एक-एक रहस्य को उजागर करती ये अद्वितीय कैसेट्स . . . जिनके माध्यम से हजारों साधकों ने साधना में सफलता प्राप्त की है . . . यह मात्र कैसेट ही नहीं, आपके जीवन की धरोहर हैं, आने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर हैं।

सेट 1 : ★ विशेष गुरु पूजन ★ षोडशोपचार गुरु पूजन ★ गुरु वाणी ★ गुरु हमारी जाति है ★ सांस-सांस में गुरु बसे ★ गुरु बिन रह्यो न जाय

सेट 2 : ★ सिद्धि और सफलता ★ शिष्यता : जीवन सौन्दर्य ★ गुरु-शिष्य: सफलता की पूर्णता ★ गुरु : जीवन का महोत्सव ★ गुरु : साधना का मूल रहस्य

ऑडियो प्रति कैसेट : 30/-, वीडियो प्रति कैसेट : 200/-

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

साधना के मानसरोवर में गुरुदेव के साथ यात्रा मां जगदम्बा से साक्षात्कार कर एकाकार होने के लिए . . .
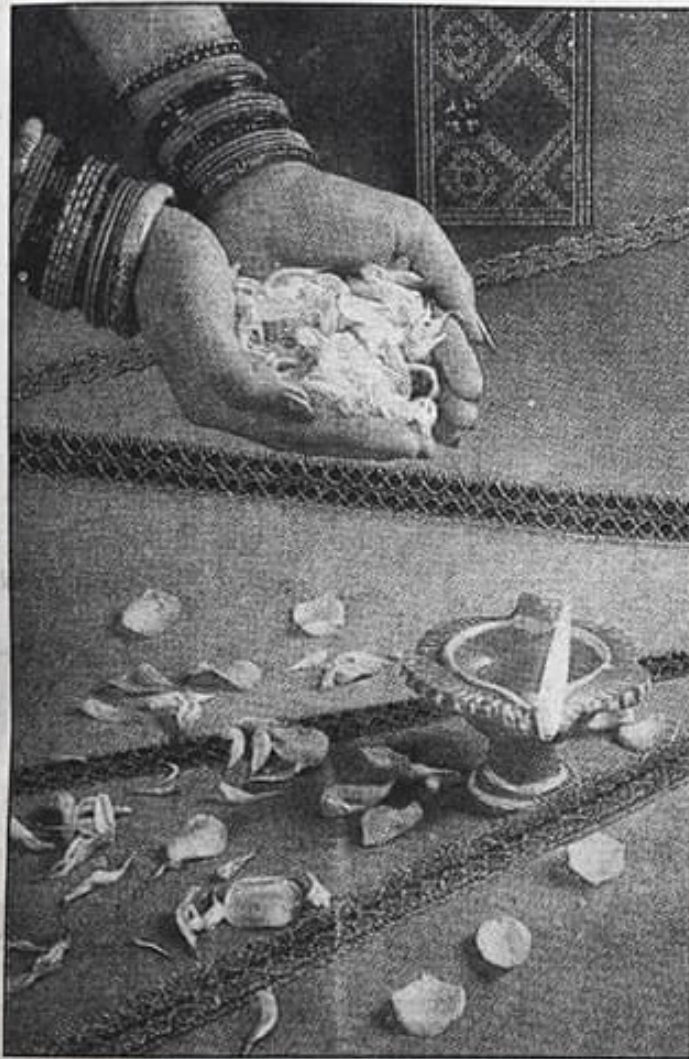
शिष्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए ही तो गुरु अपने शिष्य को कितनी ही बार साथ-साथ ले चलने को तत्पर होते हैं और वह भी मात्र एक ही आशा पर – जब शिष्य पूर्णता प्राप्त कर लेगा, तब वह अन्य दु:खी व कष्टों से पीड़ित लोगों को अपनी साधनाओं से लाभ प्रदान कर सकेगा।

गुरु स्वहित चिन्तन के लिए नहीं सोचता, गुरु का सारा चिन्तन, प्रत्येक प्रयास अपने शिष्य के हितार्थ ही होता है, लेकिन यह प्रयास तभी सार्थक हो सकेगा, जब शिष्य भी गुरु के साथ चलें।

पूज्य गुरुदेव को विश्वास है, कि ''मेरे आत्मज, जो शिष्य शब्दों से सम्बोधित तो होते हैं, किन्तु यथार्थत: वे मेरे आत्मजात पुत्र हैं, वे अवश्य ही आयेंगे जब भी मैं उनको पुकारूंगा और वे मेरे साथ साधना के मानसरोवर, की यात्रा अवश्य ही सम्पन्न करेंगे।

प्राय: साधना के महत्त्वपूर्ण अवसर उपस्थित होते ही रहते हैं, जिसके फलस्वरूप अनेक साधना शिविर सम्पन्न हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे, पर उनमें और इस बार नवरात्रि के शिविर में एक विशेष प्रकार की विभिन्नता है – यह शिविर एक अपूर्व अवसर लेकर उपस्थित हो रहा है, जिस अवसर पर आप यात्रा कर उस जगह पहुंच सकेंगे, जहां पहुंचने के लिए वर्षों कठोर तपस्यारत रहते हैं – ऋषि, महर्षि और मुनिजन।

– और यह अवसर आप चूकना नहीं चाहेंगे। लेकिन ऐसा तभी संभव हो सकता है, जब आप आयेंगे, उपस्थित होंगे नवरात्रि के अवसर पर, जो इस वर्ष अपने ही घर, अपने ही धाम, अपने ही आश्रम 'कराला' में सम्पन्न होने जा रहा है, अपने आश्रम का अपनत्व ही कुछ और होता है, क्योंकि अपना है, हमारा है।

नई दिल्ली से पंजाबी बाग के लिए बहुत सी बसें हैं, पंजाबी बाग से कराला जाने के लिए बस नं0 : 915, 948 और 979 जाती हैं। पुरानी दिल्ली से कराला जाने के लिए बस नं0 : 114, 174, 921, 901 जाती हैं। ये बसें दिल्ली के प्रत्येक स्थान से कराला पहुंचती हैं।

विशेष जानकारी के लिए फोन : 011-7182248 या 7196700 से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं, हम दिल्ली सिद्धाश्रम साधक परिवार के सभी लोग आपके स्वागत के लिए चौबीसों घण्टें प्रस्तुत हैं।

. . . और मुझे विश्वास है, कि गुरुदेव के आत्मजात पुत्र आयेंगे ही।

पूज्य गुरुदेव

यदि एक विहंगम दृष्टि डाली जाय वर्तमान युग पर, तो स्पष्ट होगा कि लोगों की रुचि भौतिक संसाधनों से थोड़ा हटकर पुनः अपनी प्राचीन विरासत 'साधनाओं' की ओर बढ़ने लगी है, क्योंकि अब वे समझने लगे हैं, कि उनकी समस्या का पूर्ण हल भौतिकता से नहीं, साधनाओं से सम्भव है। जिसके फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति किसी भी शिविर को छोड़ना नहीं चाहता।

आप सभी अच्छी तरह समझ चुके हैं, कि गुरुदेव हर शिविर को अद्वितीय बना रहे हैं, हर शिविर में विभिन्न दुर्लभ प्रयोग सम्पन्न करवा रहे हैं, जिससे कि उनके आत्मज अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गर्व से सिर उठा कर चल सकें।

इस उद्बोधन के पीछे निश्चय ही पूज्यश्री का कोई विशेष चिन्तन होगा, तभी तो इस वर्ष नवरात्रि शिविर को गुरुदेव ने "साधना के मानसरोवर" की संज्ञा दी है, वे अपने समस्त पुत्रों को साथ ले कर यह यात्रा करना चाहते हैं, क्योंकि यह यात्रा ऐसे अवसर पर प्रारम्भ होगी, जिसके द्वारा हम उन साधनात्मक ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकेंगे, जिससे उच्चकोटि के योगियों की श्रेणी में स्वतः आ जायेगें।

इस यात्रा में पूज्य गुरुदेव आपको अकेले नहीं भेजेंगे, न ही आपको नाव में बिठा देंगे, वरन इस बार अपनी ही नाव में आप सबको अपने साथ बिठाकर यात्रा करेंगे।

— लेकिन इसके लिए आपको विश्वास करना पड़ेगा, समर्पित होना पड़ेगा . . . अधूरे विश्वास या समर्पण का क्या अर्थ रह जायेगा? कैसे पूर्णता मिलेगी? तभी तो समस्त चिंताओं को छोड़कर इस शिविर में भाग लेना है . . . और पूर्णता भी तो तभी है, जब हम उनके चरणों में समर्पित हो जायें, अंशमात्र भी आपके पास आपका कुछ न रह सके, इस तरह उनसे एकाकार हो जायें, कि हवा निकलने की भी जगह न बच सके . . . तो फिर पूर्णता प्राप्त होगी ही, ध्यान स्वतः ही लगने लगेगा, समाधि स्वतः ही प्राप्त हो जायेगी।

जब उनके हो जायेंगे, तब भेद ही न रहेगा गुरु और शिष्य में — और तब आप स्वयं ही पूर्ण हो जायेंगे . . . और फिर मां जगदम्बा को भी अपनी कृपा करनी ही होगी, दर्शन देने ही होंगे।

— और इसीलिए तो आपने निश्चय कर लिया है, कि आप 'साधना के मानसरोवर की यात्रा' पूज्य श्री के साथ करेंगे ही, क्योंकि आप अच्छी तरह समझ चुके हैं, कि इस मानसरोवर में आपको कई अमूल्य साधनाएं प्राप्त हो जायेंगी, जिससे आप भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूपों से पूर्ण हो सकेंगे।

तभी तो निमन्त्रण पत्र भेजने जैसी कोई बात शेष रही ही नहीं, क्योंकि विभिन्न प्रांतों से बहुत सारे साधकों के पत्र पत्रिका कार्यालय को प्राप्त होने लगे हैं — नवरात्रि शिविर हेतु नामांकन कराने के लिए।

इस चार दिवसीय शिविर में पूज्य गुरुदेव के द्वारा आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त होने वाली साधनाओं और दीक्षाओं को आप हृदयस्थ करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो कर आ रहे हैं— आप को आना ही है, क्योंकि अब आप पूज्य गुरुदेव के हृदय की पुकार को समझना सीख चुके हैं।

दीक्षा का यह अत्यन्त गोपनीय व दुर्लभ पक्ष केवल गुरु-परम्परा से ही आगे बढ़ता रहा है। यह दीक्षा शास्त्रों में अत्यन्त गोपनीय रही है, जिसका परिष्कृत या लोक व्यवहारिक स्वरूप षोडश संस्कार के नाम से प्रचलित है। दीक्षा के सम्बन्ध में अनेक भ्रामक तथ्य अनेक पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलते हैं। ऐसे समय में एक आम-आदमी निर्णय करने में असमर्थ होता है, कि मुझे क्या करना है या क्या नहीं करना है; वह वास्तविकता के पास जाते-जाते रुक जाता है और फिर वही समाज उसे अपनी बेड़ियों में जकड़ लेता है . . .

— यह आज से नहीं प्राचीन काल से चला आ रहा है। जो कुछ आज वर्तमान में हो रहा है। वह प्राचीन काल में भी होता रहा है। अन्तर सिर्फ इतना है, कि आज का मानव अपने को बुद्धिवादी, भौतिक सुख सम्पन्न आधुनिक परिवेश से सम्पन्न 'मॉडर्न' कहलाने को पूर्णता मानता है।

स्थापन संस्कार

श्री सेवानन्द

पूर्व काल में जबकि मनुष्य प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर चुका था। ब्रह्मांड से भी परे उसका विज्ञान था। उसकी पूर्णता पृथ्वी लोक में ही नहीं अपितु संपूर्ण ब्रह्मांड के जनक परब्रह्म से थी।

यह हमारे लिये बड़े शर्म की बात है, 'मॉडर्न' कहलाने वाले लड़के अपने पिता को पिता न कहकर 'डैड', माता को 'ममा' कहने में संकोच नहीं करते हैं, यही नहीं लड़कियां भी उनसे एक कदम आगे हैं। यदि आज के परिवेश में मेल-मिलाप का तरीका देखा जाए, तो चारों तरफ हाय-हाय मची है।

उपरोक्त चाहे कोई भी बिन्दु हो, शास्त्रों में इसका स्पष्ट उत्तर है — संस्कार दीक्षा की कमी उस व्यक्ति के जीवन में रही है। यही, नहीं आज के तथाकथित युग में स्वार्थ वश प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचने के लिए बुद्धिवाद का बड़े जोरों-शोरों से प्रसार है। चिकनी पत्रकारिता का मुल्लमा हो या आधुनिक कम्प्यूटर के छांव तले बैठ विद्वता का आवरण ओढ़े ढोंगी — इनकी कमी नहीं है; ये इस कदर बढ़ते जा रहे हैं जैसे रक्तबीज के एक-एक खून के बूंद से उत्पन्न होते अनेकों रक्तबीज।

इसी प्रकार आज वर्तमान में मानवीय बुद्धि-विवेक पर आधारित गुरु-शास्त्र की त्रिवेणी बहने लगी है, जिससे समाज में तथाकथित गुरुओं की और शास्त्रों की बाढ़ आ गई है। यहीं नहीं, अब तो शिष्य भी एक से एक महान पैदा होने लगे है, कोई अपने में कम नहीं है, सभी एक से बढ़कर एक . . . और तो और अपने सद्गुरुओं से भी एक कदम आगे हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं जो कि लकीर के फकीर—

तोता रटे राम-राम,
मेरा तो हो बस, काम-काम।

इनके साथ तथाकथित तांत्रिकों की भी कमी नहीं है। इनमें ऐसे भी हैं, जो मात्र शास्त्रों पर आधारित हैं, तर्क-वितर्क करने का ढंग भी इनका बड़ा आसान है, उत्तर मिलेगा— किस शास्त्र में ऐसा लिखा है, दीक्षाएं तो कोरी और मनगढ़ंत हैं। यह सब तो मात्र लूटने का एक ढंग है। यही नहीं ऐसे लोग तुलसी और पीपल के वृक्ष को लगाना उनकी पूजा करना भी एक प्रकार का ढोंग मानते हैं।

उपर्युक्त जो बिन्दु मैंने दर्शाये हैं, वे हमारे आज के
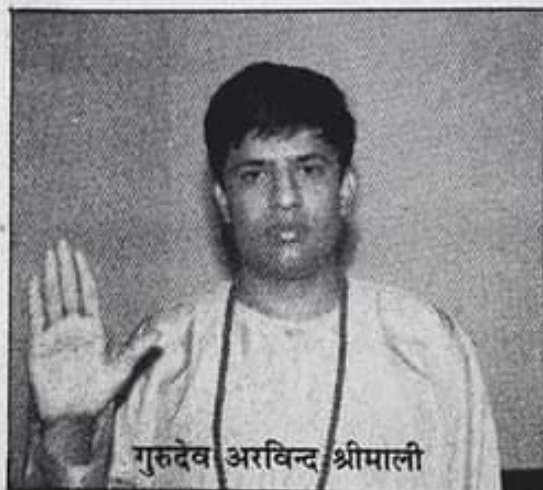
स्थापन संस्कार का अर्थ है– 'किसी के अंदर अच्छे संस्कारों की स्थापना' संस्कार दीक्षा के द्वारा साधक के शरीर के भीतर दीक्षा रूपी बीज का अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। वह अपनी क्षमता को पहचानकर साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करता है। केवल ज्योति कहने से पूर्णता प्राप्ति असंभव है, प्रकाश-प्रकाश कहते रहने पर भी पूर्णता प्राप्ति असंभव है, यह पूर्णता तो सद्गुरु रूपी तीर्थ में दीक्षा रूपी मोती चुगने से मिलती है। दीक्षा के एक ऐसे ही स्वरूप का नाम है – ''स्थापन संस्कार दीक्षा''।

वर्तमान परिवेश पर आधारित हैं। इनमें इन बेचारों का कोई दोष नहीं है। इन सब का कारण मात्र एक है, कि इनमें संस्कार का अभाव है। इनका जीवन मात्र एक छलावे में डूब चुका है। इन्हें यह ज्ञान नहीं है, कि – किस मार्ग पर चलना है? कौन सा मार्ग लम्बा या थकावट देने वाला है? कौन सा मार्ग ऐसा है, जिससे सरलता पूर्वक जायें अथवा ऐसा कौन सा महत्त्वपूर्ण बिन्दु है, जिससे हम पूर्णता प्राप्त कर सकें?

इसे समझना आसान है, यदि आप किसी वस्त्र विक्रेता के दुकान पर कपड़े खरीदने जाते हैं, तो वह पहले रोशनी करेगा (आपके सामने), आपको कोई कुर्ता खरीदना हो या साड़ी फटाफट दस बारह लाट खोल देगा और कहेगा– यह लीजिये, यह लीजिये; साथ में उन वस्त्रों के गुणगान . . .

ठीक इसी तरह आज हमारे समाज में ही नहीं, चाहे वह भारतीय समाज हो या विश्व के अन्य किसी देश का समाज, तथाकथित बातें देखने को मिल ही रही हैं, जिसके कारण आज विश्व भर में अशांति, कोहराम, आतंकवाद, हत्याएं, लूटमार का वातावरण बना है। इन सभी का कारण है– संस्कार का अभाव होना। इसके लिए शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है, कि यदि संस्कार दीक्षा प्राप्त कर ली जाय, तो ऐसा व्यक्ति संपूर्ण विश्व को मार्ग दर्शन दे सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि इस दीक्षा का क्या प्रयोजन है? यह दीक्षा क्यों लें? हमने तो अन्य गुरुओं से कान-फुंकाया है, हमारे मत (सम्प्रदाय) में तो हमारे गुरु इन सब को बेफिजूल बताते हैं। यह ऐसा कौन सा नया गुरु बन कर खड़ा हो गया है?

– ऐसी अनेक बातें सुनने को मिलती हैं। इसका एक ही उत्तर है, कि ये सभी बातें आपके अपने समाज की हैं। उस समाज की जहां पर एक मुट्ठी राख को भी हांडी बनाकर टांग देते हैं, जहां एक-एक मान्यता जोड़ी जाती है, जिसके बनी सांकल में रोज एक नये जीव को

मान्यताओं की यह बेड़ी टूटने पर भी नहीं टूटती है। यदि टूट जाती तो आद्यशंकराचार्य जैसे मानव को अपनी माता की लाश अपने हाथों से ढोनी नहीं पड़ती। बुद्ध को समाज में नई चेतना देने की जरूरत नहीं पड़ती। ईसा को क्रॉस पर नहीं लटकाया जाता। मीरा को विषपान नहीं करना पड़ता।

इसीलिए संस्कार दीक्षा की आवश्यकता पड़ती है। गुरु से नहीं सद्गुरु से दीक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

अस्तु, दीक्षा प्राप्ति के लिए शुभ योग मुहूर्त का होना परम आवश्यक है। यह अनुभव सिद्ध सत्य है, कि गुरु के निर्णय और आदेश के अनुसार दीक्षा ग्रहण की जाय, क्योंकि समस्त नियम-उपनियम उक्त समय उपेक्षणीय हो जाते हैं, जब साधक गुरु-आज्ञा पालक बन जाता है। यह कार्य सामान्य संन्यासी, पुजारी, साधु या गुरु के वश के बाहर है।

किन्तु ऐसी स्थिति में सद्गुरु का मूर्धन्य तपस्वी होना आवश्यक है– जो कालवेत्ता हों, जिन्हें संपूर्ण शास्त्रों का ज्ञान हो, जिन्हें दीक्षा विधि का ज्ञान हो, जिन्होंने ऐसी दीक्षाएं प्राप्त की हों और देने की विधि का भी ज्ञान हो। शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है, कि जिस आश्रम में शक्तिपात की क्रिया न हो वह आश्रम होते हुए भी श्मशान है; क्योंकि शक्तिपात होते ही, साधक में स्वतः वे

परम पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी के द्वारा शक्तिपात युक्त संस्कार दीक्षा सम्पन्न कराना द्विजत्व प्राप्ति का दृढ़तम आधार है।

सब क्रियाएं या गुण आ जाते हैं, जिनके लिए उसे कई-कई वर्ष प्रयास करना पड़ता है।

भगवान शिव 'स्कन्ध' से कहते है— जिस दीक्षा के द्वारा मनुष्य को द्विजत्व की प्राप्ति होती है, उक्त दीक्षा को ही 'संस्कार दीक्षा' कहते हैं। पुनः स्कन्ध जी के द्वारा पूछने पर भगवान शिव ने इसके क्रम को बताया —

वक्ष्यामि भोग मोक्षार्थं दीक्षां पापक्षय करीम्,
मलमायादिपाशानां विश्लेषः क्रियते यया।। 1 ।।
इत्थं समय दीक्षायां भवेद्योग्यो भवार्चने।।
वक्ष्ये संस्कार दीक्षायां विधानं श्रृणु षण्मुख।। 2।।

द्विजत्वापादनार्थाय तथा . . . आहार बीज संशुद्धौ गर्भाधानाय संस्थितौ।। . . . शिवाग्निगुरुपूजा . . . बाल बालिशवृद्ध स्त्री भोग . . . समग्रान्।। . . . दीक्षायां विशिष्टायां विशेषतः। वह्निहोम मागमज्ञानयोग्यः संजायते शिशुः।। 25 ।।

(अग्निपुराण अध्याय 81, 82)

महादेव बोले — मैं आपसे भोग और मोक्ष की प्राप्ति के पाप को नष्ट करने वाली उस दीक्षा का विधान कहता हूं, जिसके द्वारा माया आदि मल और पाशों से मनुष्य मुक्त हो जाता है। इस प्रारम्भिक दीक्षा से मनुष्य गुरुमंत्र जप और शिवार्चन का अधिकारी हो जाता है। वह देवपूजन का अधिकारी हो जाता है। इस प्रकार की समयी दीक्षा प्राप्त होने के बाद शिष्य को चाहिए, कि वह गुरु से ''विशिष्ट दीक्षा'' ले।

विशिष्ट दीक्षा प्रमुखतः तीन प्रकार की होती है—

- पहला, जिसमें जीव मल नामक पाश से मुक्त होता है; जिसे 'विज्ञानाकल' कहते हैं।
- दूसरा, मल और कर्म से सम्बन्धित है, जिसे 'प्रलयाकल' कहते हैं।
- तीसरा, कला से लेकर भूमि पर्यन्त सभी से अर्थात् मल, माया और कर्म, जिसे 'सकलाकल' कहते हैं।

सद्गुरु यह दीक्षा दो प्रकार से सम्पन्न करते हैं। तीव्र शक्तिपात से सम्पन्न दीक्षा को ''निराधार'' कहते हैं। मन्दतीव्र शक्तिपात से सम्पन्न दीक्षा को ''शम्भु'' या ''साधार'' कहते हैं।

साधार दीक्षा के चार प्रकार हैं — सबीज, निर्बीज, साधिकार और निराधिकार।

- ज्ञान से युक्त शिष्य को दी जाने वाली दीक्षा 'सबीज' कहलाती है।
- अज्ञानी, वृद्ध, अशक्त व बालक को दी जाने वाली दीक्षा 'निर्बीज' कहलाती है। इसमें शिष्य सद्गुरु की भक्ति पर आश्रित रहता है।
- नैमित्तिक और काम्यकार्यों में जिसके द्वारा साधक और आचार्य को अधिकार प्राप्त होता है, उसे 'साधिकार' कहते हैं।
- 'निराधिकार' दीक्षा से नित्य कर्मों अथवा ऐसे कर्मों को करने की योग्यता प्राप्त होती है, जिसको करने से साधक को कुछ लाभ तो नहीं होता, किन्तु जिन्हें न करने से उसके गुणों का ह्रास हो जाता है। यह दीक्षा दो प्रकार की है— पहली 'क्रियावती' दूसरी 'ज्ञानवती'।

हे स्कन्द! सद्गुरु ऐसी दीक्षा शक्तिपात के माध्यम से देते हैं। लौकिक भोग वाले शिष्य को दीक्षा देते समय गुरु अपने नेत्रों से प्रसन्न मुद्रा में शैव तेज को उसके अङ्गों में फैलाते हुए सिर से चरण तक देखते हैं।

मोक्षार्थी शिष्य को दीक्षा देते समय चरण से शिखा तक देखते हैं। देवार्चन अधिकारी रूपी समयी दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् साधक को चाहिए, कि वह द्विजत्व की प्राप्ति हेतु संस्कार दीक्षा की प्रार्थना अपने सद्गुरु से करें।

हे षडानन! अब मैं संस्कार दीक्षा का विधान बतला रहा हूं – सद्गुरु शिवाशिव मय महेश रूपी अग्नि का आवाहन करके एकीकृत दोनों का पूजन सम्पन्न करते हैं, हृदयमंत्र से तर्पण करके उनका सान्निध्य प्राप्त करने के लिए उक्त दोषों को दूर करते हैं। द्विजत्व की प्राप्ति के लिए, सहरूप से उसको भावित करने के लिए बीज की शुद्धि, गर्भाधान, सीमान्तोन्नयन, जन्म, नामकरण आदि संस्कार के लिए . . . शिथिली भूत बन्ध को शक्ति से खीचकर क्रमशः गर्भाधानादि क्रियायोग बल से सम्पन्न कराते हैं।

शक्तिपात दीक्षा प्रदान करने के बाद सद्गुरु अपने शिष्य से प्रतिज्ञा कराते हैं, कि वह देव और शास्त्र की निन्दा नहीं करेगा, जब तक प्राण रहेंगे शिव, अग्नि और सद्गुरु की पूजा यथाशक्ति करेगा। बालक, प्रमादी, वृद्ध, स्त्री, कर्मभोग करने वाले और रोगी की यथाशक्ति धन से सहायता करेगा।

इस प्रकार की विशिष्ट रूप से समयी संस्कार दीक्षा या स्थापन संस्कार दीक्षा प्रदान करने से साधक या शिष्य उक्त विशेष हवन कर्म और सम्बद्ध देव या देवी के शास्त्र ज्ञान का विशेष रूप से अधिकारी हो जाता है और ऐसी दीक्षा सम्पन्न कराने वाले योगी भी विरले होते हैं।

परम पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ0 श्रीमाली जी के द्वारा शक्तिपात युक्त संस्कार दीक्षा सम्पन्न कराना ही द्विजत्व प्राप्ति का आधार है। स्थापन संस्कार दीक्षा के द्वारा साधक के शरीर के भीतर दीक्षा रूपी बीज का अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। वह अपनी क्षमता को पहिचानने लगता है, जिसके फलस्वरूप वह साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करता है।

स्थापन संस्कार दीक्षा के इस क्रम में निम्नलिखित दीक्षाएं साधक प्राप्त कर सकता है–

1. **गुरु स्थापन संस्कार**
2. **वीर वैताल स्थापन संस्कार**
3. **तारा स्थापन संस्कार**
4. **लक्ष्मी, अप्सरा स्थापन संस्कार**
5. **ऋण-रोग हर्ता गणपति स्थापन संस्कार।**

प्रत्येक जीव को पूर्णत्व प्राप्त करने का अधिकार है; पर सभी को यह अधिकार प्राप्त नहीं होता। जीव तो भूतपूर्व कर्म जनित संस्कार के वश स्थूल जगत में आने के लिए मार्ग तलाश करता है। सांसारिक जगत में आने के बाद अपने स्वरूप का ज्ञान होना आवश्यक है। पूर्णता प्राप्त करने हेतु पूर्ण स्वरूप को जानना आवश्यक है। प्रत्येक आत्मा वास्तव में पूर्ण सत्ता है, इसमें न कोई स्त्री है, न पुरुष। केवल दु:खों की निवृत्ति से भी पूर्णता प्राप्त नहीं होती है। उसके लिए तो दिव्य ज्ञान का होना अनिवार्य है। यह शास्त्रों का रटारटाया वाक्य नहीं है, यह सांख्ययोगी का विवेक ज्ञान भी नहीं है; इसका नाम है – शुद्ध विद्या।

यह केवल ब्रह्म से प्राप्त होती है और वह भी सद्गुरु की कृपा से। जब सद्गुरु हमारी अधोगति देखते हैं, तब वे करुणादान करते हैं, जिसका नाम ही शुद्ध विद्या है। यह शुद्ध विद्या ही प्रत्येक जीव के लिए अलग-अलग पदार्थ शामिल करती है। जो पूर्णत्व का यात्री है, उसे तो सद्गुरु अपने शक्तिपात के माध्यम से परमपद तक ले ही जाते हैं। इस मार्ग का परिचय सभी को जानना चाहिए . . . तभी तो गुरुदेव के प्रत्येक शिष्य की जुबान पर एक ही मंत्र उदित रहता है–

।। ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

डॉ0 (श्रीमती) उर्वशी बन्धु

सौन्दर्य के शत्रु

मुंहासे

मुंहासे जिन्हें डॉक्टरी भाषा में "एक्ने वल्गारिस" तथा अंग्रेजी में "पिंपल" कहते हैं। समूचे युवा जगत के लिए यह छोटा सा चर्म रोग दु:खदायी व चिंतनीय है। कुछ लोग इन्हें मसल कर, दबा कर, मवाद निकाल कर ठीक करते देखे जाते हैं, परंतु ऐसा करने से व्याधि और बढ़ जाती है तथा त्वचा पर गड्ढे जैसे निशान छोड़ जाती है। ये निशान स्थायी होते हैं। इन से सुंदर से सुंदर चेहरा भी कुरूप दिखाई देने लगता है।

मुंह या चेहरे के अतिरिक्त ये छाती, कंधों और पीठ पर भी होते हैं। यौवन के आगमन के साथ किशोर और किशोरियों में (13-14 की आयु के आस-पास) चेहरे पर छोटी-छोटी गांठदार फुसियां सी उभरने लगती हैं। इन का रंग लाल होता है तथा ऊपरी भाग काला होता है। इन में से कुछ पक जाती हैं तथा उन्हें दबाने पर थोड़ा गाढ़ा सा मवाद निकलता है। अच्छे होने पर साधारणतया इन से कोई दाग नहीं पड़ता, परंतु अधिकतर मामलों में स्थायी गड्ढे-से निशान शेष रह जाते हैं, जो चमड़ी को खुरदरा बना देते हैं।

इनके होने का कारण पौष्टिक एवं संतुलित आहार की कमी है। ये यौवन के आगमन के साथ सेक्स-हारमोन्स के अनुपात में घट-बढ़ तथा त्वचा के नीचे एकत्रित दूषित पदार्थों को शरीर से बाहर निकालने की प्रक्रिया का परिणाम हैं। अतः इनको शरीर में पौष्टिक तत्त्वों की कमी के कारण होने वाली प्रक्रिया मानना चाहिए।

मुंहासों की स्वाभाविक एवं प्राकृतिक चिकित्सा करनी चाहिए। इसी से निश्चित और स्थायी लाभ प्राप्त हो सकता है।

प्रकृति का नियम है, कि शरीर में कोई भी अनावश्यक पदार्थ नहीं रह सकता। इसके लिए गुर्दे, मलाशय, मूत्राशय तथा त्वचा आदि साधन शरीर में उपलब्ध हैं। रक्त में आने वाले विषाक्त पदार्थ, विशेषकर यूरिया गुर्दे द्वारा, भोजन में अनपचे पदार्थ मलाशय द्वारा शरीर से बाहर होते रहते हैं। फिर भी कुछ सूक्ष्म कण शेष रह जाते हैं, जो त्वचा द्वारा 'सिबंसियस ग्लैण्ड्स' के माध्यम से पसीने के साथ निकल जाते हैं।

स्पष्ट है, कि जब सिबंसियस ग्लैण्ड्स अर्थात् पसीना छोड़ने वाली ग्रंथियां अपना काम ठीक से नहीं करतीं या उनकी कार्य प्रणाली में किसी प्रकार की रुकावट आती है; तब यह दूषित तत्त्व फोड़ों, फुंसियों और मुंहासों के रूप में प्रस्फुटित होते हैं। मुंहासों से छुटकारा पाने के लिए सर्वोत्तम उपाय संतुलित एवं पौष्टिक आहार, व्यायाम, धूप, ताजी हवा का सेवन आदि ही है।

✧ बासी, तले हुए खाद्य पदार्थ, स्टार्च युक्त खाद्य, मिठाईयां आदि कम से कम खाएं। नारियल पानी, हरी सब्जियां, फल, गाजर तथा चुकंदर का रस लेना चाहिए, ये रक्तशोधक होते हैं।

✧ गेंहू के खेत की काली मिट्टी बहुत उपयोगी होती है; इसे पीस कर छान लें। रात भर पानी में भिगो दें। प्रात: इसका आधा सेंटीमीटर मोटा लेप पूरे चेहरे पर करें, करीब चालीस मिनट तक उसे चेहरे पर लगा रहने दें। फिर गुनगुने पानी से मुंह धो डालें।

✧ काली मिट्टी में चर्म रोगों के प्रतिरोध की तथा मुंहासों को स्थायी रूप से दूर करने की अद्भुत क्षमता होती है। काली मिट्टी में बेसन मिलाकर संपूर्ण शरीर पर मलने के बाद स्नान करने से चर्म रोग दूर होकर त्वचा की कांति में वृद्धि होती है।

✧ अन्य घरेलू उपचार जैसे – पुदीना फेस पैक द्वारा भी स्थायी व निश्चित लाभ होता है। पुदीने की पत्तियों को धोकर चटनी की तरह पीस लें, वह पैक चेहरे पर लगाएं। 15-20 मिनट तक लगा रहने दें, बाद में सादे पानी से धो डालें। हौले से चेहरा पोछें व बेबी लोशन लगा लें। चेहरा मुंहासों रहित, दाग धब्बों रहित, नर्म कांतिवान हो जाएगा।

सौन्दर्य पुष्प का हो या मनुष्य का,
अपनी तरफ आकर्षित करता ही है।
सुन्दर चेहरे को देखकर हरेक के मन में यह आकांक्षा होती ही है कि उसे बार-बार देखूं, लेकिन हर सौन्दर्य का शत्रु होता ही है और सुन्दरतम चेहरे के तो सबसे बड़े शत्रु हैं मुंहासे
इस शत्रु को समाप्त कैसे करें . . .
आपको मालूम है क्या ???
नहीं, तो . . .
प्रस्तुत है उपाय –

✧ यदि प्रतिदिन थोड़ा सा जैतून का तेल हथेली पर लगा कर धीरे-धीरे मुंहासों पर मला जाए, प्रात: उठकर मुंह अच्छे साबुन से धोया जाए, तो कुछ ही दिनों में मुंहासे ठीक हो जाते हैं।

✧ जायफल को थोड़े से पानी में घिसकर मुंहासों पर लगाने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं।

घरेलू उपचार हानिरहित होते हैं व स्थायी लाभ प्रदान करते हैं। मुंहासे होने पर लापरवाही बिलकुल नहीं बरतनी चाहिए।

थोड़ी सी मेहनत से आप इनको समूल नष्ट कर सकते हैं। प्रात: सैर, व्यायाम, पौष्टिक भोजन, घरेलू फेस-मास्क ये सभी मुंहासों को दूर करने में कारगर हैं।

अनया साधनया चैव रम्भां परिरम्भयेत्

रम्भा प्रयोग

कौन कहता है, कि रम्भा अप्सरा प्रेमिका रूप में आपके नियंत्रण में न हो और आपसे सम्मोहित न हो . . . एक दुर्लभ और शीघ्र सिद्ध होने वाला प्रयोग जो आपको जीवन में पहली बार प्राप्त हो रहा है . . .

रम्भा की देह से जो मादक सुगन्ध प्रवहित होती है, उस सुगन्ध मात्र से ही व्यक्ति की वृद्धता यौवन में परिवर्तित हो सकती है, फिर यदि साधक उसका साहचर्य प्राप्त कर सके, तो वह पूरे जीवन को यौवन, उल्लास और उमंग से पूर्ण बना सकेगा।

समुद्र मंथन से निकले हुए रत्नों में रम्भा अद्वितीय रत्न है। भगवान विष्णु ने कहा है कि यह अप्सरा जहां पर भी रहेगी वहां धन, धान्य, सौभाग्य, अक्षुण्ण यौवन रहेगा ही। रम्भा के गुणों के कारण ही विष्णु ने उसको

देवलोक में स्थापित कर दिया; जिससे कि देवलोक में आनन्द, मस्ती, उल्लास ही रहे, हर क्षण यौवन से पूर्ण देवता विचरण करते रहें।

अतः रम्भा को सिद्ध करना जीवन की सर्वोच्चता ही होगी, श्रेष्ठता ही होगी।

साधारणतः साधकों के मन में यह विचार रहता है, कि अप्सरा साधना करना उचित नहीं है, यदि कोई इसे करता भी है,तो चुपचाप करता है; जबकि इस साधना को छिप कर करने जैसी कोई बात नहीं है — और इसे करना अनुचित भी नहीं है, क्योंकि जीवन में अन्य किसी साधना को करने के साथ-साथ अप्सरा साधना करना भी महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य होता है। अन्य साधनाएं करने से व्यक्ति के जीवन में गंभीरता आ जाती है, जिसकी वजह से वह जीवन का उन्मुक्त आनन्द नहीं ले पाता है, वह जीवन को जीवन्तता के साथ व्यतीत करने से घबराता है।

. . . और ऐसे लोगों का जीवन भौतिक रूप में ठूंठ ही कहा जा सकता है।

लेकिन अप्सरा साधना करने से व्यक्ति का जीवन संतुलित रहता है, वह जितना अधिक आध्यात्मिक क्षेत्र में ऊपर उठता है, उतना ही अधिक वह सामाजिक रूप से, भौतिक रूप से भी सम्पन्न होता है। अपने भौतिक रूप में वह पूर्ण मस्ती से छलछलाता हुआ, लोगों को प्रसन्नता देता हुआ कार्य करता है। उसकी उपस्थिति ही उसकी विशेषता का अनुभव कराती है।

जब देवों और दैत्यों ने समुद्र मंथन किया, तो चौदह रत्न प्रकट हुए उन चौदह रत्नों में एक अप्सरा भी निकली, वह अप्सरा 'रम्भा' थी। समस्त 108 अप्सराओं का सारभूत तथ्य मिला कर जिस आकृति का निर्माण किया गया वह 'रम्भा' है। रम्भा के प्रकट होते ही दोनों पक्ष (देव और दानव) उसके सौन्दर्य को देखकर उस पर मोहित हो गये तथा उसे अपने पक्ष में लाने के लिये प्रयत्नशील हो उठे। वह इतनी अद्वितीय सौन्दर्यवती थी, कि स्वयं भगवान विष्णु उस पर मोहित हो कर उसे अपने पास ही रखने का विचार करने लगे।

रम्भा अप्सरा प्रयोग करने से साधक का यौवन स्थायी रहता है, उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार का सम्मोहन आ जाता है, जिसके कारण कोई भी उसे देख ठिठक कर खड़ा हो जाता है, चाहे स्त्री हो या पुरुष इस साधना को सम्पन्न कर वह अप्रतिम व्यक्तित्व का स्वामी हो जाता है।

साधक रम्भा को प्रेमिका के रूप में सिद्ध करने में सफल हो जाता है, तो यह उसके जीवन की अद्वितीय उपलब्धि होती है। साधक को यदि रम्भा प्रेमिका के रूप में उपलब्ध हो जाती है, तो उसका व्यक्तित्व मोहक बन जाता है, अन्य लोग स्वतः ही उसकी ओर आकृष्ट होने लगते हैं। उसकी देह से भी विशेष प्रकार की सुगंध प्रवाहित होने लगती है। वह सक्षम हो जाता है जीवन को जीवन्तता से जीने के लिये; वह सक्षम हो जाता है किसी को भी अपने वश में करने के लिये . . . भौतिक रूप में तो वह कभी असफल हो ही नहीं सकता।

रम्भा का यह सम्मोहनयुक्त प्रयोग पहली बार पाठकों और साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, यह प्रयोग प्रत्येक साधक को निश्चित रूप से करना ही चाहिए।

प्रयोग विधि

- प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री है **'रम्भा सम्मोहक यंत्र'** और **'अप्सरा माला'**।
- यह एक दिवसीय साधना है। साधक इसे **20.5.96** या किसी भी **शुक्रवार** को सम्पन्न कर सकता है।
- साधक स्वच्छ गुलाबी आसन पर गुलाबी वस्त्र धारण कर बैठें तथा गुलाब का इत्र लगावें।
- बाजोट पर गुलाबी वस्त्र ही बिछायें तथा उस पर ताम्रपात्र में यंत्र को स्थापित करें।
- यंत्र का केसर, गुलाब तथा इत्र आदि से संक्षिप्त पूजन करें।
- अप्सरा माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें।

साधक रम्भा को प्रेमिका के रूप में सिद्ध करने में सफल हो जाता है, तो यह उसके जीवन की अद्वितीय उपलब्धि होती है। साधक को यदि रम्भा प्रेमिका के रूप में उपलब्ध हो जाती है, तो साधक का व्यक्तित्व मोहक बन जाता है, अन्य लोग स्वतः उसकी ओर आकृष्ट होने लगते हैं।

मंत्र

ॐ रं क्षं रम्भा आगच्छ क्षं रं नमः

- मंत्र समाप्ति पर खड़े होकर यंत्र को बायें हाथ में ले लें तथा उपरोक्त मंत्र बोलते हुए यथासंभव अपलक निहारते हुए 15 मिनट तक मंत्र जप करें।
- फिर मिष्ठान्न का भोग लगायें।
- प्रयोग समाप्ति पर साधक माला को ग्यारह दिन तक गले में धारण कर रखें।
- ग्यारह दिन बाद किसी भी रविवार को नदी में यंत्र के साथ विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री न्यौछावर– 210/-

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली ''**गुरुधाम**'' में ही **पूज्य गुरुदेव** या **शास्त्री जी** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम 5 से 8 बजे** के बीच सम्पन्न होती है और यदि श्रद्धा, विश्वास हो, तो उसी दिन साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)

9.3.96 अष्टलक्ष्मी प्रयोग

जीवन में भौतिक पूर्णता का श्रेष्ठतम प्रयोग मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य . . . और मनोवांछित इच्छाओं की पूर्णता . . . जो गृहस्थ है, उसके लिए तो यह प्रयोग ऑक्सीजन (प्राणवायु) की तरह है . . . आप सभी साधकों के लिए पहली बार।

10.3.96 सौन्दर्योत्तमा अप्सरा प्रयोग

अप्सरा प्रयोग को मनुष्यों ने तो क्या देवताओं तक ने किया है, और जिसे उच्चकोटि के ऋषियों ने भी सम्पन्न किया है। इससे साधक के मन में प्रेम, उमंग, उत्साह, यौवन, रोग मुक्ति, चेहरे के चतुर्दिक आभामण्डल और सौन्दर्योत्तमा अप्सरा की निरन्तर सामीप्यता एक अद्भुत . . . अचरज भरा प्रयोग . . . आपके जीवन का श्रेष्ठतम प्रयोग।

30.3.96 गुरु हृदयस्थ धारण प्रयोग

इससे ऊंचा प्रयोग तो पृथ्वी पर होता ही नहीं, क्योंकि इस प्रयोग से गुरुदेव पूर्ण ज्ञान, चेतना एवं सिद्धियों के साथ साधक के हृदय में स्थापित हो जाते हैं . . . और साधक का सारा शरीर . . . चेहरा तथा अंग-अंग जगमगाने लग जाता है . . . एक विलक्षण साधना . . . प्रत्येक साधक-साधिका के लिए वरदान स्वरूप।

31.3.96 नवग्रह शांति प्रयोग

जिसके द्वारा प्रत्येक ग्रह चाहे वह शनि हो, मंगल हो अथवा राहू या केतु का अशुभ प्रभाव . . . इस अशुभ प्रभाव को शान्त कर परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता से युक्त . . . अद्वितीय एवं दुर्लभ प्रयोग।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे—

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- वार्षिक शुल्क तथा 24/- रुपये डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/- इस प्रकार कुल शुल्क (204/- + 180/- = 384/-) जमा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **'इन्द्राक्षी कवच'** दिया जायेगा व उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं एक वर्ष की सदस्यता और दुर्लभ 12 अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको ''इन्द्राक्षी कवच'' उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या एक पत्रिका सदस्य व 12 पुराने दुर्लभ अंक हैं।

नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फ़ोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

अपर अपार सिंह

बहुत थोड़े से समय में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

समस्त देवता मंत्रों के अधीन होते हैं और यदि गुरु मंत्र का जप हो, तो किसी अन्य मंत्र को जपने की आवश्यकता ही शेष नहीं रह जाती, हमारे यहां जितने भी शास्त्र, वेद, पुराण लिखे गये, वे सब "गुरु" इन दो अक्षरों पर ही आधारित हैं; जो देवताओं से भी उच्च एवं पूजनीय हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का तेज जिनके भीतर समाहित है।

गुरु मंत्र अपने आपमें छोटा होते हुए भी अत्यधिक क्षमताओं से ओत-प्रोत होता है, क्योंकि इसके एक-एक शब्द का अर्थ अपने आपमें मूल्यवान है, पूरे शरीर को सूर्य के समान बना देने की शक्ति उसमें समाहित है, जो अचूक है, तीक्ष्ण एवं प्रभावकारी है, पूरे शरीर को चैतन्यता प्रदान करने में सक्षम है . . . यह हर किसी को यूं ही नहीं प्राप्त हो जाता है, इसके पीछे एक गहन चिन्तन, धारणा छिपी होती है, पूर्ण चेतना युक्त इस गुरु मंत्र में शिष्य ही की पूर्णता निहित है। जो कार्य किसी अन्य देवी-देवता के लम्बे-चौड़े श्लोक व स्तुति गान से नहीं हो पाता, उसे गुरु मंत्र तत्काल कर दिखाता है। मानव की आवश्यकताओं के अनुसार ही मंत्रों की रचना प्राचीन काल में की गई, परन्तु क्लिष्ट होने के कारण, सस्वर व उचित उच्चारण न कर पाने के कारण इनका विपरीत प्रभाव ही अधिक देखने को मिला और मानव की समस्याएं, परेशानियां, बाधाएं रह गई वहीं की वहीं।

आशा को निराशा में बदलते हुए देखा, तभी हमारे ऋषि इस विषय पर गम्भीरता से विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे, कि गुरु मंत्र ही सबसे श्रेष्ठ और तीव्र प्रभावकारी है, जिसका सस्वर उच्चारण भी आसानी से किया जा सकता है, जो अन्य मंत्रों की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण भी है।

यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ जप किया जाय, तो समस्याओं से पार पाने के लिए अन्य कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती, क्योंकि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी अधिक तेजस्वी कहा गया है, वे ही ज्ञान व सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ हैं, भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले हैं, समस्त देवी-देवता तो उन्हीं के इंगित पर नृत्य करते रहते हैं। प्रत्येक गृहस्थ साधक के लिए गुरु मंत्र आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है; जो उनके कष्टों को हमेशा के लिए दूर करने वाला अचूक मंत्र है। जो जिस कामना से, जिस भाव से इसे जपता है, उसे उसके अनुसार ही फल सिद्धि प्राप्त होती है। यदि इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से जपा जाय, तो सफलता निश्चय ही प्राप्त होती है। इसके माध्यम से विभिन्न पुरुषार्थों की सिद्धि होती ही है, जो इस प्रकार है –

स्वयं के अभ्युदय के लिए

जीवन में यदि आप चाहते हैं, कि सफलता आपके कदम चूमे और यदि उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचना है, तो गुरु मंत्र से उत्तम और कोई प्रदर्शक नहीं, जो तुम्हें उच्चता प्रदान कर सके, श्रेष्ठता प्रदान कर सके, तुम्हारे जीवन का अभ्युदय कर सके। साधक **"अभ्युदय माला"** से निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें –

मंत्र

ॐ वं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर – 180/-

विपत्तियों के नाश के लिए

मानव जीवन है, तो दुःख भी होंगे, कठिनाइयां भी होंगी और विपत्तियां भी आयेंगी ही, पर यदि अन्य कहीं भटकने की अपेक्षा गुरु मंत्र जप पूर्ण निष्ठा के साथ कर लिया जाय, तो समस्त विपत्तियों का नाश स्वतः ही होने लगता है। निम्न मंत्र का ''**आपदहन्ता माला**'' से सवा लाख जप करें –

मंत्र

ॐ खं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर – 195/-

रोग नाश के लिए

गुरु मंत्र से कैसा भी रोग हो, जड़-मूल से समाप्त किया जा सकता है; इससे श्रेष्ठ अन्य कोई उपचार नहीं है, जो कि मनुष्य को रोग मुक्त कर पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान कर सके। निम्न मंत्र का ''**रुद्र माला**'' से सवा लाख जप करें –

मंत्र

ॐ रं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर – 150/–

सौभाग्य प्राप्ति के लिए

यदि बार-बार प्रयत्न करने पर भी भाग्य साथ न दे, तो उस व्यक्ति से दुर्भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं होता, किन्तु यदि व्यक्ति ''**सौभाग्य माला**'' से निम्न मंत्र का सवा लाख जप कर ले, तो उससे ज्यादा सौभाग्यशाली भी अन्य कोई नहीं होता, क्योंकि यह दुर्भाग्य की लकीरों को मिटाकर सौभाग्य के अक्षर अंकित कर देने वाला अत्यन्त तेजस्वी मंत्र है।

मंत्र

ॐ क्लीं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर– 175/-

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

इस मंत्र के माध्यम से अपनी इच्छानुकूल पत्नी को प्राप्त किया जा सकता है, जो सुलक्षणा हो, सौन्दर्यवती हो, साक्षात् लक्ष्मी हो, प्रिया हो; वरना सम्पूर्ण जीवन ही तनाव ग्रस्त हो जाता है, निम्न मंत्र का ''**स्निग्धा माला**'' से सवा लाख जप करें–

मंत्र

ॐ सुं हुं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर – 175/–

दारिद्रय, दुःखादि के नाश के लिए

इस मंत्र के माध्यम से जीवन में व्याप्त दुःख, दैन्यता, दरिद्रता जैसे शत्रुओं का नाश कर जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पन्नता प्राप्त करते हुए जीवन को उल्लासित व प्रफुल्लित बनाया जा सकता है। ''**ऐश्वर्यवर्द्धिनी माला**'' से निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें –

मंत्र

ॐ क्रीं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर –210/–

समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्ति के लिए

इससे बड़ा और सर्वश्रेष्ठ उपाय अन्य नहीं है, जो कि बड़ी-बड़ी उच्चकोटि की साधनाओं में सफलता प्रदान करने में सक्षम हो, क्योंकि गुरु ही मात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जो शुभ और लाभ के प्रदाता हैं और समस्त न्यूनताओं को समाप्त करने वाले हैं। कैसी भी साधना हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, सफलता निश्चित प्राप्त होती ही है। निम्न मंत्र का ''**साफल्य माला**'' से सवा लाख जप करें –

मंत्र

ॐ ह्रीं परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

न्यौछावर – 350/–

इन बीजाक्षरों से संप्रक्त गुरु मंत्र के सवा लाख जप से निश्चित ही उपरोक्त लाभ साधक को प्राप्त होते हैं। यह एक संन्यासी के द्वारा बताये गये तेजस्वी प्रयोग हैं; जो अचूक हैं, पूर्ण लक्ष्य भेदन में समर्थ हैं। मंत्र जप पूरा होने पर माला नदी, तालाब या मंदिर में विसर्जित कर दें।

विश्व का तीव्रतम प्रज्वलित मंत्र

नवार्ण मंत्र

मैं संसार की सर्वश्रेष्ठ साधनाओं में भारत के नवार्ण मंत्र—
"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" की गणना करता हूं।"

— रोम्यां रोला

यह कथन सामान्य विदेशी पर्यटक का नहीं वरन ऐसे प्रसिद्ध प्राच्यविद् का है, जिसने अपना पूरा जीवन भारत की विद्याओं को समझने में खपा दिया। ''श्री रामकृष्ण परमहंस'' जैसे युग पुरुष की सर्वाधिक प्रामाणिक जीवनी के इस लेखक की विद्वत-चर्चा पूरे विश्व में रही है और इन्होंने भारतीय विद्याओं के विषय में जो कुछ कहा, वह विश्व स्तर पर मान्य हुआ। ऐसे ही विद्वान का उपरोक्त कथन यह सिद्ध करता है, कि भारत में कैसे-कैसे श्रेष्ठ, तीव्र और प्रखर मंत्रों का सृजन हुआ।

आज खेद है, तो केवल इस बात का, कि ऐसे फलदायक मंत्रों की उपस्थिति और ज्ञान के बाद भी उनका पर्याप्त लाभ समाज को प्राप्त नहीं है। इसका मुख्य कारण यही है, कि ऐसे तीव्र मंत्र मूल रूप से साधनात्मक जीवन के अंग थे, जिनका प्रयोग बाद में पता नहीं अज्ञानता वश या फिर प्रमाद वश स्तुतिपरक ढंग से होने लग गया।

इनके प्रयोग के जो निश्चित विधि-विधान थे, वे प्रचलन में, ज्ञान में नहीं रहे और ये तीक्ष्ण मंत्र म्यान में पड़ी तलवार के समान चलाने पर व्यर्थ ही रहे। साधक इनके द्वारा अपने जीवन की विषमताओं पर प्रहार करने के बाद जब थम गया, तो उसने इनको निरर्थक मान लिया।

'गुप्त चामुण्ड तंत्र' में इस मंत्र से संबंधित पूर्ण साधना और प्रयोग की विधि स्पष्ट की गई है। इस ग्रंथ में जिस प्रकार से इस मंत्र का ध्यान स्पष्ट किया गया है, उसे मैं आगे की पंक्ति में यथावत स्पष्ट कर रहा हूं–

''वाग्'' –बीजं हि दीप – समान-दीप्तम्।
मायोऽति-तेजो द्वितीयार्क-बिम्बम्।।
''कामं'' च वैश्वानर-तुल्य-रूपम्।
प्रतीयमानं तु सुखाय नित्यम्।।
''चा'' शुअ-जाम्बू-नद-तुल्य-कान्तिम्।
''मुं'' पंचमं रक्त-तर प्रकल्पम्।।
''डा'' षष्टमुग्रार्ति-हरे-सुनीलम्।
''यै'' सप्तमं कृष्ण-तरं रिपुघ्नम्।।
''वि'' पाण्डुर चाष्टममादि-सिद्धिम्।
''च्चे'' धूम्र-वर्ण नवमं विशालम्।।
एतानि बीजानि नवात्मकस्य।
जपात् प्रवध्यः सकलार्थ-सिद्धिम्।।

उपरोक्त ध्यान से ज्ञात होता है, कि किस प्रकार से नवार्ण मंत्र भोग व मोक्ष दोनों ही प्रदान करने वाला है। अपने नाम के ही अनुरूप नौ वर्णों – ऐं ह्रीं क्लीं **चा मुं डा यै वि च्चे** से मिलकर बना यह तेजस्वी मंत्र गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार विहित विधि से नवरात्रि के अवसर पर सवा लाख जप किये जाने से पूर्णरूप से सिद्ध होता है। इनमें से प्रत्येक बीज की एक विशिष्ट साधना और विशिष्ट अर्थ है, किन्तु इस विस्तार में न जाते हुए भी यथोचित विधि से यह मंत्र जपे जाने पर पूर्ण भौतिक समृद्धि के साथ-साथ देवी के जाज्वल्यमान दर्शन का मार्ग भी प्रशस्त करता है। यह विलक्षण मंत्र अपने आपमें 'माया बीज', 'ज्ञान बीज', 'काम बीज' इन तीनों को संयुक्त करके चलता है। कुछ साधकों एवं पाठकों के मध्य यह भ्रम रहता है, कि क्या इस मंत्र के प्रारम्भ में ''ॐ'' प्रणव लगता है अथवा नहीं। शास्त्रों में स्पष्ट निर्देश है –

वाक् चैव काम शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते।
तदर्थेषु च मन्त्रेषु प्रणवं नैव योजयेत्।।

अर्थात् 'जिन मंत्रों के प्रारम्भ में ऐं, ह्रीं, क्लीं या श्री बीज लगा हो, उन मंत्रों के प्रारम्भ में प्रणव नहीं लगाना चाहिए'।

एक दृष्टि में : साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

दिनांक	स्थान	सम्पर्क
21-02-96	चण्डीगढ़	सुश्री भारती (फोन : 0172-690377)
25-02-96	बम्बई	श्री गणेश वटाणी (फोन : 022-8057110)
28-02-96	बैंगलोर	श्री गोवर्धन वर्मा (फोन : 080-6606052)
03-04 मार्च 96		होली शिविर (जोधपुर)
20-21-22-23 मार्च 1996		चैत्र नवरात्रि शिविर-गुड़गांवा (हरियाणा) श्री आजाद सिंह (फोन : 01272-340568)
14-04-96	अम्बाला कैन्ट	श्री कृष्णा गम्भीर (फोन : 0171-642044) श्री राजेश गुप्ता (फोन : 0171-444842) श्री सेलर ग्रीन नम्बरदार (फोन : 01731-76229)
18-19-20-21 अप्रैल 1996		जन्म दिन महोत्सव (भोपाल) श्री अरविन्द सिंह एवं डॉ0 साधना सिंह (फोन : 0755-554925)
28-04-96	बम्बई	श्री गणेश वटाणी (फोन : 022-8057110)
05-05-96	सहारनपुर(उ.प्र.)	श्री अनिल नन्दवानी (फोन : 0135-622087) श्री लीली कपूर (फोन : 0135 - 684291) श्री ईश्वर चंद (ईश्वर इलेक्ट्रिक वर्कस, गंगोह) श्री दिलबाग सिंह, रुड़की (फोन : 01332-70759)
18-19 मई 1996	मनाली (हि.प्र.)	श्री एम. आर. वशिष्ठ, पन्डोह (हि0 प्र0) श्री कर्मदत्त शर्मा, मण्डी (01905-23478) (PP) श्री एस. आर. ठाकुर, मनाली (फोन : 01901-22150) श्री एवं श्रीमती अशोक बन्टा, कन्चन बन्टा, मण्डी (फोन : 01905-23231)(PP)
29-05-96	बम्बई	श्री गणेश वटाणी (फोन : 022-8057110)

स्थानीय आयोजकों की तरफ से संचालित साधना शिविर

पति,
कुटुम्ब रक्षा,
अकाल मृत्यु निवारण
और
पूर्ण कुटुम्ब सुख
प्राप्ति के लिए . . .

वट सावित्री प्रयोग

जोधपुर में एक परिवार जिसमें माता, पुत्र तथा बहू थे, अत्यन्त तनावग्रस्त होकर गुरुदेव से मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उनके चेहरे देखने से वे काफी परेशान लग रहे थे, माता तथा बहू अत्यन्त व्यथित हो रहे थे, बहू की आंखें अक्सर नम हो जा रहीं थीं। वे लोग गुजरात से आये हुए थे। उनका पूरा परिवार अत्यन्त सौम्य व शालीन लग रहा था, लेकिन उनके व्यथित होने का कारण नहीं समझ में आ रहा था, एक-दो बार उनसे बात करने की चेष्टा भी की, परन्तु सफल नहीं हो पाया, उस परिवार का प्रत्येक सदस्य चुप तो था ही, कुछ पूछने पर भी कोई उत्तर नहीं
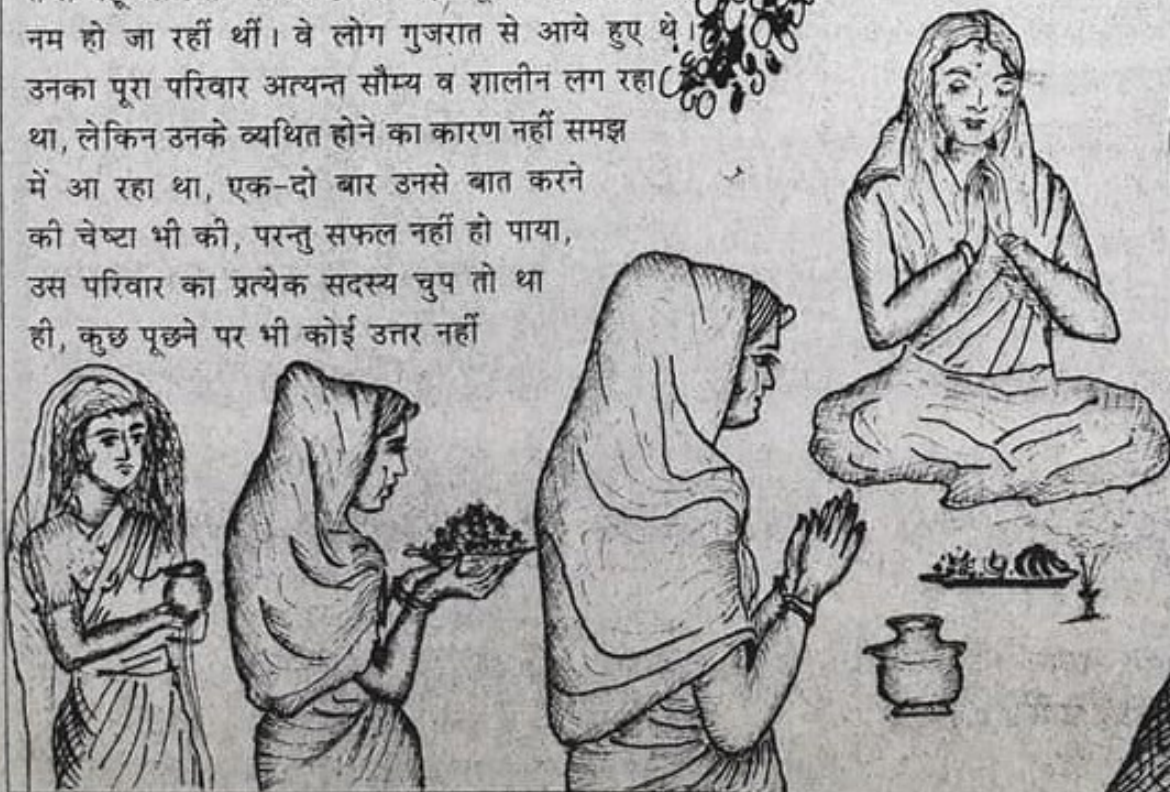
देता था।

— और गुरुदेव से मिलकर वह परिवार एक दिन चला गया; अत्यन्त व्यस्तता के कारण मैं उनसे मिल भी नहीं पाया। उन्हें न जानते हुए भी उनके विषय में जानने की आकांक्षा थी।

अचानक छ: महीने बाद उन्हें पुन: वापिस देख कर उनसे मिलने की इच्छा प्रबल हो उठी, इस बार उस परिवार के प्रत्येक सदस्य के चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। मैंने उनसे 'जय गुरुदेव' कर उनकी स्थिति के बारे में पूछा, तो उनकी मां बोली— ''पूज्य गुरुदेव की कृपा से हमारा पूरा परिवार बच गया।''

इसके अलावा उनके परिवार में एक दुःखद स्थिति यह भी थी— यदि पहला पुत्र उत्पन्न होता है, तो वह पांच या छः वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाता था; उनकी बहू को भी पहला बच्चा पुत्र है, जिसकी अवस्था छः वर्ष की होने को आई थी। घर में अत्यधिक तनाव की स्थिति बनने लगी थी, एक तरफ पुत्र की चिंता दूसरी तरफ पौत्र की, घर की स्थितियां डांवाडोल हो रही थीं . . .

बातचीत के दौरान उनसे ज्ञात हुआ, कि उनके परिवार में सिर्फ तीन लोग ही हैं, वे स्वयं, उनका पुत्र व उनकी बहू। **उनका परिवार एक अत्यन्त विकट अवस्था से गुजर रहा था। उनके विरोधियों ने उनके पुत्र को मार कर उनके वंश को समाप्त करने की धमकी दी थी।**

इसके अलावा उनके परिवार में एक दुःखद स्थिति यह भी थी— यदि पहला पुत्र उत्पन्न होता था, तो वह पांच या छ: वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाता था; उनकी बहू को भी पहला बच्चा पुत्र है, जिसकी अवस्था छ: वर्ष की होने को आई थी। घर में अत्यधिक तनाव की स्थिति बनने लगी थी, एक तरफ पुत्र की चिंता दूसरी तरफ पौत्र की, घर की स्थितियां डांवाडोल हो रही थीं, पिछली बार जब हम पूज्य गुरुदेव से मिलने आये थे, तो इसी समस्या से हम सभी अत्यन्त व्यथित थे, इसका कोई उचित व सटीक हल नहीं मिल रहा था।

पूज्य गुरुदेव से मिलने पर लगा, कि शायद अब कोई हल मिल जायेगा, पर समय ऐसा चल रहा था, कि किसी भी प्रकार से कोई राहत अनुभव नहीं हो रही थी।

पूज्य गुरुदेव ने अत्यन्त कृपा कर एक प्रयोग बताया और कहा— ''यह प्रयोग तुम्हारे लिए उपयुक्त है और इसका एकमात्र उद्देश्य 'कुटुम्ब रक्षा' और 'अकाल मृत्यु निवारण' है। यदि इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से किया जाय, तो यह अत्यन्त शीघ्र फलदायी है।'ऐसे ही प्रयोग के माध्यम से सावित्री सत्यवान को यम के पाश से छुड़ाकर वापस ला सकीं।'

इतना कह कर वह पूज्य गुरुदेव के प्रति अत्यन्त विनम्र भाव से बोली— 'यदि गुरुदेव से मिली नहीं होती, तो मेरा यह परिवार कब का समाप्त हो चुका होता। मेरा पौत्र अपनी छ: वर्ष की आयु पूरी कर चुका है और पूर्णत: स्वस्थ है, उसे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई और मेरे पुत्र के पीछे जो लोग पड़े थे, वे सब शांत हो गये हैं तथा अब मेरे पुत्र से क्षमा मांग कर सहायतार्थ प्रस्ताव भी दिया है।'

उसकी यह बात सुन मैं भी गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हो उठा, कि अत्यन्त सामान्य रहकर भी वे न जाने कितनों का कल्याण कर देते हैं।

इसके बाद एक दिन गुरुदेव से साधारण सी चर्चा में ही पूछा बैठा— वट सावित्री प्रयोग क्या है? इसके द्वारा क्या सम्भव है तथा इसे किस प्रकार से सिद्ध कर सकते हैं?

पूज्य गुरुदेव ने उत्तर दिया — 'यह तो वैसा ही

प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर सावित्री यम के पाश से सत्यवान को बचा कर ले आई थी। जिस दिन सावित्री सत्यवान को लेकर आई थी, वह दिन 'वट सावित्री दिवस' के नाम से मान्य हुआ।'

ऊपर तो मैंने संतप्त परिवार का एक ही उदाहरण दिया है, जबकि वर्तमान समय में प्रायः सभी परिवारों में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे परिवार का प्रत्येक व्यक्ति छुटकारा चाहता है और गृहस्थ सुख का आनन्द प्राप्त करना चाहता है; परन्तु इन समस्याओं के कारणों से वह इसका सुख प्राप्त नहीं कर पाता—

- आज परिवार के आंतरिक क्लेशों के कारण आपसी सम्बन्धी ही एक दूसरे के विरोधी और खून के प्यासे हो जाते हैं।
- परिवार में एक अनचाहा सा तनाव सदैव व्याप्त रहता है।
- परिवार के सभी सदस्य व्यथित से रहते हैं।
- पति या पुत्र की रक्षा के लिए हर समय संशय की स्थिति बनी रहती है।
- न जाने कब कौन सी घटना घट जाये और वह घटना अकाल मृत्यु का कारण बन जाये।
- आंतरिक तनावों के कारण या घर में आपसी मतभेद के कारण परिवार में बिखराव की स्थिति बन जाती है।
- परिवार विखंडित हो रहा हो, तो यह प्रयोग सम्पन्न करना अत्यन्त ही लाभदायक है।

यह प्रयोग सम्पन्न करने पर घर के सदस्यों के बीच आपसी तारतम्यता बनने लगती है तथा उनकी मानसिकता में परिवर्तन आने लगता है, उनके मध्य प्रेम और सौहार्द का वातावरण उपस्थित होने लगता है, जिससे पूरा परिवार फिर से संगठित हो जाता है।

यह प्रयोग अत्यन्त उच्चकोटि का प्रयोग है, इस साधना को निम्न कामनाओं को लेकर कर सकते हैं —

1. पति या पुत्र की विरोधियों से रक्षा।
2. कुटुम्ब की पूर्ण रक्षा के लिए।
3. घर के किसी सदस्य की अकाल मृत्यु निवारण के लिए।
4. पूर्ण कुटुम्ब सुख प्राप्ति के लिए।

साधक इनमें से किसी एक कामना को लेकर भी साधना कर सकते हैं या इन सबके लिए साधना सम्पन्न कर सकते हैं। लेकिन साधक साधना सम्पन्न करें, तो पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और मानसिक एकाग्रता से करें, क्योंकि श्रद्धाहीन होकर प्रयोग सम्पन्न करना निष्फल होना है।

साधना विधि

1. साधना में आवश्यक सामग्री है '**5 काम्य गुटिका**', '**पूर्ण सिद्धि माला**' तथा '**पूर्णत्व प्राप्ति यंत्र**'।
2. यह एक दिवसीय साधना है।
3. यह साधना 17-5-96 को या किसी भी **बुधवार** को सम्पन्न कर सकते हैं।
4. साधक स्नान कर पूर्ण रूप से स्वच्छ होकर, उत्तराभिमुख बैठ कर साधना सम्पन्न करें।
5. साधक सफेद वस्त्र धारण करें।
6. पीला वस्त्र बाजोट पर बिछाकर यंत्र को स्थापित करें।
7. घी का दीपक प्रज्वलित करें।
8. यंत्र का पूजन करें। गुलाब के पुष्प ही चढ़ायें। जिस कामना हेतु यह प्रयोग सम्पन्न कर रहे हैं, वह कामना बोलें।
9. निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

ॐ श्रीं सावित्र्यै फट्

10. उसी दिन शाम को वट वृक्ष के पेड़ को मौली लपेटते हुए 5 परिक्रमा करें। परिक्रमा करते समय अपने हाथ में पांचों काम्य गुटिका रखें तथा प्रत्येक परिक्रमा पूर्ण होने पर एक काम्य गुटिका पेड़ की जड़ में रख दें।
11. शाम को ही या अगले दिन यंत्र व माला को चाहें, तो उसी पेड़ की जड़ में रख दें या नदी में प्रवाहित कर दें।
12. दूध का नैवेद्य अर्पित करें।

न्यौछावर पैकेट : 300/-

पत्रिका के जनवरी 1996 अंक में प्रकाशित नवरात्रि पर्व पर 'दुर्गा साधना' की प्रयोग विधि प्रस्तुत है।

दुर्गा साधना

दुर्गा साधना में आचार-विचार शुद्धि का महत्त्व ही सर्वाधिक होता है। साधक गण इस तथ्य का ध्यान पूरी साधना में बनाए रखें। स्त्री साधिकाएं भी इस विशेष साधना को अपनी शरीर-शुद्धि की विशिष्ट दशा को ध्यान में रख कर ही सम्पन्न करें। यदि वे बीच में ही रजस्वला हो जाएं, तो साधना को तत्काल स्थगित कर दें, इससे उन्हें खंडित होने का कोई दोष नहीं लगता है। इसके अतिरिक्त यदि संभव हो, तो भोजन केवल एक समय कोई हल्का शाकाहारी एवं स्वच्छता पूर्वक बनाया हुआ ही ग्रहण करें। शेष नियम वे ही जो सभी साधनाओं में समान रूप से होते हैं। (विशेष ज्ञान के लिए साधक गण 'दैनिक साधना विधि' नामक पुस्तक का अध्ययन कर सकते हैं) तथा दुर्गा के पूजन के लिए **''दुर्गार्चन''** ऑडियो कैसेट सुनकर भी पूजन कर सकते हैं।

इस साधना हेतु आसन, सामने बिछाया जाने वाला वस्त्र– पीले हों तथा दिशा उत्तर मुख हो। सर्वप्रथम आत्मशुद्धि, आचमन एवं आसन शुद्धि करें तथा एक ताम्रपात्र में **'बाणलिंग'** स्थापित करें, इसके चारों ओर आठ मंत्र सिद्ध **'पीठ चक्र'** स्थापित करें। यदि ताम्रपात्र छोटा हो, तो ये पीठ चक्र उस पात्र के बाहर भी गोल घेरे के रूप में वस्त्र पर स्थापित किए जा सकते हैं। इस सम्पूर्ण क्रम में बायीं ओर **'महासिंह गुटिका'** स्थापित करें। सर्वप्रथम बाणलिंग का पूजन कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प की पंखुड़ियों से करें।

ध्यान रखें, कि इस सम्पूर्ण साधना में तुलसी दल, गंगाजल, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, शंख तथा इसी प्रकार की अन्य वैष्णोद्भित साधना सामग्रियों का सर्वथा निषेध है। तदुपरांत आठ मंत्र सिद्ध पीठ चक्रों का भी इसी प्रकार पूजन करें। ये भगवती दुर्गा की आठ पीठ शक्तियों के प्रतीक हैं। इसके बाद महासिंह गुटिका का भी पूजन इसी प्रकार करें। यह पूजन प्रतिदिन करना है। संक्षिप्त पूजन के इस क्रम के समाप्त हो जाने के बाद घी का बड़ा दीपक जला कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का पांच माला मंत्र जप करें –

सिद्धि प्रदायक दुर्गा मंत्र

।। ॐ शं दुं शां शिव गौर्ये नमः।।

साधक गण कृपया ध्यान रखें, कि उपरोक्त मंत्र में प्रथम बीज 'शं' है, जबकि द्वितीय 'शां'। अतः उच्चारण के समय तदनुरूप स्पष्ट उच्चारण करें।

सम्पूर्ण नवरात्रि में प्रतिदिन सम्पन्न की जाने वाली इस साधना की प्रतिदिन की समाप्ति पर सम्पूर्ण पूजन की आरती अवश्य करें। यदि आपके पास भगवती दुर्गा का कोई चित्र हो, तो उसे मढ़वा कर साधना स्थल पर अवश्य रखें अथवा पत्रिका कार्यालय से संपर्क कर मंत्र सिद्ध चित्र भी प्राप्त कर लें।

साधना की समाप्ति के उपरांत नवमी की संध्या को इस साधना की सभी सामग्रियां विसर्जित कर दें। साधक यदि चाहें तो महासिंह गुटिका को विसर्जित न कर उसे धारण भी कर सकते हैं, किंतु एक माह पश्चात इसे भी विसर्जित कर दें।

इस वर्ष की चैत्र नवरात्रि हेतु पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से उनके तपः बल और सफलता के अशीर्वाद से संयुक्त यह साधना एक प्रकार से उनका वरदान ही है। साथ ही इस साधना हेतु हमें जो दुर्लभ साधना सामग्रियां उनके संन्यस्त शिष्यों की कृपा एवं उनकी अकथ साधना द्वारा चैतन्य कर प्राप्त हुई, उसके लिए हमें उनका भी कृतज्ञ होना चाहिए। वास्तव में इस प्रकार की साधना सामग्रियां जो पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित की जाती हैं; वह मंत्र, जो पत्रिका के पत्रों के माध्यम से सार्वजनिक किया जाता है, पूज्य गुरुदेव का गुप्त आशीर्वाद ही तो है। इसके उपरांत साधक या साधिका को अल्प परिश्रम के द्वारा केवल एक प्रकार से औपचारिकता का पालन करना ही तो शेष रह जाता है।

अंत में एक तथ्य मैं स्पष्ट करना आवश्यक समझता हूं, कि प्रस्तुत साधना न तो दुर्गा प्रत्यक्ष साधना है, न ही दुर्गा साधना का सम्पूर्ण स्वरूप, क्योंकि भगवती दुर्गा का सम्पूर्ण स्वरूप तो केवल गुरु कृपा से ही बोधगम्य होता है।

श्रीदुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।। 1 ।। जय अम्बे0

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको।। 2 ।। जय अम्बे0

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। 3 ।। जय अम्बे0

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।। 4 ।। जय अम्बे0

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।। 5 ।। जय अम्बे0

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती।। 6 ।। जय अम्बे0

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। 7 ।। जय अम्बे0

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।। 8 ।। जय अम्बे0

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू।। 9 ।। जय अम्बे0

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।। 10 ।। जय अम्बे0

भुजा आठ अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। 11 ।। जय अम्बे0

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) माल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। 12 ।। जय अम्बे0

(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै।। 13 ।। जय अम्बे0

इस प्रस्तुत साधना का महत्त्व यही है, कि इसके माध्यम से साधक अपने दैनिक जीवन की विसंगतियों को समाप्त कर अधिक से अधिक दुर्गामय बनने की क्रिया में संलग्न हो जाता है तथा इसी प्रकार से कालांतर में गुरु कृपा का अधिकारी बन भगवती दुर्गा के जाज्वल्यमान स्वरूप का दर्शन कर अपने जीवन को सार्थक कर लेता है।

आप सभी साधकों को पूज्य गुरुदेव ने विशिष्ट आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा है– ''यदि आप अपने आपको मेरा शिष्य मानते हैं, तो पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना करें, निश्चय ही जगदम्बा आपको मनोवांछित प्रदान करेंगी ही।''

इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।

जीवन में पहली बार आपके लिए

इस मास का

श्रेष्ठतम उपहार

प्रत्येक शिष्य साधक और अध्येता को,
जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,
सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त

एक अद्वितीय उपहार

देवी-देवता वशीकरण यंत्र

आप क्या करें—

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें. . . अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजनों का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 360/- रुपये दो वर्षीय पत्रिका सदस्यता शुल्क + 30/- रुपये वी.पी.पी. चार्ज इस प्रकार मात्र 390/- की वी.पी.पी. से **''देवी-देवता वशीकरण यंत्र''** भेज देंगे, और यह आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी.पी.पी. छूटने पर आपके दोनों मित्रों को अगले महीने से एक-एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर रसीद भेज दी जायेगी।

नोट : इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।

(मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रारम्भिक पृष्ठों पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

श्री विश्वनाथ यादव

तांत्रिक मंत्र हैं क्या ??

तांत्रिक मंत्र
शीघ्र मनोरथ पूर्ति की तीव्रतम उदात्त प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से असम्भव को भी या विधाता के द्वारा अनुल्लेखनीय कार्य को भी सम्भव किया जा सकता है। यह अन्य मंत्रों की अपेक्षा निश्चित फलप्रद एवं तीव्र प्रभावी होने के कारण सबल और सशक्त साधकों के द्वारा ही अनुष्ठेय माना जाता है।

शास्त्रों में 'तंत्र' शब्द बहुअर्थों में प्रयुक्त हुआ है। साधारणत: तंत्र कहने से आगम, निगम, यामल आदि शास्त्र समझा जाता था। बाद में रचित आगम शास्त्रों के संग्रह को तंत्र नाम से अभिहित किया गया।

शिव मुख से नि:सृत 28 तंत्रों को **'मूल आगम'** कहते हैं। शिव शक्ति पार्वती के मुख से नि:सृत तंत्रों को **'निगम'** कहते हैं।

शिव मुख नि:सृत 28 तंत्र इस प्रकार हैं — 1. कामिक, 2. योगज, 3. चिन्तय, 4. कारण, 5. अजित, 6. दीप्त, 7. सूक्ष्म, 8. सहस्त्र, 9. अश्मत, 10. सुप्रभेद, 11. विजय, 12. नि:श्वास, 13. स्वयम्भू, 14. अनल, 15. रौख, 16. वीर, 17. मुकुट, 18. जय, 19. चन्द्रसंहित, 20. मुख बिम्ब, 21. प्रोद्गीत, 22. ललित, 23. सिद्ध, 24. संतान, 25. शाव्वेक्ति, 26. वातुल, 27 किरण, 28 पारमेश्वर।

इसी तरह 'निगम' में भी बहु मंत्रों का प्रयोग होता रहा है और इसी आगम व निगम तंत्र रूपी मंत्रों को **'तांत्रिक मंत्र'** कहते हैं।

'वैदिक मंत्र' में मंत्र शब्द का बहु प्रयोग होने पर भी 'तांत्रिक मंत्र' के अर्थ में उनका प्रयोग होता रहा। मंत्र शास्त्र का अर्थ तंत्र से ही लिया जाता है। तंत्र में प्रयुक्त बहुत सी देव-देवियां वेद की ही देव-देवियों के अनुरूप हैं। नृसिंहतापनी, रामतापनी, नारायणोपनिषद, मैत्रायणी संहिता आदि देव-देवियों की उपासना के लिए आवश्यक हैं। यह उपासना वेदों की अन्यान्य उपासना से स्वतंत्र होने पर भी तांत्रिक उपासना के अनुरूप है। इस पर भी तांत्रिक उपासना के मूल

सूत्र वेद मूलक स्मृति नहीं हैं।

बहुत से प्राचीन विद्वानों ने तंत्र को श्रुति माना है और यदि इसे किसी '**शिव**' या '**महादेव**' नामक मनुष्य ने रचा होता, तो भारतवर्ष के वैदिक व तांत्रिक सम्प्रदाय के आचार्यगण इसे निर्विवाद रूप में ग्रहण कर कठोर साधना में लिप्त नहीं होते।

स्वयं शिव ने कौशिक, कश्यप, भारद्वाज, अत्रि तथा गौतम इन पांच ऋषियों को आगम मंत्र से दीक्षित किया था और ये ही पांच ऋषि 'आदि शैव' नाम से प्रसिद्ध हुए। वैदिक भारत में ये पांच ऋषिगण ही तांत्रिक साधना के प्रथम प्रवर्तक व प्रचारक हुए तथा बाद में जब जनसाधारण में वैदिक कर्म के प्रति आलस्य देखा गया, तब उन्होंने ही तांत्रिक साधना के विभिन्न पथों को दिखला कर उच्छृंखल मनुष्यों को सुश्रृंखल करने की चेष्टा की। उन्हीं की चेष्टा के फलस्वरूप तांत्रिक सम्प्रदाय का अभ्युदय हुआ। बाद में यही सम्प्रदाय शैव, शाक्त, सौर, गणपत्यादि सम्प्रदायों में विभक्त हुआ।

आयुर्वेद की औषधियों के सेवन से दुःसाध्य व्याधियां दूर होती हैं और उसी आयुर्वेद शास्त्र में अनेक प्रकार के मंत्रों व तंत्रों की प्रयोग-विधि देखी गई है, अतः मंत्र और आयुर्वेद की अलौकिक शक्ति का प्रभाव प्रत्यक्ष सिद्धि के रूप में प्रमाण स्वरूप स्वीकृत है। मंत्र की इस अलौकिक शक्ति की बहु कथा वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि ग्रंथों में विभिन्न रूपों में वर्णित है।

आयुर्वेद की औषधियों के सेवन से दुःसाध्य व्याधियां दूर होती हैं और उसी आयुर्वेद शास्त्र में अनेक प्रकार के मंत्रों की प्रयोग-विधियां देखी गई हैं, अतः मंत्र और आयुर्वेद की अलौकिक शक्ति का प्रभाव प्रत्यक्ष सिद्धि के रुप में प्रमाण स्वरुप स्वीकृत है। मंत्र की इस अलौकिक शक्ति की बहु कथा वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि ग्रंथों में विभिन्न रुपों में वर्णित है।

वेद विद्वेषी दार्शनिक बौद्धों की असाधारण प्रतिभा जब धीरे-धीरे कम होने लगी, तो जनसाधारण की उनमें अनास्था बढ़ने लगी, तब उनके ही एक सम्प्रदाय ने काष्ठ तथा पाषाण आदि से निर्मित प्रतिमाओं के माध्यम से जनसाधारण को आकर्षित करने की चेष्टा की। तंत्र कार्यों का प्रत्यक्ष फल देखकर बौद्धगण आत्म-रक्षा के लिए तंत्र साधना में व्रती हुए और इस तरह उन्होंने जो समस्त तंत्र रचनाएं कीं '**बौद्ध तंत्र**' के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

मनुष्य की बुद्धि, मेधा और प्रतिभा की जब धीरे-धीरे ह्रास होने लगी, तब श्रुति के भरोसे न रह 'संग्रह ग्रंथों' की सृष्टि हुई। इन सभी संग्रह ग्रंथों में तांत्रिक सम्प्रदायों ने अपने-अपने सम्प्रदाय के दार्शनिक मत की भी व्याख्या कर डाली।

क्या मंत्र द्वारा सिद्धि प्राप्ति सम्भव है?

केवल मंत्र द्वारा सिद्धि-लाभ पतंजलि के योगदर्शन में भी वर्णित है –

"जन्मौषधि मंत्र तपः समाधिजा सिद्धयः"

(कैवल्यपाद, प्रथम सूत्र)

"स्वाध्यायादिष्टे देवता संप्रयोगः"

(साधनापाद 44 सूत्र)

इस सूत्र के भाष्य और मंत्र द्वारा इष्ट देवता के साक्षात्कार भी समर्थित हैं।

आज भी मंत्रसिद्ध योगी-संन्यासियों की अलौकिक शक्ति देख मनुष्य विस्मित व स्तंभित रह जाता है। प्राचीन ग्रंथों में प्राप्तिकारक मंत्र द्वारा सिद्धि-लाभ की घटनाएं वर्णित हैं।

आज तांत्रिक सम्प्रदाय लुप्तप्राय है और इसे अप्रामाणिक भी कहा जाने लगा है, परन्तु तांत्रिक सम्प्रदाय लुप्त होने पर भी अभी ग्रंथ लुप्त नहीं हुए हैं।

सम्प्रदाय लुप्त होने पर ग्रंथ ही उस लुप्त सम्प्रदाय का पुनरोद्धार कर सकते हैं।

राशिफल

मेष : जो कार्य आप करना चाहते हैं, करें, समय अनुकूल है। मित्रों से मतभेद हो सकता है, संयम बरतें। सहयोगियों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। कारोबारी स्थिति अनुकूल रहेगी। स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। मन में उद्विग्नता रहेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। संतान की ओर से मामूली तनाव रहेगा। धार्मिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। क्रय-विक्रय में उतावली न करें। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''बगलामुखी साधना'' करें।

वृष : मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। मानसिक तनाव होगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। व्यर्थ में धन व्यय होगा। व्यर्थ की भागदौड़ से खिन्नता होगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। दुर्घटना योग प्रबल रहेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। आकस्मिक संकट की स्थिति में संयम बरतें। अदालती विवाद उभरेंगे। सम्बन्धियों से सहयोग की आशा करना व्यर्थ रहेगा।

मिथुन : मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। पड़ोसियों से मतभेद की स्थिति में संयम बरतें। व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें। कारोबार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने का कोई योग नहीं। किसी भी मामले में उदासीनता न बरतें। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाकर चलें। प्रेम प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी। वैवाहिक योगों में अड़चनें आने से खिन्नता होगी। ''भाग्योन्नति प्रयोग'' सम्पन्न कर अनुकूलता प्राप्त करें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कर्क : सुख-सुविधा के साधनों का विकास होगा। कारोबारी मामलों में शिथिलता बरतने से आर्थिक हानि सम्भव। यात्रा में सावधानी बरतें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। प्रेम प्रसंगों में अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। परिवार के किसी सदस्य को लेकर तनाव रहेगा। दो लाभ-चार हानि की स्थिति बनेगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''भुवनेश्वरी साधना'' करें। आकस्मिक विवादों से बचें। जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा ना करें।

सिंह : समय सामान्य चल रहा है, अतः सूझ-बूझ के साथ कार्य करें। नये अनुबंधों पर विचार कर सकते हैं। पुराने सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे। कारोबार विस्तार के विषय में संयम बरतें। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त करेंगे। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। यात्रा योग सामान्य रहेगा। राज्य पक्ष की ओर से अड़चनें आने से तनाव रहेगा। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''मातंगी साधना'' करें।

कन्या : पारिवारिक मामलों की उपेक्षा करने से अशांति उत्पन्न होगी। जीवनसाथी से मतैक्य बनाकर चलें। समाज में प्रतिष्ठा को बनाकर रखें। सोचा हुआ कार्य पूर्ण होने से प्रसन्नता होगी। सोच-समझ कर लिए गए निर्णय अनुकूल सिद्ध होंगे। चिकित्सा व्ययभार में वृद्धि होगी। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल एवं सफलतादायक रहेगा। कारोबारी स्थिति में अनुकूलता प्राप्त होगी। प्रेम प्रसंगों में सावधानी बरतें। वाहन प्रयोग करते समय हड़बड़ाहट न करें। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''हनुमान साधना'' करें।

तुला : मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। ऋण के लेन-देन से बचें। स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी। आध्यात्मिक भावों का विकास होगा। आपके सहयोग से किसी का रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। यात्रा योग सामान्य। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''सर्व सिद्धि प्रदायक गणपति साधना'' करें। जीवन साथी से अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक : कारोबार का विस्तार होने से आर्थिक स्थिति में अनुकूलता प्राप्त होगी। पड़ोसियों से मतभेद की स्थिति में संयम बरतें। राज्यपक्ष आपके अनुकूल रहेगा। अदालती मामले आपके अनुकूल सिद्ध होंगे। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग क्षीण। कला जगत के व्यक्ति मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। शत्रु पक्ष में होकर विश्वासघात करेगा। सावधानी बरतना ही श्रेयष्कर होगा। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''महालक्ष्मी साधना'' करें। पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा।

धनु : अनावश्यक व्यय से बचें। प्रेम विवाह सामान्य रहेंगे। मित्रों के सहयोग से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। अदालती मामले उभरेंगे। राज्यपक्ष से बाधाकारी योग रहेगा। स्थानान्तरण के मामलों में उदासीनता न बरतें। भूमि के क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। कारोबार परिवर्तन के विचार बनेंगे। बेरोजगार वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल। योग आदि में रुचि होगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''यक्षिणी साधना'' करें।

मकर : साधनात्मक दृष्टि से यह समय आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। ग्रह शांति का उपाय करना हितकर होगा। संतान की ओर से समाज में प्रतिष्ठा गिरेगी। किसी भी प्रकार की लापरवाही अहितकर होगी। यात्रा में सावधानी बरतें। नये सम्पर्क आगे चलकर लाभप्रद सिद्ध होंगे। कारोबारी यात्रा में लाभ होगा। सुखद समाचार आने से प्रसन्नता होगी। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''नवग्रह बाधा निवारण प्रयोग'' करें।

कुम्भ : जो कार्य हाथ में ले रखा है, पहले उसे पूरा करें। साझेदारी के विषय में लापरवाही न बरतें। किसी से सहयोग की आकांक्षा करना व्यर्थ सिद्ध होगा। मांगलिक कार्यों में भागदौड़ सम्भव होगी। जीवनसाथी की उपेक्षा न करें। परिवार में मेलजोल बनाकर रहें। अनुकूलता प्राप्ति हेतु ''सौन्दर्योत्तमा अप्सरा साधना'' करें।

मीन : स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं रहेगा। चिकित्सा व्यय में वृद्धि होगी। अपने व्यवसाय में पूरा ध्यान दें। समय पर लिया गया निर्णय लाभप्रद सिद्ध होगा। आर्थिक स्थिति में सामान्यतः अनुकूलता रहेगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। संतान की ओर से अनुकूल समाचार मिलेगा। धार्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग प्रबल। मानसिक तनाव से बचने का प्रयास करें। भूमि विवादों को लेकर चिंता रहेगी। अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा। अनुकूलता प्राप्ति के लिए ''भुवनेश्वरी साधना'' करें। कारोबारी यात्रा फलप्रद रहेगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

01/03/96	फाल्गुन शुक्ल पक्ष 11	आमलकी एकादशी
04/03/96	फाल्गुन शुक्ल पक्ष 14	होलिका दहन
06/03/96	फाल्गुन कृष्ण पक्ष 01	सर्वार्थ सिद्ध योग
10/03/96	फाल्गुन कृष्ण पक्ष 05	श्री रंग पञ्चमी
15/03/96	फाल्गुन कृष्ण पक्ष 11	पापमोचनी एकादशी
20/03/96	चैत्र शुक्ल पक्ष 01	नवरात्रि आरम्भ
28/03/96	चैत्र शुक्ल पक्ष 09	रामनवमी
01/04/96	चैत्र शुक्ल पक्ष 13	अनंग त्रयोदशी
03/04/96	चैत्र शुक्ल पक्ष 15	हनुमान जयंती
08/04/95	वैशाख कृष्ण पक्ष 05	सर्व सिद्धि योग
14/04/96	वैशाख कृष्ण पक्ष 11	वरुथिनी एकादशी
16/04/96	वैशाख कृष्ण पक्ष 14	सर्वार्थ सिद्धि योग
20/04/96	वैशाख शुक्ल पक्ष 03	अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती
21/04/96	वैशाख शुक्ल पक्ष 04	श्री गुरु जन्मोत्सव
25/04/96	वैशाख शुक्ल पक्ष 07	गुरु पुष्य योग

नवीनतम प्रकाशन . . .

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
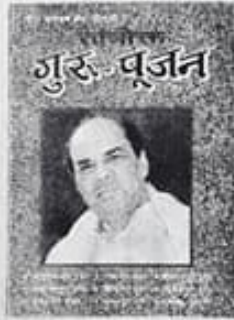
पूज्यपाद गुरुदेव

"डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली जी"

द्वारा आशीर्वाद युक्त अनमोल ग्रंथ
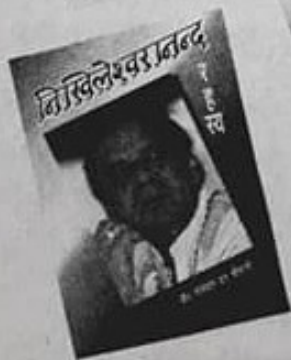
महाकाली साधना	15/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	15/-
धनवर्षिणी तारा	15/-
दीक्षा संस्कार	15/-
सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ-विधान	15/-
आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के 100 स्वर्णिम सूत्र	30/-
तांत्रोक्त-गुरु पूजन	30/-
प्रत्यक्ष-हनुमान सिद्धि	40/-
मातंगी साधना	40/-
निखिलेश्वरानन्द चिन्तन	40/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-

विशेष योजना : शिवरात्रि व होली के उपलक्ष में 300/- तक के साहित्य मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

ऐसा हो ही नहीं सकता, कि आप भद्रकाली प्रयोग करें और आपका कार्य उसी क्षण ही सम्पन्न न हो . . . एक गोपनीय और अत्यन्त दुर्लभ प्रयोग . . .

भद्रकाली प्रयोग

काली साधना अपने आपमें अद्वितीय एवं दुर्लभ साधना है, सभी साधक इसे सम्पन्न करने के लिये सतत् प्रयासरत रहते हैं। यदि साधक संन्यासी है, तो वह अपने आभ्यान्तरिक उत्थान, साधनात्मक श्रेष्ठता को प्राप्त कर पाता है; यदि वह गृहस्थ साधक है, तो इसे सम्पन्न कर वह अपने भौतिक जीवन की समस्त आपदाओं को समाप्त कर, पूर्ण समृद्धिमय, ऐश्वर्यमय, शत्रु रहित हो बाधाओं का निवारण कर, कष्ट, पीड़ा, दुःख, तनावों से मुक्ति पाता है। अतः स्पष्ट है, कि यह साधना जितनी संन्यासियों के लिये महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण गृहस्थ साधकों के लिये भी है।

'मार्कण्डेय पुराण' में काली की उत्पत्ति भगवती जगदम्बा के ललाट से मानी गई है। यद्यपि काली के असंख्य रूप हैं, फिर भी साधकों द्वारा प्रमुख रूप से काली के तीन स्वरूप 'भद्रकाली', 'श्मशान काली' तथा 'महाकाली' की साधना की जाती है। वेदों में भी काली की स्तुति भद्रकाली के नाम से की गई है।

काली अत्यन्त तीक्ष्ण साधना मानी गई है, जबकि ऐसा नहीं है;

काली की स्तुति, साधना तीक्ष्ण व सौम्य दोनों रूपों में की जाती है, संन्यासी इसे शीघ्र सम्पन्न करने के लिये इसकी तीक्ष्ण प्रक्रिया अपनाते हैं, जबकि गृहस्थ साधकों के लिये सौम्य प्रक्रिया विख्यात है, जिसे अपनाकर वे आसानी से मनोवांछित प्राप्त कर सकते हैं।

काली की महाकाल की शक्ति के रूप में भी प्रार्थना करते हैं; काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न करने से साधक में शक्ति का संचार होता है। काली अपने दोनों हाथों में अभय और वर मुद्रा धारण की हुई हैं अर्थात् वे अपने शुद्ध-सात्विक साधक को निर्भयता और वर प्रदान कर उसकी अभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं। काली से वर प्राप्त कर साधक में दृढ़ता, निर्भयता तथा साहस और संकल्प शक्ति का उद्भव होता है।

समाज में व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता ही है, वह हर क्षण आकस्मिक संकट, बाधाओं और तनावों से जूझता रहता है; कभी-कभी असफल होने पर वह इन सबसे अत्यधिक दुःखी और तनावग्रस्त होकर जीवन जीने पर मजबूर

हो जाता है, वह इन सबसे बच निकलने के लिए अनेकों प्रयास करता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन तनाव में फंसता ही जाता है। **यदि साधक विभिन्न उपायों के साथ ही साथ भद्रकाली प्रयोग का सहारा लेता है, तो इन विषम परिस्थितियों से मुक्ति आसानी से प्राप्त कर सकता है। भद्रकाली अपने सौम्य स्वरूप में विद्यमान रहकर साधकों की मनोकामनाओं की पूर्ति करती हैं।**

काली के करुणामय स्वरूप की रामकृष्ण परमहंस स्तुति करते थे। काली अपने भक्तों पर अत्यन्त करुणा और कृपा करती हुई विराजमान रहती हैं; अत: काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न कर साधक सभी आपदाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

यह एक भ्रांति है, कि साधना में यदि न्यूनता रह जाती है, तो साधक को विपरीत परिणाम भोगने को मिलते हैं। लेकिन गृहस्थ साधकों के लिये साधनाओं की सौम्य प्रक्रिया को ही प्रकाशित किया जाता है, जिससे साधक का किसी प्रकार का कोई अनिष्ट नहीं होता, वह अत्यन्त निर्भयता से यह साधना सम्पन्न कर सकता है। पूर्ण श्रद्धा से करने पर किसी प्रकार का कोई विपरीत फल उसे नहीं भोगना पड़ता है, वैसे भी मां काली के ममतामयी स्वरूप की साधना से साधक को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं उठानी पड़ती है।

भद्रकाली प्रयोग सम्पन्न करने का प्रभाव तत्क्षण दिखाई देता है। कभी-कभी तो साधना काल में, साधक जिस कार्य हेतु साधना सम्पन्न करने बैठता है, पूर्ण होता दिखाई देता है, लेकिन यह ध्यान रखना होगा, कि वह साधना बीच में ही न समाप्त करे, वरन उसे पूर्णता के साथ सम्पन्न करे।

प्रयोग विधि

- प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री है— '**भद्रकाली यंत्र**' एवं '**काली चित्र**'।
- यह तीन दिवसीय साधना है।
- इसे **13/5/96** को प्रारम्भ कर **15/5/96** को समाप्त करें या किसी भी एकादशी से प्रारम्भ करें।
- साधक सफेद वस्त्र धारण कर साधना में बैठें।
- चित्र और यंत्र को स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर स्थापित करें।
- संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर यंत्र व चित्र का पूजन सम्पन्न करें तथा जिस कार्य के लिये साधना कर रहे हों, उसे पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

> भद्रकाली अपने सौम्य स्वरुप में विद्यमान रहकर साधकों की मनोकामनाओं की पूर्ति करती हैं। काली के करुणामय स्वरुप की ही रामकृष्ण परमहंस स्तुति करते थे।
>
> मां काली अपने भक्तों पर अत्यन्त ममता और कृपा करती हुई विराजमान रहती हैं; अतः काली के इस स्वरुप की साधना सम्पन्न कर साधक विजय प्राप्त कर सकता है, सभी आपदाओं पर।

ध्यान

भीमां भीमोग्रदंष्ट्राञ्जन गिरि विलसत्तुल्य कान्तिं दशास्यां।
त्रिंशल्लोलाक्षि मालां दशललितभुजां पंक्ति पादांस्तथैव।।
शूलं बाणं गदां वै धनुरथदधतीं शंख चक्रे भुशुण्डीं।
वन्दे कालीं कराग्रे परिधमसि युतं तामसीं शीर्षकं च।।

- काली की प्रमुख नवशक्तियों का पूजन करें। यंत्र पर चारों ओर नौ कुंकुम की बिन्दियां लगाते हुए निम्न क्रम उच्चारण करें—

ॐ जयायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ अजितायै नमः।
ॐ अपराजितायै नमः।
ॐ नित्यायै नमः।
ॐ विलासिन्यै नमः।
ॐ दोग्ध्र्यै नमः।
ॐ अघोरायै नमः।
ॐ मंगलायै नमः।

- निम्न भद्रकाली मंत्र का नित्य 51 बार उच्चारण करें—

मंत्र

ॐ भं भद्रायै नमः आगच्छ भं ॐ

- खीर का भोग लगायें तथा स्वयं वह भोग ग्रहण करें।
- तीसरे दिन साधना समाप्ति के बाद यंत्र व चित्र को नदी में विसर्जित कर दें।

जब भी किसी विशेष कार्य के लिये जाना हो, तो उपरोक्त मंत्र का सात बार उच्चारण कर, उस कार्य के लिये जायें, सफलता मिलेगी।

साधना सामग्री न्यौछावर— 300/-

आँखिन देखी

पिछले दिनों सिद्धाश्रम साधक परिवार की गतिविधियां पूरे भारतवर्ष में रहीं और अधिकतर साधकों ने जिस मनोयोग पूर्वक कार्य किया और जिस लगन और तत्परता के साथ किया, उनकी कोई तुलना ही नहीं है। **भोपाल में डॉ. साधना सिंह और श्री अरविन्द सिंह** ने निश्चय किया है, कि वे प्रत्येक महीने भोपाल में साधना शिविर लगायेंगे, जिससे कि एक नई चेतना पैदा हो सके और 17.12.95 को उन्होंने महालक्ष्मी साधना शिविर लगाया जो पूर्ण रूप से सफल रहा। उसमें केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री सुरेश पचौरी जी भी पधारे और उन्होंने अपने भाषण में कहा— *"डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी के दर्शन कर मैं धन्य हो गया हूं। मैंने जीवन में हजारों संन्यासी, गुरु और उच्चकोटि के विद्वान देखे हैं, मगर जो विद्वता, जो तेजस्विता, जो सौम्यता, जो उच्चता पूज्य गुरुदेव में देखी है, वह अपने आपमें अद्वितीय है, उसकी कोई तुलना ही नहीं है।"'* इसी शिविर में उन्होंने गुरुदेव को सम्मान पत्र भी प्रदान किया, जिसमें उन्होंने यह बताया है, कि वास्तव में तो पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में एक चेतना पुञ्ज साकार हो रहा है।

पूज्य गुरुदेव को सम्मान पत्र देते हुए रक्षा राज्य मंत्री श्री पचौरी

✿ 21.12.95 को बैंगलोर में 'श्री वेंकटेश्वर महालक्ष्मी साधना' सम्पन्न हुई, जिसमें श्री गोवर्धन वर्मा और उनकी पत्नी तथा परिवार वालों ने सक्रिय सहयोग दिया। इसके अलावा भी वहां के कई गणमान्य व्यक्तियों ने इस शिविर में भाग लेकर इस बात को स्पष्ट किया, कि जिस प्रकार से उत्तर भारत में साधना शिविरों की श्रृंखला और सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तार हो रहा है, ठीक उसी प्रकार से दक्षिण भारत में भी इस प्रकार की ललक है, चेतना है और वे इस प्रकार के दिव्यतम ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन को पूर्णता और सफलता प्रदान करने के इच्छुक हैं। वास्तव में यह शिविर सफल रहा।

श्री गणेश बढ़ाणी

✿ बम्बई में तो श्री गणेश बढ़ाणी पूर्ण रूप से समर्पित साधक हैं या यों कहें, कि वे सिद्धाश्रम साधक परिवार के एक अंग बन चुके हैं, 24.12.95 को उन्होंने 'धन-धान्य प्रदायक लक्ष्मी साधना शिविर' सम्पन्न किया और उसमें विशाल जनसमूह उमड़ पड़ा। ऐसा लगा, कि जैसे तिल रखने को भी जगह नहीं है। पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा— हमें प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना है और जीवन के लिए जो आवश्यक मानवीय मूल्य हैं, उनको प्रतिष्ठा स्थापित कर स्थिरता प्रदान करनी है। इसके साथ ही साथ गणेश बढ़ाणी जैसे योग्य साधक ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग करके इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग दिया और बराबर सहयोग देते जा रहे हैं।

✿ बड़ौदा के **श्री प्रवीण जोशी** एक परिचित नाम हैं और उनकी इच्छा थी, कि बड़ौदा में चेतना जाग्रत की जाय। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रख करके उन्होंने 25 और 26 दिसम्बर 95 को 'महालक्ष्मी साधना शिविर' का आयोजन किया और दूर-दूर से गुजरात के लोगों ने इसमें भाग लिया। यहां तक कि बम्बई और अन्य प्रांतों से भी लोग आये। पूरा स्थान अपने आपमें खचाखच भरा हुआ था और ऐसा लग रहा था, कि जैसे जनसमुद्र उमड़ रहा हो। प्रवीण जोशी के साथ श्री परमार और अन्य लोगों ने भी अत्यधिक उत्साह के साथ कार्य करते हुए यह निश्चय किया, कि हम हर महीने गुजरात के किसी न किसी स्थान पर इस प्रकार के शिविर का आयोजन करेंगे और पूरे गुजरात में एक चेतना जाग्रत करेंगे।

श्री प्रवीण जोशी

उत्तर भारत में यमुनानगर (हरियाणा) में श्री शेखर ग्रोवर ने निश्चय किया, कि शिविर का आयोजन हो और उनके प्रयासों से ही 29.12.95 को 'महालक्ष्मी साधना शिविर' सम्पन्न हुआ, जिसमें **श्री अनिल गुप्ता, श्री शेखर ग्रोवर, श्री कृष्ण गंभीर** और अन्य लोगों ने आगे बढ़ कर कार्यक्रम को संभाला और आसपास के क्षेत्रों में जो चेतना जाग्रत की, उसकी कोई मिसाल नहीं है। वास्तव में उन्होंने एक श्रेष्ठतम कार्य सम्पन्न किया है और जल्दी ही वे 'अम्बाला' में शिविर लगाने का निर्णय ले रहे हैं।

1 जनवरी 96 नया वर्ष का प्रारम्भ . . . और नये वर्ष के प्रारम्भ में पूरे भारतवर्ष के साधकों की इच्छा थी, कि हम पूज्य गुरुदेव से मिलें और उनकी इच्छा को पूर्णता देने के लिए पूज्य गुरुदेव ने 'राजयोग दीक्षा' का कार्यक्रम रखा। राजयोग दीक्षा सर्वाधिक कठिन, दुष्कर और अत्यधिक आश्चर्यचकित कर देने वाली दीक्षा है। उस हॉल को, जिस हॉल में यह कार्यक्रम संचालित हो रहा था, तिल रखने को भी जगह नहीं थी। साधक हॉल से बाहर बैठे हुए भी साधना करने के इच्छुक थे, फिर भी कई साधकों की इच्छा अधूरी रह गई, क्योंकि वे स्थान नहीं पा सके और उसके बाद पूरे दस दिनों तक तांता लगा रहा, कि वे राजयोग दीक्षा प्राप्त करें। यह इस बात का सूचक है, कि लोग किस प्रकार से जागरूक हैं, चेतनाशील हैं और उन्नति की ओर अग्रसर हैं। इस शिविर में **श्री विजय आर्य** तथा **श्री सुभाष शर्मा** ने आगे बढ़कर जिस प्रकार से पूरे कार्यक्रम का आयोजन किया, वह अपने आपमें बेमिसाल है और भोजन की व्यवस्था तो नये वर्ष के अवसर पर ठीक वैसी ही थी, जैसा छप्पन भोग हो। लोगों ने एहसास किया, कि वास्तव में यह छप्पन भोग की व्यवस्था अपने आपमें अद्वितीय और राजयोग के अनुरूप ही है। कई लोगों को उसी समय, राजयोग दीक्षा की लेते ही अनुभूतियां हुईं और उन्होंने अपनी अनुभूतियां व्यक्त भी कीं।

श्री रमेश प्रजापति

श्री अनिल नन्दवानी काफी समय से प्रयत्नरत थे, कि देहरादून में भी एक साधना शिविर सम्पन्न हो और पिछले साल भर से यह कार्यक्रम टल रहा था। इस बार 'मकर संक्रान्ति' के अवसर पर 14.1.96 को देहरादून में उच्चकोटि का साधना शिविर सम्पन्न हुआ और उसमें सैकड़ों साधकों ने भाग लिया। **श्री अनिल नन्दवानी, लिलि कपूर और मिसेज खुराना** ने इस शिविर के आयोजन में आगे बढ़ कर जो कार्य किया, सहयोग दिया है और प्रयत्न किया है, वह वास्तव में ही सराहनीय है।

जैसा कि मैंने बताया, कि भोपाल में प्रत्येक महीने एक साधना शिविर

श्री रमेश पाटिल

का आयोजन हो रहा है, 17 जनवरी 96 को श्री अरविन्द सिंह, श्री साधना सिंह और श्री ओम प्रकाश (इन्दौर) के प्रयत्नों से यह शिविर भी अपने आपमें भव्य रूप से सम्पन्न हुआ और इसमें पूज्य गुरुदेव श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली जी ने भाग लिया। इस शिविर में भी साधकों का जनसमूह उमड़ रहा था और उन्होंने अपने आपमें पूर्ण संतुष्टि अनुभव की और एहसास किया, कि वास्तव में जीवन का कायाकल्प, जीवन की पूर्णता, श्रेष्ठता और दिव्यता केवल इस प्रकार के साधना शिविरों के माध्यम से ही संभव हो सकती है।

✿ 22 जनवरी 96 को बिलीमोरा में एक आश्चर्यजनक साधना शिविर सम्पन्न हुआ और गुजरात में यह अपने आपमें एक अद्वितीय शिविर था, जिसमें श्री रमेश भाई पाटिल, डॉ. लल्लू भाई, श्री जयेश भाई और श्री रमेश भाई प्रजापति आदि लोगों ने पूर्ण तन-मन-धन से सहयोग दिया। श्री प्रवीण जोशी तो गुजरात में जहां पर भी साधना शिविर आयोजित होते है, वहां पहुंच ही जाते हैं और मंच को पूरी तरह से संभालते हैं। श्री रमेश भाई पाटिल और श्री रमेश भाई प्रजापति ने यह निश्चय कर लिया है, कि हम हर महीने गुजरात में कहीं न कहीं शिविर आयोजित करते ही। वास्तव में श्री रमेश भाई पाटिल ने अद्वितीय कार्य किया है और इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, उतनी ही कम है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में केन्द्रीय कार्यालय के जो सदस्य परिश्रम कर रहे हैं, वह भी अनुपमेय है, श्री एस० के० मिश्रा, श्री राम चैतन्य शास्त्री, श्री शैलेश कुमार, श्री कुशल कुमार, श्री वासुदेव पाण्डेय, श्री जयप्रकाश और श्री मुकेश (ग्वालियर) — ये लोग जिस प्रकार से मंच को संभलते हैं और कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देते हैं, वह सराहनीय है। इस नव वर्ष के अवसर पर स्टॉफ के इन सदस्यों को भी पूर्ण रूप से हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया जाता है।

इसके साथ ही साथ श्री राकेश यादव, श्री अपार अपार सिंह, श्री आनन्द, श्री सुभाष शर्मा, श्री अजय मिश्रा, श्री हेमन्त देसाई आदि की तत्परता से पत्रिका का जो रूप निखर रहा है— इसका पूरा का पूरा श्रेय इन लोगों को है। साथ ही बहन विजय लक्ष्मी और बहन कनक पाण्डेय पत्रिका को अनुकूल बनाने में सहयोग दे रही हैं।

(बांये से) कनक पांडे, विजय लक्ष्मी, हेमन्त देसाई, राकेश, अपार अपार सिंह, आनन्द, अजय
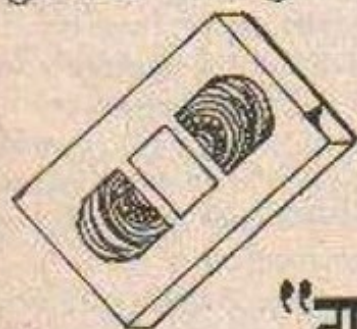
वास्तव में यह पूरी टीम चौबीसों घंटे इस कार्य में लगी ही रहती है, जिससे कि आपके हाथों में अच्छी से अच्छी पत्रिका और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ साधनात्मक लेख पहुंच सकें तथा साथ ही संस्था से सम्बन्धित सूचना और गतिविधियां भी प्राप्त हो सकें।

इसके साथ ही पूरे भारतवर्ष से जो लेख प्राप्त हो रहे हैं और सम्माननीय लेखक जिस प्रकार से सहयोग दे रहे हैं, उन सभी को मैं इस अवसर पर हार्दिक धन्यवाद देता हूं, कि वे बराबर अपने लेखों के माध्यम से पत्रिका को अनुकूल बनाने में पूरा सहयोग दे रहे हैं। ❋

रजिस्ट्रेशन नं0 55791/93

A.H.W.

पोस्टल-डी. एल. नं0 19052/93

दीक्षया भाग्यभावनम्

दीक्षा से ही भाग्योदय होता है।

दुर्लभ दीक्षाएं

धन्वन्तरी दीक्षा
भाग्योदय दीक्षा
ऋणमुक्ति दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा
क़ाल ज्ञान दीक्षा
आत्म ज्ञान दीक्षा
ध्यान सिद्धि दीक्षा
शिवत्व प्राप्ति दीक्षा
वैवाहिक योग दीक्षा
अभीष्ट सिद्धि दीक्षा
प्रियतमा अप्सरा दीक्षा
महालक्ष्मी प्रत्यक्ष दीक्षा
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
मुकदमों में सफलता दीक्षा
मनोवांछित कामना सिद्धि दीक्षा

भैरव दीक्षा
ज्ञान दीक्षा
अनंग दीक्षा
गोम्पा दीक्षा
पंचांगुली दीक्षा
यक्षिणी दीक्षा
राजयोग दीक्षा
सम्मोहन दीक्षा
रोगमुक्ति दीक्षा
शत्रुमर्दन दीक्षा
कायाकल्प दीक्षा
दस महाविद्या दीक्षा
तंत्र साफल्य दीक्षा
जीवन मार्ग दीक्षा

माह अप्रैल में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट स्थानों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर दिये हुए स्थान पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

दिनांक		स्थान
02-03-04-05	अप्रैल 1996	गुरुधाम (जोधपुर)
11-12-13-14	अप्रैल 1996	सिद्धाश्रम (दिल्ली)
23-24-25-26	अप्रैल 1996	सिद्धाश्रम (दिल्ली)

वर्ष - 16

अंक - 3

: सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209

306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34 फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700